पशु-चिकित्सा

लेखक

डा० राघो प्रसाद वर्मा

प्रकाशक

किसान-हितकारी-पुस्तकमाला

छपरा

सोल-एजंट

साहित्य-सेवक-संघ

छपरा

मुद्रक

जगदम्बा प्रसाद

अजंता आर्ट प्रेस

प्रकाशक

किसान-हितकारी-पुस्तकमाला

छपरा

दो शब्द

यह पुस्तक खास कर उन किसानों के लिए प्रकाशित की जा रही है, जिनकी संख्या लगभग ७० प्रतिशत के भारत की आवादी में है। हमारा देश किसानों का देश है, इस कारण पशुओं के ऊपर ही हमारा जीवन अधिकांशतः अवलम्बित है। इतना होते हुए भी पशुओं की उचित चिकित्सा की तरफ से हम उदासीन से हैं। कुछ अंग्रेजी चिकित्सालय सरकार की ओर से पशुओं के लिए हैं; किन्तु हमारे देहाती किसान भाइयों का वहाँ तक पहुँचना बड़ा ही कठिन है। पशु चिकित्सालय की आवश्यकता तो हमारे गांव-गांव मे है। ऐसी दशा में यदि किसी शहर मे एकाध चिकित्सालय है, तो उनसे हमारा उपकार कहां तक हो सकता है ? इस भारी असुविधा को दूर करने के लिये हम इस पुस्तक को प्रकाशित कर रहे हैं; जिससे हमारे किसान भाई शहर से दूर बहुत दूर जङ्गल मे रह कर भी अपने जीवन के एक मात्र आधार पशुओं की चिकित्सा मजे में कर सकें।

इस पुस्तक मे पशु-रोगों का निदान तथा चिकित्सा कुछ ऐसी भाषा में सरल ढङ्ग से लिखी गई है कि साधारण जनता भी आसानी से समझ जाय। औषधियाँ ऐसी बतलाई गयी हैं, जो सभी जगह सरलता से मिल सकें और जो देहाती दवाएँ हैं। हमारे ७० प्रतिशत के लगभग किसान भाइयों का या यों कहिये कि हमारे देश के जनता-जनार्दन की अगर यह पुस्तक कुछ भी सेवा कर सकी तब तो हम अपना प्रयत्न सफल समझेंगे।

साथ ही हम अपने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन साहबान से भी यह निवेदन करेंगे कि वे इस पुस्तक की कुछ प्रतियाँ देहातों मे किसानो के हाथ तक पहुँचा कर उनकी सहायता करें। हमे भी प्रोत्साहन प्राप्त होने से आगे और भी किसानोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने का अवसर मिलेगा।

हां, एक बात और श्रीयुत डा० कमरुल हुदा जी० बी० एस०-सी०, वैटेरनरी सर्जन, प्रयाग को धन्यवाद दिये बिना भी हम नही रह सकते, जिन्होने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक के सम्पादन करने का कष्ट उठाया है।

प्रकाशक

प्रस्तावना

पशु-पालन भारतवर्ष में प्राग्वैदिक काल से चला आ रहा है। संसार के अन्य देशो को पशुओ की उपयोगिता और आवश्यकता हमसे सैकड़ो क्या वरन् हजारो वर्ष पीछे प्रतीत हुई और तब उन लोगो ने उधर ध्यान दिया। फिर पशुओ की ओर से हम इतने उदासीन क्यो है? इसका कारण हमारा अधःपतन है। वर्तमान युग मे हमारा कृषक समाज कितना गिरा हुआ है इसका अन्दाज़ा हम उसी समय कर सकते है जब हम अपने देश के कृषको की तुलना संसार के अन्य स्मृद्धिशाली देशो के किसानो से करते है। भारतवर्ष कृषको का देश है। लगभग ७० प्रतिशत भारतवासी कृषक है और इन कृषको का सारा सुख और ऐश्वर्य केवल पशुओ पर ही निर्भर है। किन्तु दुख है जहाँ संसार के अन्य देश कृषी और पशु-पालन मे इतना आगे बढ़ते जा रहे है वहां हम नित्य-प्रति नीचे गिरे जा रहे है। इसका कारण उपयुक्त शिक्षा का अभाव है।

संसार के सभी उन्नतिशील देशों मे जहाँ आज-कल पशु-पालन सम्बन्धी शिक्षाएँ दी जाती है, पशुओ की उन्नति के साधनो की खोज की जाती है और उनकी वृद्धि के लिए नाना उपाय किये जा रहे है वहाँ हमारे देश मे इस तरफ अभी कुछ भी नहीं हुआ है। इस विषय मे जहां हम अन्य देशो के शिक्षक थे वहाँ हमे आज उनसे शिक्षा प्राप्त करनी है।

आज से कुछ वर्ष पूर्व तक घी-दूध की कमी हमें नहीं थी किन्तु आज हम उसके लिए तरस रहे हैं। क्यों? केवल इसीलिये कि हम पशुओं की ओर से उदासीन हैं। इन मूक पशुओं की हम क्या सेवा करते हैं? कुछ भी नहीं। जो कुछ रूखा सूखा मिल गया उसी को खाकर बेचारे पशु हमारी सेवायें कर रहे हैं। हम उनसे दूध-घी लेते हैं, उनसे खेती का काम कराते हैं; यही क्यों उनसे बोझा ढोने का काम लेते हैं और उन पर सवारी भी करते हैं। जिससे हम इतना लाभ उठाते हैं उसकी हम सेवा क्या करते हैं? न तो उनके रहने का कोई उचित प्रबन्ध करते हैं और न उनके सुख-दुख की।

यह तो हम बिलकुल भूल ही गये हैं कि पशु भी हमारी तरह एक जीवधारी प्राणी हैं और उनको भी तरह-तरह की बीमारियाँ हो सकती हैं। फल यह होता है कि बिचारे यदि बीमार पड़ते हैं तो चार डंडे ऊपर से खाते हैं और असह्य वेदना सह-सह कर इस लोक से चल बसते हैं।

इधर हमारी सरकार ने अपना ध्यान थोड़ा बहुत पशुओं के ऊपर होने वाले अत्याचार की ओर दिया है और इस विषय सम्बन्धी कुछ कानून भी बनाये हैं किन्तु अभी वास्तविक रूप से इन विचारों का कोई भला नहीं हुआ है। कुछ चिकित्सालय भी खोले गये हैं जिनसे नगरों में थोड़ा बहुत फायदा हो सकता है। उस चिकित्सालय से गांवों में रहनेवाले पशुओं की कोई भी भलाई नहीं हो सकती। किसानों के लिए बीमार पशुओं का उन अस्प-तालों तक ले जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। आव-

श्यकता ही इस बात की है कि गांवो मे कम से कम १०, १० मील के भीतर पशु-चिकित्सालय स्थापित किये जावें और पशु-पालन की शिक्षा दी जावे। पशु पालना हमारे लिये अनिवार्य है किन्तु पशु पालने की रीति से हम बिलकुल अनभिज्ञ है। जब तक इस प्रकार की व्यवस्था न की जायगी पशुओ का कुछ भी उपकार नही हो सकता।

इसी अभाव को किसी अंश तक दूर करने के लिए यह पुस्तक लिखी गयी है। इसमे पशुओ के रोग, उनके निदान तथा चिकित्सा सम्बन्धी बातें बतलायी गई है। चिकित्सायें ऐसी दी गई है जो कि साधारण से साधारण लोगो की समझ मे आ जावें और औषधियाँ भी वही हैं जिनका कि प्राप्त होना गांवो में सुलभ है।

समूची पुस्तक को पाँच प्रकरणों मे बांटा है:—गाय, बैल और भैस चिकित्सा, बकरा-बकरी चिकित्सा, अश्व-चिकित्सा, गज-चिकित्सा और कुत्ता-चिकित्सा—इस प्रकार सभी आवश्यक पशुओं की बीमारी और चिकित्सायें इसमे मिलेगी। भाषा इतनी सरल है कि सबकी समझ मे आ जावे। जहाँ तक सम्भव हो सका है उपरोक्त पशुओ की किसी भी आवश्यक बीमारी की चिकित्सा छूटने नही पाई है। किसानो के लिये यह पुस्तक अनिवार्य है।

सैयद कमरुल हुदा

५-७-३८

पशु-चिकित्सा

ज्ञातव्य-विषय

पशुओं की चिकित्सा की अपेक्षा हम लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित होना चाहिये कि वे बीमार ही न पड़ने पावें। यदि निम्नांकित बातों पर पूर्णतः ध्यान रखा जावे तो बहुत कम ऐसा अवसर प्राप्त होगा कि पशु बीमार पड़ें और उनकी चिकित्सा आवश्यक हो जाय।

यदि हम लोग पशुओं को साफ, सुथरे, सूखे और शुद्ध हवादार स्थानों मे रखें, विशुद्ध जलवायु तथा खाद्य पदार्थ का व्यवहार करावें तो रोग कभी छू नहीं सकता। सदा धूप, शीत और वृष्टि से बचा रखना भी नीरोग रहने के लिये अति आवश्यक है। सड़ा, बदबूदार पानी अथवा पदार्थ यदि न सेवन कराये जावे तो पशुओ पर रोग का आक्रमण नहीं हो सकता।

मनुष्य को जो रोग होते है पशुओं को भी प्रायः वही रोग हुआ करते है। जब पशु मनुष्य-रोग से पीड़ित देख पड़ें तो उन्हे मनुष्यो की दवाइयों से ही काम लेनी चाहिये। उसी से लाभ होगा क्योंकि कई बातों मे ये दोनों मिलते जुलते हैं। जिससे लाभ की विशेष आशा होती है तथा फल भी अनुकूल ही पाया जाता है।

स्वस्थ पशुओ की नाड़ी तथा शीतोष्णता की दशा चतुर चिकित्सको ने जो बताई है उसे यहां लिख देता हूं। इस पर सभी पशु पालको को ध्यान देना चाहिये।

नाड़ी को चाल प्रति मिनट ४५ । ५० होती है और इतने ही समय मे १५ । २५ बार सांस भी चला करती है, शरीर मे गर्मी लगभग १०१'४ डिग्री होती है।

सभी लोगो को वेटीनरी थर्मामीटर रखना चाहिये जिससे ज्वर का होना निश्चय किया जा सके।

रोग-निर्णय

सब से पहले हम आप लोगो का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कराना चाहते है कि पशु-चिकित्सा के लिये रोग-निर्णय कैसे हो सकता है । इस विषय को हम यहाँ विस्तार पूर्वक लिखना अनिवार्य्य नही समझते तोभी कुछ लिख देना पशु-रक्षा के लिये आवश्यक है। यो तो हमने जहां तक सम्भव हो सका है सरल और समझने योग्य शैली से प्रत्येक बीमारियो के पृथक २ चिह्न लिखही चुके है, जिससे पशु-पालक सहज ही में प्रत्येक रोगो की पहचान आसानी से कर सकते है । फिर भी कुछ ऐसे चिह्नो का यहाँ उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ। वे यो है—

(१) दूध न देना या कम देना ।

(२) पागुर अथवा जुगाली न करना ।

(३) पतला वा गाढ़ा गोबर करना अथवा गोबर नहीं करना ।

(४) बार बार उठना, बैठना तथा हूँकार भरना ।

(५) उदासीन दिखलाई पड़ना ।

(६) दूसरे पशुओं से अलग रहने की इच्छा प्रकट करना ।

(७) चारे-दाने का त्याग करना ।

(८) आंख से पानी तथा नाकों से पानी आना ।

(९) रोओं को खड़ा करना इत्यादि ।

प्रधानतः उपरोक्त चिन्हों से रोगो का होना निश्चय समझना चाहिये । तत्पश्चात यह मालूम कर लेना चाहिये कि पशु रोगी है या रोगी होनेवाला है । जब यह मालूम हो जाय कि पशु को अमुक बीमारी है तो फौरन उसे दूसरे पशुओ से अलग कर देना चाहिए जिससे दूसरे पशुओं को वह रोग असर न कर सके । बाद, किसी चतुर चिकित्सक से अथवा इस पुस्तक द्वारा उचित चिकित्सा का प्रबन्ध करना चाहिए । ऐसा करने से आप पशुओं को आपत्ति से बचा सकेंगे ।

———

गाय, बैल, तथा भैंस

चिकित्सा

१, शीतला Rinderpest

इस व्याधि की उत्पत्ति और फैलने का कारण भली भांति अभी तक स्थिर नहीं हो सका है, रोम-कूप, मुख, नासिका, नेत्र, स्तन-छिद्र, नेत्र-जल कफ और दूध आदि के साथ इस रोग के कीटाणु शरीर मे प्रवेश करते है, जिससे पाकस्थली मे और आँतो मे इसका प्रकोप अधिक होता है।

मनुष्यो की तरह पशुओ को भी चेचक की बीमारी हो जाया करती है। परन्तु मनुष्यो की तरह पशुओ के लिये यह उतनी भयानक नहीं होती।

लक्षण—प्रथम जब यह रोग किसी पशु को होनेवाला होता है, तो छोटी २ फुन्सियाँ थन मे अथवा हवाने मे निकल आती है। कभी २ तो शरीर के अन्य अंगो मे भी छोटी-छोटी गिल्टियां निकल आती है, जो पक भी जाती हैं और शीघ्र ही सूखकर अच्छी हो जाती है। पशु को ज्वर हो जाता है तथा मुँह और नाक से पानी गिरने लगता है। शरीर की गर्मी या ज्वर ३६ घंटों से ४८ घंटो मे बढ़ जाता है। पहले शरीर की गर्मी बढ़ती है अर्थात १०५ से १०७ डिग्री तक ज्वर हो जाता

है। नाड़ी चंचल तथा दुर्बल हो जाती है। नाड़ी ६० से १२० बार प्रति मिनट चलती है। शरीर में पहले कम्पन तथा मुख गर्म हो जाता है। पशु के खाँसने पर खस-खस-सी आवाज आती है। कान फूल जाते है, मेदा बंध जाता है, गोबर कफ युक्त होने लगता है,प्यास बढ़ जाती है,पशु बार बार दाँत पीसते है, पीठ पर हाथ नहीं रखने देते। दर्द से व्याकुल जान पड़ने लगते हैं। शरीर के सारे रोम खड़े हो जाते हैं।

सारे शरीर का ताप कभी कम और कभी अधिक अथवा कभी रहता है और कभी नहीं। साँस खूब जोरों मे चलने लगती है। गालों की झिल्ली लाल हो जाती है। जीभ काँट-सा जान पड़ने लगती है। मलत्याग के समय कांखना पड़ता है। सामने का दाँत हिलने लगता है और मुख, नाक और जीभ इत्यादि छोटी छोटी फुन्सियों से भर जाते है। कभी २ नेत्रों के नीचे का स्थान फूल जाता है। पशु दिन प्रति दिन अत्यन्त दुर्बल होते जाते है। और हर समय लेटे रहते है। खड़े होने की शक्ति नहीं रहती। रक्तभमय पतला दस्त होने लगता है। पशु पीड़ा से छटपटाने लग जाते हैं तथा २।९ दिन के अन्दर मर जाते है। कभी कभी १६ दिन तक यह रोग आक्रमण किये रहता है। तत्पश्चात् पशु अज्ञान हो कर मरजाते है।

इस रोग का विशेष लक्षण यह है कि, आंख, नाक और मुख में छाले पड़ जाते हैं तथा पीव पैदा हो जाती है। याद रखना

चाहिए कि समस्त अवस्थाओ मे रोग के सारे उपरोक्त लक्षण प्रकट नही होते। शरीर मे फुन्सियो के निकल आने पर ही आरोग्य होने की सम्भावना अधिक होती है। पतले दस्त प्राय जरूर होते है।

चिकित्सा—रोग की प्रथम अवस्था मे जब कब्ज होने के लक्षण देख पड़ें तो जब तक पेट नरम न हो जाय दिन मे एक और दो बार तीन छटांक से ६ छटक तक नमक या 'एपसिम साल्ट' लवण-मय रेचक देते रहना चाहिए। गरम जल और तेल की, दिन मे दो तीन बार पिचकारी भी दी जा सकती है। कोई सख्त जुलाब न देना चाहिए। २४ घंटा तक बराबर रक्त तथा कफ निकलता रहे तो निम्नलिखित औषधियो मे से किसी एक को खिलाना चाहिए—

(१) कपूर ।।।) आना भर।

(२) सोरा ।।।) आना भर।

(३) धतूर के बीज का चूर्ण ।) आना भर।

(४) शराब आध पाव।

इन सब औषधियो को भात के मांड के साथ रोगी पशु को पिला देना चाहिये।

यदि २४ घंटे से अधिक समय तक दस्त जारी रहे तो पौन तोला से २ तोला तक माजूफल पीसकर उक्त समस्त औषधियो के साथ खिलाना चाहिए। कफ आदि का निकलना बन्द होने के १२ घंटे के बाद निम्नलिखित औषधियां खिलाना चाहिए।

(१) चाखड़ी का चूर्ण पौने चार तोला ।

(२) पलास के बीज बारह आने भर ।

(३) अफीम छः आने भर ।

(४) चिरायता का चूर्ण सात तोला ।

इन सब औषधियों को एक छटांक शराब में १ सेर भात का माँड़ मिलाकर पशु को देना चाहिए। यह धारक तथा अम्ल-नाशक होता है ।

चेचक दिखाई देने के पहले सेमल का बीज गुड़ के साथ तीन दिन तक दिया जाता है। परन्तु चेचक की मौजूदगी मे यह औषधि न देनी चाहिए ।

पहले दिन—२५ बीज प्रथम बार, १८ बीज द्वितीय बार, और १० बीज तृतीय बार ३-४ घन्टे के अन्दर पर देना चाहिये ।

दूसरे दिन—प्रथम बार १५ बीज, द्वितीय बार १० बीज १२ घन्टे के अन्तर पर देना चाहिये ।

तीसरे दिन—एक बार १० बीज चेचक पकने के पहले खिलाना चाहिए ।

जब पशु को जीभ फूली जान पड़े तो उसके मुख को कार्बोलिक एसिड और गर्म जल द्वारा साफ करना चाहिए। नीम के औटे हुए पत्ते द्वारा भी मुख नाक साफ करते रहना फायदा पहुँचाता है।

(१) चिरचिरी की जड़ ४ तोला ।

(२) जचवा लता की जड़ ४ तोला ।

(३) सेमल के कांटे ४ तोला ।

इन सबको एकत्र कर खल मे चूर्ण कर दो और पूर्णवय वाली गाय को दिन मे २० ग्रेन के हिसाब से तीन वार सेवन कराना चाहिये । लगातार तीन दिन सेवन कराने से रोग आरोग्य होना निश्चय है । यह दवा बसन्त रोग मे भी दिया जाता है ।

यह छूत की बीमारी है । जब एक जानवर को हो जाती है तो सारे जानवरो को हो जाती है । इसलिये करीब के अस्पताल मे जाकर जानवरो को सूइयाँ लगवा देना चाहिये ।

निम्नलिखित औषधियाँ आजमायी तथा परीक्षित है ।

(१) ज्वर होते ही पशु को सुरक्षित स्थान मे रखना चाहिये । खाना-पीना छुड़ाकर जयन्ती के पत्तो का चूर्ण सारे अङ्ग मे मलना चाहिये । पात-समेत जयन्ती के डाल से सारा शरीर झाड़ना लाभदायक है ।

(२) रूद्राक्ष का चूर्ण और मिर्च का चूर्ण बासी जल के साथ पिलाने से शीघ्र आराम पहुँचता है ।

(३) परवल के पत्ते और नीम के पत्ते एक एक छटांक ले १॥ डेढ सेर पानी मे पकावे । जब आध सेर पानी रह जाय तो उसमे इन्द्रजौ और मुलैठी आधी आधी छटांक पीसकर डाल दे । इस काढ़े को पिलाने से वमन होता है तत्पश्चात चेचक का प्रकोप शान्त हो जाता है ।

(४) हल्दी एक छटाँक और करैले के पत्तों का रस आधा पाव एकत्र कर पीड़ित पशु को बार बार पिलाने से रोग शीघ्र आरोग्य हो जाता है।

(५) शियाल काटे की जड़, हल्दी, इमली के पत्ते और मिर्च इन सबको पीस ठण्डे जल के साथ पान कराने से गाय, भैंस इत्यादि पागुर करनेवाली जाति के चेचक की बीमारी शान्त हो जाती है।

६) परवल के पत्ते, गिलोय, नागर मोथा, अड़ूसे की छाल, चिरायता, नीम के छाल, पित्त पापड़ा और कुटकी इनमें से प्रत्येक एक एक तोला लेकर दो सेर पानी में पकावे। जब आध सेर पानी रह जाय तो ठण्डा कर चेचकवाले पशु को पिलाने से रोग दूर होता पाया गया है।

(७) छतिवन की छाल, अडूसे की छाल, गिलोय की छाल, परवल की बेल खैर की छाल, नील की छाल, बेंत की छाल और छिलका समेत हरिद्रा। इन सबको एक एक तोला लेकर दो सेर पानी में पकाकर जब आधा सेर पानी रह जाय तो रोगी पशु को पिला दो। इस काढ़े से चेचकवाले पशु शीघ्र आराम पाते हैं।

(८) अमला एक छटाँक, हरड़ एक छटाँक, और बहेड़ा, एक छटांक, सबको दो सेर पानी मे पकावे। जब आध सेर पानी रहजाय उतार कर ठन्डा कर लो और पिलाओ। इससे चेचक रोग जाता रहता है।

(९) नीम की छाल, अड़ूसे की छाल, गिलोय और कटे-

रीके कांटे का काढ़ा पिलाने से और इसी काढ़े से पशु को नहलाने से सब प्रकार के चेचक मे लाभ पहुँचता है।

(१०) बिना फूली कटेरी की जड़ और ८४ गोल मिर्च इन दोनों को पीस रोगी को देने से उपकार होता है। यदि इस दवा को चेचक होने के पूर्व दिया जाय तो बीमारी की सम्भावना नही रहती।

चेचक की अवस्था मे बुखार बढ़ जाता है। उस हालत मे निम्नलिखित औषधियों का दिन मे तीन बार सेवन कराना चाहिये।

(१) सोरा सवा तोला।

(२) रसौलया काला सुर्मा आधा तोला।

(३) काला नमक एक छटांक।

(४) गन्धक सवा तोला।

(५) आग मे पकाया जल दो सेर।

(६) देशी शराब आधा पाव।

इन सबको मिलाकर गाय-भैंस को देने से ज्वर की बढ़ती घट जाती है। अगर चेचक की बीमारी फैली हो तो शीघ्र नीचे लिखे औषधि पशु को देने से रोग नही होता।

(१) कच्ची हल्दी ४ तोला।

(२) गुड़ ४ तोला।

नित्य तीन बार ५-७ दिन तक खिलाते रहना चाहिये।

(ख) गधी का दूध आध पाव से १॥ पाव तक १५ दिन तक

पिलाते रहने से चेचक रोग नहीं होता।

(ग) प्रति दिन आधा पाव करैले के पत्ते का रस ७ दिन तक खिलाने से रोग होने नहीं पाता।

पथ्य—चावल और उड़द को उत्तम प्रकार से पकाकर इस का गाढ़ा मांड़ देना चाहिये। थोड़ी सी कच्ची ताजी घास भी दी जा सकती है। माँड़ के साथ नमक अवश्य देना चाहिये। कोई सख्त भारी द्रव्य खाने को देने से बड़ी हानि होती है। अ-जीर्ण और पेट मे दर्द हो जाने पर मृत्यु की सम्भावना की जाती है।

सावधानी—रोगी पशु को साफ सुथरे वायु-पूर्ण स्थान में रखना और मुख-जीभ को बार बार औषधियों से धोते रहना श्रेयस्कर है। किसी भी अच्छे पशु को रोगी पशु के साथ नहीं रखना चाहिये।

---

७. गला-फूला Septicamia

यह रोग गरगटी, गलघोट, जहरबाद, डकहा तथा पसीजा नाम से भी प्रचलित है। यह मुख और कण्ठ का रोग है। मुख और कण्ठ मे घाओं का होना ही इसका प्रधान काम है। कण्ठ और गला-नाली के ऊपरी भाग के सब स्थान फूल जाते हैं। इस रोग के आक्रमण के साथ साथ ज्वर भी अपनी शक्ति उठा

नहीं रखता। इस रोग के कारण रोगी को घूँट भरने तथा श्वांस मे कष्ट होता है।

लक्षण—इस रोग के होते ही ज्वर के साथ साथ कान, कण्ठ, मुख इत्यादि सभी फूल जाते है। मुख से लार निकलने लगता है। नाक का भीतरी हिस्सा और ऑखो के पलक लाल हो जाते हैं। ज्यो ज्यो रोग बढ़ता जाता है त्यो त्यो श्वॉस-कण्ठ की वृद्धि होती है। गले से घर्र घर्र शब्द होने लगता है। जीभ बाहर निकल पड़ती है तथा दुर्गन्ध आने लगती है। इसमे काला-पन लिये घाव देख पड़ने लगते है। घाव पीव भरे और उभरे हुए नजर आने लगते है। श्वॉस बढ़ते बढ़ते बन्द हो जाती है तथा पशु की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—रोग होते ही जुलाब देना अति आवश्यक समझना चाहिये जिस से कन्ठरोध तथा श्वॉस बन्द न हो। एक कान के पास से दूसरे कान के निकट तक गले के ऊपर और जबड़े के नीचे तपे हुए लोहे से दाग देना चाहिये *। दो दो इञ्च के फासले पर ३,४ बार दागना लाभदायक होता है।

अगर ऑव पड़ गया हो तो नीचे लिखी हुई दवा पिलानी चाहिये। कूटी हुई खरिया मिट्टी आध छटॉक, कत्था सवा भर, सोठ सवा भर, अफीम आने भर, और शराब एक छटांक, सबो

* दाग देने के बाद दो छटांक देशी शराब, सोंठ और काली मिर्च आधी आधी छटाक एक साथ मिलाकर अवश्य पिला देनी चाहिये।

को एक साथ मिलाकर तीसी या सत्तू की लपसी में फेंटकर सबेरे शाम पिलाना चाहिये जब तक घाव अच्छा न हो।

(१) (क)—६ भाग तीसी तेल।

(ख)—६ भाग मोम।

इन दोनो को आग पर गलाकर एक भाग तेलचट्टा डालकर एक प्रकार का मलहम तैयार कर लेना चाहिये और यही मलहम रोगी पशु को लगाना चाहिये।

(२) जमालगोटे का तेल पाव छटांक और तीसी का तेल आध पाव। इन दोनो को एक में मिलाकर, रोगी के जवड़े और गले पर मालिश करने से अति उपकार होता है।

(३) एक तोला फिटकरी, और थोड़ा सा गुड़ इन दोनों मे जल डालकर रोग पशु का मुख धोते रहने से उपकार होता है।

(४) दो सेर गरम जल मे साबुन के भाग उठाकर उस में एक छटांक सरसो का तल डालकर बांस की नली तथा पिचकारी से पशु की गुदा मे प्रवेश कराया जाय तो दस्त होकर रोगी नि-रोग हो जाता है।

(५) धतूरे के बीज का चूर्ण छ आने भर, कपूर बारह आना भर, शराब आधा पाव इन सबको भात के माड़ मे मिला कर रोगी को देना चाहिये। थोड़ा सा नमक देने से विशेष लाभ होता है।

(६) लोहे के वर्तन में गन्धक या अलकतरा रोगी के सामने

जलाकर धूनी देने से उपकार होता है। पशु नाक द्वारा धूनी का धूआं ग्रहण करे। ऐसे स्थान मे धूनी देनी चाहिए जहाॅ हवा का सञ्चार हो, इस पर विशेप ध्यान रखना चाहिये।

(७) कपूर एक भाग, तीसी का तेल चौथाई भाग, सरसो का तेल ४ भाग, सबको एक मात कर घाव पर लगाने से घाव लाल हो जाता है और तूतिया का चूर्ण ऊपर से देने से घाव के आराम होने मे शीघ्रता होती है।

(८) दो सेर घी, एक सेर एप्समसाल्ट, एक पाव काली मिच, एक पाव काला जीरा, इन सबको एक साथ पीसकर पिलाने से रोग जाता रहता है। जमाल गोटे का तेल ३० बूंद, मीठा तेल पांच छटांक, अलसी का तेल पांच छटांक पिलाने से तथा फिटकिरी से मुंह धोने से आराम होते पाया गया है।

(९) जमालगोटा डेढ़ तोला, कडुआ तेल दो छटांक पकाकर दागे हुए स्थान पर मालिश करने से छाले पड़ जाते है। छाले फूट कर घाव हो जाते है, घाव पर मलहम न० १ का प्रयोग से जल्द आराम होता है।

(१०) फिटकिरी ४॥ माशा, राव दो छटांक, पानी आधसेर एक मे मिलाकर रोगी का मुंह धोते रहना चाहिए।

पथ्य—चावल का माड़ नमक के साथ तथा हलका भोजन देना चाहिये। बूंट की सतुई भी दे सकते है।

सावधानी—गला-फूला रोग छूत की बीमारी है। दूसरे पशु को रोगी के साथ नहीं रखना चाहिये। यह रोग मनुष्य पर

भी आक्रमण कर देता है। सदा गर्म जल सेवन करना चाहिये।

---

६ पेट–फूलना Hoven and Teynopanites

अत्यन्त पके, सख्त और मोटे द्रव्य अधिक प्रमाण में खा लेने से पाकस्थली फूल उठती है। खराव, गन्दे तथा सड़े हुये पानी पीने से यह रोग होता देखा गया है। पाकस्थली को अधिकतर भर कर खाने से पाकस्थली कार्य्य शिथिल पड़ जाती है जिससे शुद्ध वायुका संचार नहीं होने पाता और यह रोग आक्रमण कर देता है। इसे अफरा रोग भी कहते है।

लक्षण—पशु का शरीर लाल वर्ण हो जाता है तथा वह पागुर करना वन्द कर देता है। वांये ओर का पेट फूल उठता है। फूले हुये स्थान पर अगुली से दवाने से गढ़ा हो जाता है और थोड़ी देर में फिर भर जाता है। दस्त वन्द हो जाता है, आंख लाल तथा पुतली को वाहर निकल आने की सम्भावना देख पड़ने लगती है। श्वांस खींचने के समय पशु नाक ऊपर कर लेता है। और हॉफने तथा गोंगों शब्द करने लगता है।

सोने के समय दांये भार देकर सोया करता है। श्वांस मे कष्ट होने पर कभी उठता और कभी लेटा करता है तथा दांत कड़-कड़ाने लगता है। नाड़ी दुर्वल होती जाती है। अकसर गोवर मूत्र भी नहीं करते। इस रोग का कोप लगभग ४-६ दिन तक रहता है।

चिकित्सा—रोगी का पेट जुलाब द्वारा साफ करदेना प्रथम आवश्यक है। इसलिये निम्नलिखित औषधियों का व्योहार करना चाहिये। इन औषधियों से विशेष लाभ होता पाया गया है।

(१) नमक डेढ़ पाव, मुसब्बर एक छटांक, तीसी का तेल आधा पाव सोंठ का चूर्ण एक छटांक तथा देशी शराब एक छटांक। इन सबको दो सेर पानी में मिलाकर गरम पिलाने से अति उपकार होता है।

(२) देशी शराब आध पाव, सोंठ का चूर्ण पाव छटांक, गोल मिर्च पाव छटांक, गुड़ डेढ़ छटांक, तथा तीसी का तेल एक छटांक। सबको मिलाकर देना चाहिये। यदि १५ घण्टे के अन्दर यह जुलाब असर न करे तो ऊपर लिखा जुलाब ही देना चाहिये।

(३) आध सेर एप्सम साल्ट, अथवा देशी नोन १ सेर सरसों अथवा अन्डी के तेल में मिलाकर पिलाने से जुलाब का काम देता है तथा गुणकारी भी है।

(४) आध पाव राई को पीसकर गर्म पानी में मिलाकर पिलाने से उपकार होता है।

(५) ताजा गोबर लेकर रोगी पशु के दोनों कोखों पर। मालिश करने से उपकार होता है।

(६) सरसों तथा तारपीन का तेल एक जगह मिलाकर रोगी के पेट पर मालिश करना चाहिये।

(७) गर्म पानी में कम्बल भिगोकर गर्मागर्म सेक करने से पशु आरोग्य होता है।

(८) सरसों तैल ४ छटांक, गन्धक पीसा हुआ दो छटांक और सोंठ पीसा हुआ १। तोला एक में मिलाकर मलना चाहिये ।

(९) अगर दस्त न होता हो तो दो सेर गरम पानी में ग्लिसरीन मिलाकर पिचकारी देने से दस्त साफ होता है ।

(१०) अलसी का तैल १ सेर, तारपीन का तैल आधी छटांक, अदरक आधी छटांक, कार्बोलिक एसिड १ चाय का चम्मच सब को मिलाकर पिला देना चाहिये ।

पथ्यः—हरी २ दूब तथा पतला माँड़ उचित पथ्य है। गर्म जल पिलाते रहना ठीक है। तीसी का पतला माँड़ भी दे सकते है। यह लाभकारी भी है।

सावधानीः—रोगी का मुँह शुद्ध जल तथा दवा-युक्त जल से धोते रहना श्रेयस्कर होता है । रोगी का पेट बारबार सेकते रहना चाहिए। रोग का लक्षण प्रकट होते ही पेट साफ करने का उपाय शीघ्र करने से कभी हानि नही होती ।

४ खाँसी Bronchites

खांसी सम्पूर्ण रोगों मे एक बहुत बुरा रोग है। श्वॉस नाली तथा उसकी शाखाये जो फेफड़े मे प्रवेश करती है उन के दाह होने से यह रोग उत्पन्न होता है। वृद्ध पशुओ को वृष्टि मे भीगने, शीत लगने से तथा सहसा गर्मी के बाद ठण्ढ लगजाने से यह रोग धर दबाता है।

लक्षण:—केवल खाँसना ही इस रोग का प्रधान लक्षण

है। गले मे घर्र घर्र की आवाज होती है। खॉसते २ रोगी पशु हॉफने लगते है। पागुर, खाना और पीना सब त्याग देते हैं।

चिकित्सा:—(१) तेल चट्टा एक भाग, तीसी तेल ६ भाग, मोम ६ भाग इन सब को एक मे पकाकर गले के नीचे मालिश करने से लाभ होता है।

(२) तारपीन का तेल एक छटाक, तीसी का तेल तीन छटॉक, इन दोनो तैलो को गरम पानी के साथ खॉसी वाले रोगी को पिलाने से रोग का नाश होता है।

(३) नौसादर, सोठ और अजवाइन एक एक तोला लेकर एक पाव गरम पानी के साथ पिलाना रोग को हरण करता है।

(४) केले के सूखे पत्ते की राख दो तोले, मक्खन ४ तोले और कच्चा दूध १० तोले खॉसीवाले पशु को देने से खांसी नहीं रहती।

(५) भात, तीसी तथा भूसी के माड़ के साथ कसीस का चूर्ण ६ आने भर और चिरायता का चूर्ण पाव छटांक मिला कर खिलाना अति उपकारी है।

(६) गन्धक के धुएँ से खासी जाती है।

(७) एक छटांक नोन की डली लेकर, कुछ आक के पत्तो मे लपेटकर रात को भूभुल मे दबा दो और प्रातः काल निकाल कर नोन को पानी मे घोंट कर रोगी को ४-५ दिन या इसे अधिक दिनतक पिलाने से लाभ होता है।

(८) एक छटांक सूखे अनार के छिलके को पीसकर एक छटांक मक्खन के साथ खिलाने से खांसी का नाश अवश्य होता है।

जब खाँसी सर्दी के साथ हो तो निम्नलिखित औषधियों से लाभ पहुँचता है:—

(१) गोल मिर्च, कबाब चीनी, सोंठ, जेठीमधु सबको एक एक तोला ले ४ तोला मिश्री के साथ दोनों वक्त देने से लाभ होता है।

(२) अँडूसा, अदरक, प्याज, और मिर्च एक एक छटांक लेकर पीसकर गरम जल के साथ खिलाने से रोग छूट जाता है। यह दवा दोनों वक्त देना आवश्यक है।

(३) अदरक का रस और शहद एक साथ सेवन कराने से अति गुण दिखाता है।

(४) अदरक का रस एक छटांक, गोल मिर्च का चूर्ण एक छटांक गुड़ के साथ खिलाने से खांसी तथा ज्वर का नाश होता है।

पथ्य—बांस के पत्ते ताज़ा देना ठीक है—पशु मात्र के लिये लघु पथ्य है। भूंजा चावल, भूंजा उड़द भी पथ्य मे देने से उपकार होता है।

सावधानी—सूखी घास देते रहना ही उचित होगा। सदा रोगी को गरम पानी देते रहना चाहिये। धूप से बचाना बहुत लाभ पहुँचाता है लेकिन सर्द स्थान मे रोगी पशु को नहीं रखना चाहिये।

———

५ उदरामय Diarrhoea

इस रोग की पहचान बहुत सहज है। इस रोग का पशु पतला

गोबर करता है। यह हेय खाद्यद्रव्य और जहरीले घास-पत्तो के खाने से पैदा होता है। प्रायः शीत काल अथवा गर्मी के बाद सहसा ठण्डी वायु के लगने से ही यह रोग होता देखा गया है।

लक्षण—पहले बहुत समय तक पेट भारी रहता है। बाद को बार बार पतला दस्त होना शुरू होता है। पेट मे विशेष पीड़ा होती है। क्रमशः पीड़ा बढ़ने के कारण गोबर के साथ खून भी निकलने लगता है।

चिकित्सा—(१) पेट भारी होने पर कचिया हल्दी, अजवाइन एक एक छटॉक, गुड़ आधा पाव, सेन्धा नमक पाव छटांक एक साथ खिलाने से रोग सहज ही में आराम होता है।

(२) सफेदा दो आना भर,चाकमि ी का चूर्ण आधी छटांक, अफीम बारह आने भर ये सब गाढ़े मॉड़ के साथ दिन मे दो बार देने से लाभ होता है ।

(३) चावल का चूरा एक छटांक, खैर का चूरा आधी छटांक, सोंठ का चूरा पाव छटांक, अफीम दो आने भर, और देशी शराब एक आने भर इन सबको अच्छी तरह मिलाकर पिलाने से रोग का नाश होता है।

(४) यदि रोगी दुर्बल और कृश हो जाय तो सोठ का चूरा पाव छटांक, चिरायता का चूरा पाव छटांक, जइत का चूर एक छटांक, नमक एक छटांक इन सब चीजो को पीसकर गर्म मॉड़ के साथ पिलानी चाहिये । अथवा नमक आधा भाग, कसीस का चूर्ण दो आना भर गुड़ के साथ खिलाने से उपकार होता है।

(५) कच्चे बेल को जलाकर गुड़ के साथ खिलाने से उदरामय रोग जाता रहता है।

(६) आधी छटांक पीसा हुआ काला नोन और एक तोला हीरा कसीस मिलाकर जौ के आटे मे रोगी को चार दिन तक देते रहने से बहुत गुण दिखाता है।

(७) खरिया मिट्टी आधी छटांक, कत्था पौन छटांक, सोंठ पौन छटांक, अफीम २ आना भर, शराब एक छटांक । इन सबो को अच्छी तरह मिलाकर सेर भर मॉड़ में दिन में दो-दो बार जब तक दस्त न रुक जाय देना चाहिये।

(८) सौंफ एक तोला, अजवाइन एक तोला, इलायची एक तोला, चिरायता ३ तोला इन को कूटकर आधे सेर जौ के आटे के साथ खिलाने से रोग का नाश होता है।

(९) एक चौअन्नी भर पीसा हुआ नीला थोथा, आधा सेर गर्म पानी मे घोलकर पिलाने से लाभ होता है।

(१०) दो छटांक सूखे हरे बेल के फल को आधी छटांक खरिया मिट्टी मे मिलाकर दो भाग मे बांट सुबह शाम आधे सेर गौ के मट्ठे के साथ देने से अति लाभ होता है।

(११) खरिया मिट्टी पीसी हुई ३॥ तोला, ढाक की गोंद पौन तोला, अफीम साढ़े चार माशा, चिरायता पीसा हुआ सवा तोला एक साथ मिलाकर खिलाने से अति गुण दिखाता है।

(१२) खरिया मिट्टी एक छटांक, कत्था पीसा अढ़ाई तोला,

सोंठ सवा तोला, अफीम साढ़े चार माशे, देशी शराब २ तोला पानी छ. छटांक देने से दस्त बन्द हो जाता है।

(१३) सोंठ सवा तोला, चिरायता सवा तोला, काली मिर्च सवा तोला, अजवाइन सवा तोला, नमक पाँच तोला दस्त होने के बाद देने से रोगी पुष्ट तथा आरोग्य होता है।

(१४) जब दस्त शुरू हो तो दस्त को फौरन बन्द करने की कोशिश न करना चाहिये वरन् सबसे पहिले सेर भर अलसी का तेल देदेना चाहिये। और अगर पेट मे दर्द हो या पेट भी फूला हो या पाखाने के साथ कुछ खून आता हो तो सेर भर अलसी के तेलके साथ २ छटांक तारपीन का तेल चावल के मॉड़ के साथ मिलाकर देना चाहिये।

(१५) अगर एक दिन तक दस्त न रुके तो आधा तोला भांग ५ माशा अफीम,सेर भर तेल के साथ मिलाकर देना चाहिये। अगर गोबर का रङ्ग मटीला हो तो उसमे १॥ सेर चिरायता का पानी भी मिला देना चाहिये।

पथ्य—पीने का पानी साफ और ताजा देना चाहिये। रोग साधारण होने पर हरी हरी दूब, भात का मॉड़ उचित पथ्य है। बाँस के पत्ते देते रहना भी गुणकारी है।

सावधानी—रोगी का वासस्थान बराबर, सूखा और साफ रखना चाहिये, फेनाएल का पानी और राख जमीन पर देना चाहिये।

---

६ रक्तामाशय Dysentry

यह एक बड़ा ही भयानक रोग है। यह रोग अंतो की झिल्ली के रोग से उत्पन्न होता है। इसके अनेक नाम हैं जैसे:—पेचिश, मरोड़ या लड्डू के दस्त। गुजरात मे इस रोग को मरी कहा जाता है।

लक्षण—रोग होते ही पेट मे दर्द पहले ही मालूम होने लगता है। ऐसे दस्त मे अत्यन्त दुर्गन्धि होती है। इस दस्त में अंव, रक्त, और पीव भी मिला रहता है। पेट मे दर्द, बारबार कॉखना, मुंह मे छाले, आंख और चर्म का पीला पड़ जाना प्रधान लक्षण है। जब यह रोग घर लेता है तो खून का दौरा रुक जाता है। आँखों से पानी का गिरना, पशु का चारा-दाना त्याग करना, जुगाली न करना, रोम का खड़ा हो जाना, कम्प और लार टपकने के लक्षण देख पड़ने लगते है। अजीर्ण के साथ २ ज्वर तथा बकरी की लेंड़ी के समान मल त्याग करना भी इस रोग का प्रधान चिन्ह माना गया है।

चिकित्सा—(१) एक पाव आंवला को रात मे मिट्टी के बर्तन मे भिगोकर प्रात. काल छानकर उसके पानी मे एक पाव दही एक छटांक इसबगोल और आधा पाव शक्कर डालकर दिन मे दो बार रोगी पशु को पिलावे। यदि आंवला का पानी न मिले तो धनियां के पानी से भी अति उपकार होता है।

(२) कत्था एक छटांक, सोठ आधी छटांक, अफीम दो आने भर, खड़िया मिट्टी एक छटांक, देशी शराब एक छटांक इन औष-

धियो को आधा सेर अलसी (तीसी) के मांड़ मे मिलाकर दिन मे दो बार पिलाना रोग दूर करता है।

(३) तीसी के एक पाव तेल मे अफीम १=) आना भर मिलाकर भात के मांड़ के साथ दिन मे दो बार खिलाने से आमाशय रोग शान्त होता है।

(४) धतूर के बीज का चूर्ण छ आना भर, कपूर बारह आना भर, देशी शराब आध पाव। शराब मे कपूर डुबाकर उस-मे धतूर का चूर्ण मिलाकर भात के मांड़ के साथ खिलावे तो रोग अवश्य दूर हो।

(५) सफेदा छः आना भर, चाक की मिट्टी का चूर्ण आधी छटांक, अफीम बारह आना भर सबको एक साथ मिलाकर भात के मॉड़ के साथ दिन मे दो बार खिलाने से रोग दूर होता है।

(६) भात का मॉड़ एक सेर, अफीम बारह आना भर, ये दोनो चीजे अच्छी तरह मिलाकर मलद्वार मे पिचकारी देने से भी बहुत उपकार होता है।

(७) ग्लिसरीन, बोरिक एसिड का चूर्ण गरम पानी मे मिला-कर मलद्वार मे पिचकारी देने से आंतो का दूषित मल बाहर कर देता है तथा घावो को सुखा देता है।

(८) गरम पानी मे कम्बल भिगोकर पेट पर सेक करने से आमाशय दर्द नाश होता है।

(९) आमड़ा, आम, जामुन और आंवले के कच्चे पत्ते छेद-कर उसका रस गुड़ या बकरी के दूध के साथ खिलाने से प्रबल रोग भी शान्त होता है। यह पूर्ण परीक्षित है।

(१०) चौराई के शाक की जड़ ८ तोला गुड़ के साथ पीस-कर पिलाने से खूनी आंव अच्छा होता है।

(११) कबाब चीनी एक तोला, सोरे का चूर्ण एक तोला, चन्दन का तेल आधा तोला ये सब ठण्ढे भात के माँड़ के साथ दिन मे दो बार देने से रोग आराम होते पाया गया है।

(१२) शतमूली का काढ़ा, तीसी का काढ़ा, गिलोय का काढ़ा अथवा मेहँदी का काढ़ा ये सब थोड़े २ परिमाण से सेवन कराया जाय तो निश्चय लाभ होता है।

पथ्य—जब तक पशु गोबर न करे तब तक भात के माँड़ मे नमक मिलाकर या तीसी पका कर, उड़द पका कर, बेल पका कर आधा हिस्सा माँड़ के साथ देते रहने से उपकार होते पाया गया है। जब तक पशु आरोग्य न हो जाय तब तक हलकी हरी दूब तथा बांस के पत्ते देना लाभकारी होता है।

सावधानी—पशु को नङ्गा रखना हानिकर है। उसे गरम कपड़े से ढांक रखना चाहिये। सर्वदा इस बात पर ध्यान रहे कि रोगी पशु को ठण्ढ न लगने पावे। रोगशाला फेनाइल अथवा गर्म जल से धोते रहना चाहिए। वास-स्थान साफ-सुथरा रखना हर हालत मे अच्छा है। नीरोग पशु को रोगी से अलग रखना ठीक है। शाले मे गन्धक की धूनी देता रहे। और चूना और राख छिड़कते रहना चाहिए। शाला की मिट्टी खोदकर दूसरी सूखी मिट्टी से भर देना लाभदायक होता है।

———

७—मुँह और खुरों का पक जाना

Epizootic, Aphtha or Mouth and Foot disease

पशु को ग़लीज़ और कीच भरी जगहो मे खड़े रहने देने से यह रोग प्रायः हुआ करता है। यह छूत की बीमारी है। इसे हम लोग खोरहा भी कहते है। कोई कोई तो इस रोग को साधारण ज्वर भी कहते है। इस बीमारी मे ज्वर के साथ मुँह और खुरो मे फुंसियाँ हो जाती है जिससे रोगी पशु न तो बोल सकते हैंऔर न चल।

लक्षण—रोगी के मुँह मे घाव हो जाता है। लार टपकने लगती है। चारा-दाना त्याग देता है, पागुर नही कर सकता और कमजोर हो जाता है। यह रोग तीन दिन रह सकता है। ३६ घण्टो मे यह रोग प्रकट हो जाता है। इस रोग मे कम्प के साथ ज्वर होता है। मुँह, सींग और चारो पाँव गर्म हो जाते है तथा मुंह पर लाली छा जाती है। मुँह और पावो में फुंसियां देख पड़ने लगती हैं। दूध देने वाले पशु के स्तन मे भी फुंसियाँ निकल आती है। ये फुंसिया सेम के बीज के बराबर होती हैं। कभी कभी तो नाक मे भी फुंसियाँ निकल पड़ती है। २४ घण्टे मे ये फूटकर लाल हो जाता है। ये जीभ, दातो की जड़, तालू और गालो मे पैदा होती है। जिस पाँव मे फुंसियाँ होती है, उसे रोगी उठाये रखता है। पाँव फूल जाता है तथा फोड़ा-सा हो जाता है।

चिकित्सा—(१) कपूर एक भाग, तारपीन का तेल

चौथाई भाग और तीसी का तेल चार भाग, इन सबको खूब मिलाकर घाव पर लगाना चाहिये। यदि घाव बढ़ रहा हो तो उसमे तूतिया का थोड़ा सा चूर्ण और मिला देना चाहिये। अगर सम्भव हो तो कपड़े की पट्टी बांध देना चाहिये जिसमे घाव पर मिट्टी इत्यादि न लगने पावे। घाव को कपूर मिले तेल से साफ करते रहना चाहिये। इस काम के लिये नीम के पत्ते का काढ़ा भी अति लाभ पहुँचाता है।

(२) कार्बोलिक एसिड ४ ड्राम, ग्लिसरीन एक औंस और पानी एक पाइण्ट एक रस कर घाव पर लगाने से लाभ करता है।

(३) मुँह धोने के लिये फिटकीरी १। तोला को पानी आधा सेर में मिलाकर बारबार मुँह धोने से लार का गिरना बन्द हो जाता है। नीम का पानी गरमागरम पीड़ित स्थान पर लगाने से रोग सहज ही में नाश होता है।

(४) नीम के पत्ते तिल्ली के तेल या नारियल के तेल मे भिगोकर घाव पर प्रयोग करने से गुण दिखाता है।

(५) गेंन्दे के फूलो की पङ्खड़ियां तिल या नारियल के तेल मे भिगोकर घाव पर लगाने से आराम होता है तथा गेंन्दे के फूलों की पङ्खड़ियों का रस निचोड़कर घाव पर लगाने से फायदा करते देखा गया है।

(६) भखरा सिन्दूर और मिर्च का चूर्ण इन दोनों को भैंस के मक्खन के साथ मिलाकर घाव पर लगाने से घाव अच्छा होता है।

(७) गरम पानी और साबुन से छालों को धोते रहने से शीघ्र उपकार होता है।

(८) पुराना गुड़ एक सेर, सौफ एक पाव एक सेर पानी मे औटकर पिलाना लाभ करता है ।

(९) आंवले को पानी मे भिगोकर उस पानी से मुँह धोवे और पीने को दे ।

(१०) बबूल की छाल को उबालकर पेट और मुँह धोना चाहिये ।

(११) फिटकिरी तथा सुहागे के पानी से मुँह-पैर धोते रहना ठीक होता है ।

(१२) इस बीमारी मे ताप तथा ज्वर की विशेषता हो तो कपूर ९ माशे, शोरा एक तोला, देशी शराब आधी छटांक एक मे मिलाकर रोगी को देने से रोग नाश होता है ।

(१३) जब जबान मे छाले पड़ जांय तो उसके लिए फिटकिरी डेढ़ तोला, सुहागा डेढ़ तोला,पानी दस छटांक रूई मे भिगोकर इसी लोबान से जबान और मुँह खूब साफ करना चाहिये ।

(१४) नीला थोथा चार माशा, फिटकिरी चार माशा, कोयला आठ माशा, खरिया मिट्टी बाईस माशा इन सबको खल मे एक रस कर बोतल मे रख छोड़े । इसी सफूफ को जख्मो पर बुरका देने से और फिटकिरी के पानी से धोते रहने से घाव जल्द आराम होता है । यदि घाव मे कीड़े पड़ जायँ तो कपूर का तेल मिट्टी का तेल अथवा तारपीन का तेल घाव पर लगाने से कीड़ो का नाश होता है ।

(१५) तूतिया एक भाग और धूना (अलकतरा) दस भाग दोनो को मिलाकर जख्म पर लगाकर रूई रखकर पट्टी बाँध दे ।

पथ्य—खाने के लिये चोकर, सूखी घास, हरी हरी दूब या मटर की कोमल घास इत्यादि नरम और ताजा देने से लाभ है। भोजन ऐसा देना चाहिये जो हलका हो और जल्द पच जाय। भात का मांड़ नमक के साथ अवश्य देना चाहिये। इससे विशेष लाभ होता है।

सावधानी—रोगी पशु को अलग एकान्त मे रखना चाहिये। दूसरे पशु के साथ रखना उसे भी बीमारी से ग्रस्त कराना है। रोगी पशु को स्वच्छ जलमे घुटने तक खड़ा कराने से भी लाभ होता है। क्योंकि खुरो को पानी में रखने से कीड़े पड़ने की सम्भावना नही रहती। इस बात पर ध्यान रखे कि पानी के अन्दर कीचड़ न हो। क्योंकि घाव पर कीचड़ का लगना हानि करता है। सदा मुंह और पैर को धोते रहना चाहिये।

---

८ शूल वेदना Colic Pain

अत्यन्त शीतल और ठण्डी हवा लगने से, सड़ी चीजे खाने से, भूसी आदि को बिना गर्म किये खिलाने एवं मुर्गी आदि का बीट खा जाने से इस रोगका प्रकोप होता है।

लक्षण—पशु अस्थिरता और व्याकुलता प्रकट करता है। पिछले पांव और सीगों से जमीन और दीवार की मिट्टी कुरेदता है। दांत कड़-कड़ करता है। चारो पैर को एकत्रकर पेट फुलाने की क्रिया करता है और पेट के बल सोना चाहता है। पाकस्थली के पांच अंग वायु के संचार से फूल जाता है। मुख और मलद्वार से वायु निकलते प्रतीत होता है।

चिकित्सा—सब से पहले जुलाब द्वारा पेट साफ करा देना चाहिये ।

(१) पटुआ के शाक के पत्ते चार तोला, बिटनोन एक तोला और मिश्री एक तोला, इन सब को पीसकर दिन मे दो बार सेवन कराना चाहिये ।

(२) हींग एक तोला, भांग दो तोला और जीरा एक छटांक इन सबको एकत्रित कर गर्म पानी के साथ दिन मे दो बार देने से उपकार होता है ।

(३) अफीम दो आना भर, हींग आधा तोला, मिर्चा आधा तोला, इन सब को न० २ के विधि से सेवन कराना चाहिये ।

(४) शूल-स्थान को गर्म पानी या कम्बल को गर्म पानी में निचोड़कर गर्मागर्म सेकना चाहिये । इससे शूल का नाश अवश्य होता है ।

(५) त्रिधारा एक छटांक, बिटनोन एक छटांक, संहिजन के बीज एक छटांक, हरड़ एक छटांक, बाय विडङ्ग एक छटांक, आंवले का चूर्ण एक छटांक, सलाई एक छटांक इन सबको तीन सेर पानी मे पकाकर डेढ़ पाव रह जाय तब उतार ले और उसे थोड़ी शराब के साथ पिलाने से शूल-वेदना नष्ट हो जाती है ।

(६) शराब एक पाव, सेंधा या बीटनोन आधी छटांक, सोंठ का चूर्ण आधी छटांक, गोल मिर्च आधी छटांक, कपूर पाव छटांक और अफीम बीस ग्रेन इन सबको मिला कर देने से रोग आरोग्य होता है ।

(७) हींग, कमलबेत, छोटी पीपल, सोंचर नोन, अजवाइन,

जवाखार, हरड़ और सेंधा नमक, इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण कर ले तत्पश्चात् ताड़ी या मांड़ के साथ खिलाया जाय तो शूल रोग शीघ्र जाता रहेगा ।

(८) काला नमक एक भाग, इमली दो भाग, काला जीरा चार भाग, गोल मिर्च दो भाग, इन सबको जमीरी नीबू के रस में मले और डेढ़ डेढ़ तोले की गोली बना कर पशुको खिलावे तो शूल रोग नाश हो ।

पथ्य —जब तक पशु पागुर नहीं करले तब तक कुछ नहीं देना चाहिये । चावल की मांड़, बांस की पत्ती और हरी ताजी घास ही सुपथ्य है । सदा, स्वच्छ ताजा जल देना चाहिये, जलको गरम कर देने से अति उपकार होता है ।

सावधानी—गरम जल को एक बोतल मे रख शूलस्थान पर बार २ सेक करने से लाभ होता है । शूल रोग मे सेक अति आवश्यक औपधि तथा क्रिया है । जब तक रोगी भूख से व्याकुल न हो जाय तब तक कुछ नहीं देना चाहिये । सदा, सर्वदा स्वच्छ जल और खाद्य द्रव्य पर ध्यान रखना रोगी के लिए हितकर होगा ।

---

९ मोच आना Sprain

पॉव, पॉव के गठ्ठे या अन्य किसी जोड़ मे यदि मोच आजाय तो फौरन बैन्डेज कर देना चाहिये । यह ऊंची खाली ज़मीन पर पैर पड़ने से या दौड़ते समय पैर भूठा पड़ जाने से हो जाता है ।

लक्षण—पशु के पैर फूल जाते है । वह लंगड़ाने लगता है तथा मन मलीन कर लेता है ।

चिकित्सा—(१) चूना और हल्दी गर्म कर लेप कर देना चाहिये और उसके ऊपर आक के पत्ते तथा रेंड़ी के पत्ते पर घी पोत कर गर्म कर मोच पर पट्टी बांधने से मोच आराम हो जाता है।

(२) गोबर को गरम कर मोच पर वांध देने से तथा गोवर पानी मे औट कर मोच पर भाप देने से उपकार होता है।

(३) खारी नमक को बारीक पीस कर कड़ुए तैल मे मिला कर मालिश करने से मोच जाता रहता है।

(४) कड़ुवा तैल, सेंधा नोन, तीती खैनी, सोंठ का चूर्ण, गोलमिर्च अफीम और अकवन के पत्ते इन सव को तैल मे पका कर मोच पर मालिश करने से लाभ होता है।

चोट मे भी ये सभी दवाएँ अतिगुण दिखाती है।

---

१० जोंक लगना Leeches

जब पशु तालाव या नदी मे नहवाया जाता है तो अक्सर जोक पशु के किसी न किसी अग को पकड़ कर चिपट जाती है और खून चूस कर फूल जाती है।

चिकित्सा -(१) जब जोक लग जाय तो फौरन उसके मुंह पर नमक दे देने से छोड़ देती है। चिमटे से भी छुड़ा सकते है।

(२) जब जोक छोड़ दे और शरीर से खून जारी रहे तो चूना और तम्बाकू के पत्तो किसी एक को अथवा दोनो को एक मे मिलाकर उस स्थान पर लगाने से खून बन्द हो जाता है।

(३) यदि किसी हालत से जोंक न छोड़े तो तम्बाकू की धूनी देने से अवश्य छोड़ देती है।

(४) यदि जोंक लगे स्थान में घाव हो जाय तो नीम के पत्ते गरम कर धोते रहना चाहिये। कपूर, मुर्दासंख, और गरी के तेल या भेड़ी के घी मे एक रस कर मलहम बना कर घाव पर लगाने से घाव आराम होता है।

पागुर बन्द होना Stopage of Rumination

यदि पशु पागुर बन्द कर दे तो समझना चाहिये कि कोई न कोई रोग उसे अवश्य होगा। पागुर बन्द होना रोग-निश्चय जताता है। यह कोई खास रोग नहीं है। जबतक किसी रोग का पता न चले तब तक, अदरक, सोठ और थोड़ा नमक, गन्धक के चूर्ण के साथ देते रहना चाहिये। अजवाइन, गोलमिर्च और नमक पीस कर देने से भी लाभ पहुँचता है।

---

१२ बांस (कोठ) निकलने का रोग

Prolaps uterus

बहुत से पशुओं को बाँस निकलने का रोग हो जाता है। पशु की बच्चेदानी बाहर निकल आती है। यह कई बार दिन या रात में निकलती और भीतर जाती है। इस से पशु निर्बल होता जाता है और बच्चा देने की सम्भावना नहीं रहती।

चिकित्सा तथा उपाय—जिस समय किसी पशु को बाँस निकले उसी समय फिटकिरी के पानी से धो उसे भीतर दबा दे और योनि को बाँध दे।

(१) फिटकिरी के पानी के छींटे बारबार देते रहना चाहिये। आध पाव फिटकिरी को पानी मे घोलकर पिला देना उपकार करता है।

(२) एक पाव शराब को रूई मे आधी छटांक कपूर मिला कर पिलाना चाहिये।

(३) बालू की पोटरी बनाकर एक तावे पर गरम कर बराबर सेक करने से उपकार होता है।

(४) रेंड़ी के तेल को दोनो पुट्ठो पर मालिश करने से लाभ होता है।

पथ्य—ताजी तथा हरी घास देनी चाहिये। कुट्टी को पानी के साथ भिगो कर खिलाने से हानि पहुँचती है। सूखा भूसा इत्यादि देने से लाभ होता है। गर्म पानी पिलाना अच्छा है।

सावधानी—बांस निकलने वाले पशु पर बराबर ख्याल रखना चाहिये। रोगी को अगले भाग की अपेक्षा पिछले भाग को ऊंचे स्थान पर रखना उपकारी होता है। रोगी अगर न बैठे तो विशेष लाभ होता है।

---

१२ कृमि रोग Intestinal worms

मनुष्यो कीभांति पशुओ भीमे तीन प्रकार के कृमि देख पड़ते

है। जैसे छोटे और सफेद कृमि, केचुए की भांति कृमि, लौकी के दाने की भाति कृमि। सफेद और छोटे २ कृमि' गुदा के समीपवर्ती स्थान पर होते हैं। अन्य दोनों प्रकार के कीड़े पीठ में रहते है। यह रोग सड़े २ द्रव्यों को खाने, सड़े और गन्दे पानी को पीने से पैदा होता है।

लक्षण—कृमि वाले रोगी सदा दाँत कटकटाया करते हैं। खाँसते और मिट्टी खाते पाये जाते हैं। चारा आदि खाने में अरुचि दिखाते हैं। पेट मे दर्द तथा कान नीचे झूल जाता है। आंव मिले हुए मल त्याग करते हैं और साथ ? कृमि भी निकलते देखे जाते हैं। कभी २ खाँसने से भी मुंह से कृमि बाहर निकल आते है।

चिकित्सा—(१) गुदा मे नमक का पानी पिचकारी द्वारा देने से कीड़े नष्ट होते हैं।

(२) पलाश के बीज पीस कर मट्ठे के साथ खिलाने से कृमि का नाश होता है।

(३) खजूर के पत्तो का काढ़ा बासी कर अगले दिन शहद के साथ खिलाने से उपकार होता है।

(४) तरोई के दस बीज मट्ठे के साथ पीसकर पिलाने से सारे कृमि पेट से बाहर निकल आते है।

(५) वायविडङ्ग, पलाश के बीज, नीम के बोज, तुलसी के पत्तो का भस्म, इन्दुर रूसी (मुसाकानी) लता के रस मे मलकर खिलाने से कृमि मर कर बाहर निकल जाते हैं।

पथ्य—ताजे तथा गर्म द्रव्यों को खिलाने मे अति लाभहोता

है। भात का माड़ नमक के साथ उपकारी पथ्य है। नीम के पत्ते को पानी मे खौला कर रोगी पशु को देने से कृमि का नाश होता है।

सावधानी—गन्दे पानी तथा सड़े द्रव्यो को भूल कर भी नही देना चाहिये। पशु और पशुगृह को साफ सुथरे रखने पर विशेष ध्यान रहनी चाहिये। दवाइयाँ खिलाने के बाद पशु को जुलाब दे देने से लाभ होता है क्योकि दस्त कराने से मरे कीड़े बाहर निकल आते है। पशु-गृह मे गन्धक की धूनी देने से हवा साफ होती है।

१४ शरीर में जूं तथा चिचड़ियों का पैदा होना

पशु के शरीर से जुएं को निकाल कर मार डालना चाहिये। ये जुएं मैले पानी मे स्नान कराने तथा रोए न कटाने से मैल द्वारा पैदा होती है। हमारे देश मे पशु के बच्चे को स्नान नहीं कराया जाता, जिससे यह रोग पैदा होता है। एक के शरीर से सारे पशु के शरीर मे फैल जाता है, यह चर्म को हानि पहुँचाता है।

चिकित्सा—(१) फिनाइल के पानी से नहवाने तथा ब्रुश से साफ करने पर सारी जुएं मर जाती है।

(२) सरसो का तेल एक पाव, गन्धक दो तोला, गर्जन का तेल एक तोला, तारपीन का तेल एक तोला, कपूर एक तोला इन सबको एकत्र कर पका ले और इस तेल को तूली (कपड़े के लपेटन) से लगाने से सारी जूएं अथवा चिचड़ियो की मृत्यु होती है।

(३) नील एक भाग, गन्धक दो भाग, वैसलिन अथवा

कड़ुआ तेल आठ भाग, मिलाकर पशुओं के शरीर पर मलने से सारी जुएं अथवा चिचड़ियां, किलनियां मर जाती हैं।

(४) नोन चार भाग, मिट्टी का तेल एक भाग, कड़वा तेल चार भाग, मिला कर लगाने से जुओं का नाश होता है।

सावधानी—पशु को सर्वदा स्नान कराते रहना चाहिये। जब बाल बढ़ जाय तो फौरन कैंची से कटा देना चाहिये। और बाल कटाने के बाद उपरोक्त दवाइयों का इस्तेमाल करने से लाभ फौरन होता है।

---

१५ चर्म्म रोग Mange

अर्थात् खारिश या खुजली

चर्म्म रोग तीन प्रकार का होता है—(१) रोयें गिरने लगते हैं। (२) चमड़े में कीड़े पड़ जाते है। (३) सारे शरीर मे दाना निकल पड़ता है तथा चकत्ते चकत्ते नजर आने लगते हैं। यह बीमारी सदा पशुओ को मैले रखने से ही हुआ करती है।

लक्षण—किसी २ चर्म रोग में खुजलाहट रहती है। सदा पशु खुजलाने से आराम प्रतीत करता है। यह रोग कन्धे से आरम्भ हो सारे शरीर मे फैल जाता है। कभी २ तो दाने के समान फुन्सियां नजर आने लगती है।

चिकित्सा—(१) एक छटांक नमक और एक छटांक गन्धक का प्रयोग प्रति दिन कराने से यह रोग नही होता।

(२) नारियल का तेल एक छटांक, तारपीन का तेल एक छटांक, कपूर आधी छटांक, गन्धक का चूर्ण आधी छटांक और

फिनाइल पाव छटांक । इन सबको एक रस मिलाकर शरीर मे लगाने से चर्म्म रोग नाश होता है।

(३) मिट्टी का तेल दूध मे मिलाकर लगाने से खाज जाता रहता है।

(४) फिनाइल को पानी मे देकर नहवाने से रोग दूर होता है।

(५) यदि शरीर पर पपड़ी पड़ जाय तो साबुन को शरीर पर मलकर गर्म पानी से स्नान करा देने से उपकार होता है।

(६) गन्धक आध पाव, आध सेर चूना और दस सेर पानी मे पका कर लगावे। इस लोशन को कई दिन तक लगाते रहने से रोग जाता रहता है।

(७) आंवला सार, गन्धक आठ मासे अथवा एक तोला, शोरा कलमी ८ माशे दाने के साथ खिलाना उपकारी है।

(८) गंधक २ छटांक, मिटटी का तेल २ छटांक, कडुआ तेल १० छटांक खूब मिलाकर दिन भर मे २ बार खारिश वाली जगह पर मालिश करना चाहिए।

---

१६ सींग का टूट जाना।

Broken Horns

पशु को आपस मे लड़ने तथा चोट लग जाने से सींग टूट जाया करती है। यह दो प्रकार से टूट जाती है। एक तो जड़ से गायब हो जाती है, दूसरा सींग बनी रहती है। परन्तु ऊपर

का खोल उतर आता है। दोनो हालत में पशु को अति कष्ट होता है।

चिकित्सा—(१) मछली का तैल टूटे हुए सींग पर लगाने से उपकार होता है।

(२) यदि सींग से खून जारी रहे तो हरी २ दूब का रस, मुसली शाक के पत्ते। चिरचिरे की जड़ का रस अथवा गेंदे के फूलों की पंखड़ियों का रस लगाने से खून बन्द हो जाता है।

(३) मनुष्य के शिर का बाल और तीसी का तैल या नीम का तैल या उड़द की पिठ्ठी मे कूट कर सींग के चारों ओर बांध देने से आराम होता पाया गया है।

(४) नीम का तैल टूटे हुए सींग पर देने से भी विशेष लाभ होता है।

(५) मनुष्य के बाल के साथ ईंट का खोरा कूट कर सरसों के तैल में मिलाकर पट्टी बाँधने से रोग आराम होता है।

सावधानी—कहीं टूटे सींग पर चोट या धक्का न लगने पावे। मक्खी न बैठे। तीसी के तैल और फिनाइल से सदा तर रखना गुणकारी होगा।

---

७१ ज्वर

Fever

मनुष्यों के भांति पशु जाति को भी ज्वर आता है। गाय, भैंस और बैल का नार्मल ताप १०१ डिग्री होता है।

बकरी और भेड़ का नार्मल ताप १०१ डिग्री से १०३ डिग्री तक होता है। इससे अधिक बुखार समझा जाता है।

लक्षण—पशु के मुख का भीतरी भाग गर्म, नाड़ी की गति शीघ्र तथा रोएं खड़े हो जाते है। पेशाब, आंख, नाक इत्यादि लाल वर्ण हो जाते है। खाने मे अरुचि तथा प्यास ज्यादा प्रतीत होती है। पागुर करना बन्द कर देते है। किसी २ पशु को ज्वर अढ़ाई घन्टा, अढ़ाई दिन तथा अढ़ाई पहर रहता है। जिसे अढ़ैया भी कहते हैं।

चिकित्सा—(१) बेल के पत्ते, अदरक और पित्त-पापड़ा मिलाकर औटाया हुआ पानी मधु वा गुड़के साथ खिलाने से ज्वर दूर हो जाता है।

(२) खिरैठी के पत्ते, सोठ, लाल चन्दन, और पित्त-पापड़े को मिलाकर औटा हुआ पानीके साथ गुड़ देने से बुखार का नाश नाश होता है।

(३) चिरायता का चूर्ण आधी छटांक और अढ़ाई पाव गुड़ आधा सेर पानी मे मिलाकर पिलाना चाहिए।

(४) नमक पाव छटांक, अदरक का रस पाव छटॉक गुड़ आधा पाव सब सवा सेर पानीं मे मिला, रोगी को पिलाना चाहिए।

(५) धतूरे की जड़ एक तोला, गोलमिर्च चार तोला, एक जगह पानी मे पीसकर, नलकी (बॉमकी) से पिलानी चाहिए।

(६) घी मे गोलमिर्च का चूर्ण मिलाकर नस्य देना हितकर होता है।

(७) सोंठ, चिरायता, गोलमिर्च, अजवाइन और नमक इन सबको ५-५ तोला लेकर सब का चूर्ण बना मांड के साथ खिलाने से किसी भी किस्म का बुखार जाता रहता है।

(८) नमक लाहोरी ढाई तोला, पठोरा सवा तोला, चिरायता का चूर्ण ढाई तोला, गुड़ दो छटांक सेर भर गर्म जल मे मिलाकर पिलाना चाहिये। दिन भर में दो मर्तबा जब तक बुखार न उतर जाय।

पथ्य—जब पूर्णतः ज्वर छूट जाय तो पथ्य देना चाहिये। बाँस के पत्ते तथा मसूर के छिलके की भूसी पानी के साथ पका कर खिलानी चाहिये। पीने का पानी गर्म कर पिलाना ठीक होता है।

सावधानी:—वायु और ठण्ढ से रोगी को बचा रखना चाहिये। रोगी पशु के खाने का पात्र साफ रखना चाहिये। रोगी को सदा वस्त्र से ढँके रखना ही ठीक है। रोगी को साफ सुथरा रखना हर हालत मे अच्छा होता है।

१९ कन्धे का सूजन Swelling of shoulder

गाड़ी या हल खींचने से अकसर बैलों के कन्धे फूल उठते है। घोंघे के पानी से फूले स्थान को मल मल कर धोने से सूज़न जाती रहती है। मेहँदी के पत्ते को पीस कर गर्म कर लगाने से सूजन अच्छी होती है। सब से अच्छा यह होता है कि फूले स्थान पर लोहा गर्म कर दाग दे। हल्दी और चूने को एक मे मिला गर्म कर फूले स्थान पर मालिश करने से रोग अच्छा होता है। अलसी का तैल गर्म कर सूजे हुए कन्धे पर मलना चाहिये।

२० सांड़ू नामक रोग arget of mamenatis

यह बीमारी गाय भैस के स्तनों की बीमारी है। यह रोग दूध देने वाले पशु को ही हुआ करता है। जब यह रोग होता है तो हवाना और थन सूज आता है। दर्द इतना जोरो मे होता है कि पशु स्तन छूने तक नही देता तथा स्तन का रंग लाल हो जाता है और पिछले पाव से लंगड़ा हो जाता है।

लक्षण—थनो से दूध पानी सा निकलने लगता है और फिर जम जाता है। थनो से छिछड़े निकलते है। बीमारी बढ़ जाने से थनो मे पीब पड़ जाती है। रोगी इस बीमारी से बेचैन रहता है। वह पिछले दोनो पैर फैलाये रखता है।

कारण—बच्चा पैदा होते समय कितने पशु का थन सूज जाता है उसका इलाज न करने से, गोबर करते समय पुट्ठे पर लाठी मारने से, हवाने मे चोट लगने से दूध निकालते समय थनो को जोर से दबाने अथवा खीचने से, थनो मे दूध छोड़ देने, से, कुसमय और बराबर दूध दुहने से, बच्चो को देर तक थनो को खीचते छोड़ देने से, और किसी विषैले कीड़े का थनो मे काट लेने से यह रोग पैदा होता है।

चिकित्सा—(१) अंडी का तैल गर्म कर धीरे धीरे थनो मे मालिश करना चाहिये।

(२) आधा सेर दही, पाव भर गुड़ सायंकाल मे देने से रोग आराम होता है।

(३) आधा सेर घी, एक छटाँक काली मिर्च आधा पाव ... का रस तीन दिन तक पिलाना चाहिये।

(४) पोस्ता एक ढोंढ़ा और नीम के पत्तों को सेर भर पानी में डालकर गरम करना चाहिये। उसके भाप से सेंक करने से लाभ होता है।

यदि पीब पड़ गयी हो तो उसको चिरवाकर निकाल देना चाहिये।

पथ्य—सदा ताजी हरी घास और हलकी द्रव्य-खाद देनी चाहिये।

सावधानी—थन में दूध न रहे। दूध दुह कर फेंक देना चाहिये। बच्चों को दूध नहीं पिलाना चाहिये। दूध निकालने के बाद थन को खूब साफ़ कर कपड़े से पोंछ लेना चाहिये। सूजे हुए थन को गर्म पानी मे सेन्धा नमक मिला कर धोने से गुण करता है।

२१ थन का माराजाना BlindTeats

बच्चा पैदा क़रने के बाद, बहुत से दूध देने वाले पशु के थन से दूध नहीं निकलता। इस रोग को थन का मारा कहते हैं। यह कठिन रोग है।

चिकित्सा—आधा पाव काली जीरा और आधा पाव काली मिर्च इन दोनों को पीसकर आधा सेर गर्म घी में मिलाकर दिन मे दो बार देने से ३, ४ दिन मे थन खुल जाता है।

सावधानी:—यदि थन मारा हुआ पशु गाभिन हो जाय तो उसे एक पाव सरसों का तैल मास के सतरहवे दिन को जब तक बच्चा न दे, देते रहना चाहिए। बच्चा पैदा होने की एक दो घंटे पहले हींग आधा छटॉक, बूंट या जौ के रोटी का साथ खिलाने से स्तन खुल जाता है।

———

२२ थनों का कट जाना SoreTeats

बहुत देर तक बच्चो को थन खींचने देने से दाँत लग जाता है जिससे थन मे घाव हो जाता है। इसकी चिकित्सा फौरन न करने से हानि की सम्भावना रहती है।

चिकित्सा—थोड़ा मक्खन या घी लेकर पीसी हुई हल्दी और थोड़ा सा नोंन उसमे डाल कर घाव के ऊपर दूध काटने के बाद दिन मे २-३ बार लेप करने से घाव जल्द आराम होता है।

---

२३ गला-नालीरोध Choking

इस रोग मे रोगो खाना नहीं खा सकते। पशु को अखाद्य, तीखे और कांटेदार कठोर पदार्थ को खालेने से यह रोग पैदा होता है क्योंकि ऐसा पदार्थ गल-नाली मे जाकर रुक जाता है।

लक्षण—इस रोग मे रोगी खाँसने लगता है। मुँह से लार गिरने लगती है। पानी पीने पर नाक से बाहर हो जाना है।

चिकित्सा—तीसी का तेल तिल या सरसों का तेल, आधा पाव ले गरम कर थोड़ा २ पिलाने से अटका हुआ पदार्थ नीचे चला जाता है। आधा पाव अलसी तैल एक छटांक शराब के साथ पिलाने से लाभ होता है।

पथ्य—जब रोगी अच्छा हो जाय तो कई दिनो तक गर्म २ तथा नरम नरम पदार्थ खाने को देने से उपकार होता है। जल और मांड़ इत्यादि गर्म गर्म देना चाहिये।

सावधानी—गले मे अटके हुए पदार्थ को किसी प्रकार निकालने का उपाय करना चाहिये।

२४, आँख-रोग Eye Disease

लक्षण—जब आँख में कोई रोग होने लगता है तो पानी गिरने लगता है। आँखों के पलक फूल जाते हैं। प्रकाश नहीं सहा जाता।

चिकित्सा—(१) थोड़ा नमक और फिटकिरी लेकर उसे पानी मे पीस-छान लो और इसी पानी से आँख को धोवो शीघ्र आराम होगा।

(२) सहजने के बीज को खूब रगड़ कर पानी मे मिलाकर आँख धोवो यदि फूला भी पड़ा होगा ता नष्ट हो जायगा।

(३) कच्चे साठी का चावल (आक) मदार के दूध में भिगो कर मिट्टी के बर्तन में भर दिया जाय और उसका मुंह मिट्टी से बन्द कर आग पर रख दिया जाय। जब चावल राख हो जाय तो उस बर्तन को उतार कर राख को ठण्डा कर सुरमें की तरह दोनों शाम आँख में अंजने से रोग जाता रहता है। फूली में भी यह दवा राम बाण सा काम करती है।

(४) आँख मे चोट लग जाने पर कबूतर के बीट को पानी में रगड़ कर आँख पर लगाने से उपकार होता है।

(५) पशु जब आँख हर समय बन्द रखे तो सरसों का तैल कपड़े में भिगों कर आँख पर पट्टी बाँध देने से फौरन आँख खोल देगा। आँख का सेंक भी उपकारी होता है।

(६) फूली मे तथा आँख से पानी आते समय तम्बाकू का पानी या सुरती खानेवाले मनुष्य खैनी को पीक आँख मे डाले तो फायदा पहुँचाता है। यह दवा प्रामाणिक है।

पथ्य—तरल खाद्य नही खाने को देना चाहिये।

सावधानी—आँख को रोशनी से बचानी चाहिये। हल्दी मे रंगे हुए कपड़े सदा आँख पर लगाये रखना आवश्यक होता है।

---

२५ सोथ-ज्वर Dropsy

यह भी संक्रामक रोग है। खून की खराबी से यह रोग होता है। जब रक्त गाढ़ा हो जाता है तो वह दूषित हो शरीर के अन्य-स्थानों मे जैसे गला, जिह्वा इत्यादि तथा इनके निकटवर्ती अङ्गो में सूज पैदा कर देता है। गन्दे जल के पीने तथा गीली ज़मीन से पैदा हुई घास को चरने और खाने से यह रोग होता है। जिस समय दिन मे विशेष गर्मी तथा रात मे विशेष शीत जान पड़े उसी समय इस बीमारी का प्रकोप होता है।

लक्षण—इस रोग से ग्रसित रोगी रोग पकड़ने के २।३ घंटे के अन्तर ही मलिन तथा शक्तिहीन हो जाता है। खून दूषित होने से ज्वाला पैदा हो जाती है। गले तथा फेफड़े मे श्वांस कष्ट होता है। यदि यह रोग पेट मे हो तो रोगी को पीड़ा तथा वेदना के चिन्ह देख पड़ने लगते है। यदि पैर मे इसका आक्रमण होता है तो पैर अवस हो जाता है। याने पशु पैर को उठा बैठा भी नहीं सकता तथा लंगड़ा सा हो जाता है। इसे किसी किसो प्रदेश वाले 'गोली' भी कहा करते हैं क्योकि इस रोग की शक्ति बन्दूक की गोली सी काम कर दिखाती है।

बार बार श्वाँस का चलना, रोगी का काँखना, नाड़ी की दुर्बलता तथा क्षीणता ही प्रधान लक्षण कहा जाता है।

चिकित्सा—(१) रोग का चिन्ह प्रकट होते ही तीसी तेल एक पाव, गन्धक का चूर्ण आध पाव, सोंठ का चूर्ण सवा भर आधा सेर नमक माँड़ के साथ दे देना चाहिये। यह जुलाब सा काम कर दिखाता है।

(२) नमक डेढ़ पाव, मुसब्बर आधी छटाँक, गन्धक का चूर्ण एक छटाँक, सोंठ का चूर्ण आधी छटाँक, गुड़ आध पाव और गरम जल एक सेर। इन सबको एक साथ खिलाने से सारा मल निकल जायगा और जब तक दस्त न हो जाय तब तक ८।१० घंटे बाद इस दवा को देते रहना चाहिये।

कपूर १ तोला और शराब १ छटाँक भात के माँड़ के साथ खिलाने से रोगी पशु शक्तिहीन नहीं होता।

पथ्य—बाँस के पत्ते तथा कोमल घास उबाल कर देते रहना चाहिये।

बकरा या बकरी

चिकित्सा

मनुष्यों के आराम के लिये बकरा अथवा बकरी भी एक प्रधान पशु माना जाती है। इससे अनेकों भलाइयां होती पाई गई हैं। यों तो इसके दूध द्वारा जो भलाई होती है, होती ही है। परन्तु इसके मांस और चमड़े से भी अनेकों लाभ पहुँचता है।

बकरे से उपकार—बकरे के शरीर से एक प्रकार की गंध निकलती है, यह गन्ध रोगा ग्रस्त घोड़ो के लिए उपकारी होता है। यदि बकरे को घोड़शाल मे बांध रखा जाय तो घोड़े को रोग होने की सम्भावना नही रहती। श्वांस, च्चय अथवा तपेदिक रोग वाले रोगी के निकट अगर एक बकरी का बच्चा रख छोड़ा जाय तो रोग की उन्नति नही हो सकती बल्कि क्रमशः रोग आरोग्य होते पाया जायगा। आज कल प्रायः सैकड़े ९० आदमी इसके मांस खाया करते है। इसमे कुछ सन्देह नही कि बकरे का शोरवा स्निग्धता, ताकत और मांस को बढ़ाता है। इसकी हड्डी का शोरवा बलशाली, रक्त शोधक तथा नेत्र ज्योति को बढ़ाता है। अतिसार आमाशय श्वांस खासी, उदरामय अथवा उदरविकार आदि अनेक रोगो मे इसका दूध अति गुण दिखाता है।

रोग और उनकी चिकित्सा

बकरी जब गर्भवती न हो तो क्या करना चाहिये

प्राय बकरियॉ ६ ही महीने की होते ही गर्भ धारण कर लेती है। यदि ६ मास के होने तक गर्भ धारण न कर सके तो उन्हे बांध कर न रखना चाहिये। उन्हे इधर उधर घूमने देते रहने से कामशक्ति का संचार होता है। यह स्वभाविक नियम है कि घूमने फिरने से वायु-धूप स्वच्छ रूप से लगेगी और जनन शक्ति मे उत्तेजना होगी। बकरे के साथ साथ घूमने तथा जङ्गल इत्यादि के अनेको प्रकार के पौधो के पत्ते खाने से उनकी

काम सञ्चार की वृद्धि होती है जिससे गर्भ धारण करने में सुविधा मिलती है। यदि ऐसा करने पर भी गर्भ धारण न कर सके तो खूराक कम कर देना चाहिये और कड़वी खली देनी चाहिये। यह भी काम सञ्चार के लिये प्रधान खाद्य माना जाता है और इसके जरिये फल भी अच्छा होता पाया गया है।

भूलकर भी बलदायक खाद्य जेसे बूंट, गेहूँ कभी न देना चाहिये क्योंकि बलबर्द्धक खाद्य-पदार्थ खिलाने से गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा चर्बी विशेष पैदा होने से बच्चा-दानी खराब हो जाती है जिससे गर्भाधान करना असम्भव हो जाता है।

दूध बढ़ाने का उपाय।

भोजन के गुणानुकूल ही दूध के घटने बढ़ने का क्रम हुआ करता है। जैसा खाद्य पदार्थ होगा वैसाही दूध का गुण भी पाया जायगा।

(१) गुड़ आध पाव, मॉड़ गरम ४ सेर, इनको खूब मिला कर दोनों वक्त देने से दूध की वृद्धि होती है।

(२) मटर की दाल एक पाव जल मे भिगो देवे जब फूल जाय तो संध्या समय खिलावे तो दूध अवश्य बढ़ेगा।

(३) लौकी उबाल कर शाम को खिलावे तो सुबह दूध अवश्य बढ़ता पाया जायगा। केले के छिलके को भी उबाल कर खिलाने से यही गुण पाया जाता है। परन्तु दूध कुछ पतला होता है।

पेट फूलना

विशेषतः भोजन करने तथा ऐसे पदार्थ को खाने पर जिससे वायु सञ्चार हो तो प्रायः पेट फूल जाता है। यह रोग भी बड़ा भयानक होता है। यदि इधर तुरन्त ध्यान न दिया जाय तो यह कठोर रूप धारण कर लेता हैऔर संहारक बन बैठता है।

चिकित्सा—कच्ची हल्दी का चूरा एक छटाँक, दूब का रस एक छटाँक, गन्ने का पुराना गुड़ आध पाव। इन सब को खूब पीस एक रस कर सेवन कराने से तुरन्त गुण दिखाता है।

मल के साथ साथ खून—मल के साथ खून का निकलना भी एक भयानक रोग है। इस रोगी को कभी भी चैन नहीं मिलता। इस रोग मे पेट मे दर्द होता है।

रोगी सदा काँखा करता है। दिन प्रति दिन शरीर क्षीण होता रहता है और विशेष कष्ट के कारण सदा रोगी छटपटाता रहता है। खड़ा होने मे असमर्थ जान पड़ता है। कमर टेढ़ी तथा मल-मूत्र त्यागने के समय जोर देना पड़े तो निम्नलिखित औषधियो का प्रयोग करना रोग का नाश करने का प्रधान उपाय है—

चिकित्सा—(१) अजवाइन का चूर्ण ४ तोला, खड़िया मिट्टी का चूर्ण २॥ तोला, सोठ का चूर्ण १ तोला, और चिरायता का चूर्ण एक तोला। इन सब को एक रसकर दिन मे २,३ बार सेवन कराने से रोग दूर होता है।

(२) काली मिर्च का चूर्ण १ तोला, सेन्धा नमक २॥ तोला

और सफेदा २॥ तोला, एक साथ मिला कर रोगी को दोनों वक्त देवे; रोग अवश्य दूर होगा।

(३) रोगी के अवस्थानुकूल दिन में २,३ बार अफीम कुछ मात्रा मे देने से रोग में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

खांसी Bronchites

ज्वर के साथ बकरी जाति के पशु को खांसी रहे तो भयानक रोग समझना चाहिये। इस रोग के लिये औषधि तुरन्त ही करना हितकर होता है, नही तो सांघातिक रोग के रूप में बदल जाता है। फिर रोग से छुटकारा पाना असम्भव होता है।

औषधि—(१) जायफल एक नग, सोंठ का चूर्ण एक तोला, गिलोय एक छटांक। इन सब पदार्थों को कूट छानकर थोड़ा माँड़ के साथ सेवन कराने से अवश्य लाभ होता है।

(२) सेंधा नमक ३ तोला, कंठकारी के पत्ते आध पाव, धतूरे के पत्ते एक छटांक, कबाब चीनी आध छटांक, समुद्र फेन एक अंजुली। इन सब को एक साथ कूट पीसकर गरम गरम मांड़ के साथ दिन में ३,४ बार देने से रोग आराम होता है।

हाँ, ख्याल रहे कि इस रोग के रोगी को हरा ताजा दूध, गरम माँड़ तथा नमक के सिवा कुछ न देना चाहिये। यही सुपथ्य है। परीक्षित है।

ज्वर Fever

जब बकरे-बकरी को ज्वर का प्रकोप होता है तो श्वाँस नहीं

चलती, सर्दी भी अपनी प्रबलता जमा बैठती है। नाक तथा मुंह से पानी गिरने लगता है। कान गर्म हो जाता है, रोआँ खड़ा दीख पड़ने लगता है। पागुर बन्द कर देती हैं।

चिकित्सा—(१) काला जीरा १ तोला, पुराना गुड़ १ छटांक शोरा चौथाई तोला। इन सब को चूर्ण कर एक मे मिला मॉड़ के साथ गरमागरम रोगी को पिलाने से रोग का नाश होना निश्चय है।

(२) कपूर एक हिस्सा, चिरायता का चूर्ण आधा तोला, गिलोय डेढ़ तोला। इन सब को खूब चूर्ण कर एक साथ मिला रोगी को देवे। फल अच्छा होगा।

(३) शोरा तीन तोला, देशी शराब तीन छटांक, कपूर एक तोला मिलाकर रोगी को देने से रोगी की अजीर्णता दूर होती है। इस दवा को देने से रोगी का पेट साफ हो जाता है। हाँ, इस बात पर ध्यान रहे कि पहले कपूर को शराब मे गला कर तब शोरा देकर सेवन कराना चाहिये।

(४) नीम के पत्ते और फिटकिरी देकर गरम पानी से रोगी का मुंह धोना चाहिये।

पेट में दर्द Colic pain

जब बकरे अथवा बकरी के पेठ मे पीड़ा होने लगती है तो प्रायः ये अपने सींग द्वारा पेट मे धक्का मारती हैं, बेचैनी छा जाती है, स्थिरता जाती रहती है, सदा लोठ पोट करने लगती हैं। इधर-उधर दौड़ २ कर चिल्लाती फिरती हैं।

चिकित्सा—(१) कच्चे हरे नारियल का जल आध सेर और पुराना गुड़ एक छटाँक एक में मिला कर गरम कर लेवे और गरमागरम रोगी को देवे।

(२) गुड़, अजवाइन का अर्क, कदम के पत्ते का रस, बराबर बराबर भाग लेकर रोगी को पिलाने से रोग जाता रहता है।

(३) हींग पकाकर, पियाज का रस पैसा भर, जवाइन आधा भूंजा आधा कच्चा पैसा भर, आदी (अदरक का रस) पैसा भर, इन सब को एक में मिला नमक के साथ रोगी को देने से रोग अच्छा होते पाया गया है। इस दवा को एक-एक घंटे पर देना हितकर होता है।

कृमि Worms

कृमि रोग के लक्षण भी पेट दर्द के लक्षण के सदृश्य ही देख पड़ते हैं। विशेषतः जब कृमि का प्रकोप होता है तो मल के साथ २ छोटे छोटे कीड़े निकलते नजर आते हैं। इस रोग से ग्रस्त रोगी दुबला पतला हो जाता है। कभी शरीर पर मास नहीं नजर आता। कमजोर पड़ने पर अनेकों रोग दबा लेते है।

चिकित्सा—अनार के जड़ के छाल का रस २ तोला, आँवला आधी छटांक, कपूर दो रत्ती एक मे मिला रोगी को खिलावे अथवा, कागजी नीबू के पत्ते आधी छटांक, हुक्के का बासी जल आध पाव, नीम के पत्ते २ तोले, थोड़ा सा सेन्धा नमक एक साथ सुबह रोगी को देने से कृमि का नाश होता है।

शोथ—शरीर के किसी भाग मे शोथ होने पर सहजन की छाल जल मे पीस गरम कर ३,४ बार लेप करे तो शोथ अवश्य दूर होगा।

सींग टूट जाने पर—कोयले को पीस कर अन्डी के तेल मे मिला टूटे हुए जख्म पर बांधने से आराम होता है। तारपीन का तेल कपूर के साथ मिलाकर टूटे हुए स्थान पर लगाते रहना चाहिये।

बात रोग—इस रोग से ग्रस्त पशु घूम फिर नही सकता। उठने बैठने की क्रिया बन्द हो जाती है।

चिकित्सा—(१) गन्धक चूर्ण, शोरा चूर्ण, काला नमक, नीम के पत्ते का रस, इन सब को एक मे घोंटकर बात वाले स्थान पर लेप करने से लाभ होता है।

(२) इमली की नई पत्ती आध पाव, काला नमक १ छटांक, शोरा एक तोला, अदरक १ तोला, मिर्च आधा तोला इन सब को खूब सिल पर पीसकर गरम जल के साथ बात स्थान पर लेप करे तो लाभ होना निश्चय है।

(३) आकवन के पत्ते, धतूरे के पत्ते, और अफीम इनको रेड़ी के तैल मे पोतकर बात वाले स्थान पर गरम गरम बॉध दे। फिर ३,४ बार सेंक करने से रोग आराम होता है।

दूध से लाभ

मक्खन—बकरी के दूध से मक्खन निकाल काम मे लाया

जाता है। यह मक्खन शीतल, उदरामय नाशक तथा वात पित्त पैदा करता है।

घृत—यह बलकारक, शीतल, वात पित्त नाशक, तथा ज्योति वर्द्धक होता है।

खोया—बल कारक, शीतल तथा मलरोधक होता है।

मलाई—मधुर, बलदायक, श्लेष्मा वर्द्धक तथा वातपित्त पैदा करती है। दूध तो अमृत सा गुण दिखाता है।

अश्व चिकित्सा

संसार मे घोड़े अनेक प्रकार के पाये जाते हैं। ये रंग विरंग के देखे जाते है। स्वेत घोड़ा सब से श्रेष्ठ माना गया है। कविला रग वाला विशैन के नाम से पुकारा जाता है। जिस घोड़े का रंग पीली दमक भरती हो, पाँव सफेद हो, नेत्र काले हो उसे चक्रवाक कहते है। कितने घोड़ों के मुख पर चन्द्रमा के किरण के समान आवर्त अर्थात् भौरी होती हैं। जिसकी आकृति, जामुन के फल के समान और पांव सफेद होता है उसे मल्लिक कहते है। श्याम वर्ण घोड़ा वह कहलाता है जिसका सारा अंग सफेद हो लेकिन कान बिलकुल काला। प्राचीन समय में इसी श्यामवर्ण घोड़े से अश्वमेध यज्ञ की पूर्ति होती थी। जिस घोड़े का सम्पूर्ण वर्ण श्वेत और पांव काला हो, वह संज्ञक कहलाता है। इस प्रकार का घोड़ा अशुभ तथा यमदूत-सा समझा जाता है। पॉव सफेद, पूँछ, छाती, मुख और सिर के बाल काले हों अष्ठ मंगल कहलाते हैं। जिस घोड़े का रोम विलक्षण हो तथा वर्ण का निश्चय न हो सके उसे पुष्प संज्ञक कहते हैं। इस प्रकार के घोड़ों को कभी, भूलकर भी नही रखना चाहिये। जिस घोड़े का पॉव सफेद और मुख मध्यम (पाठ) होता है। उसे पंच कल्याण कहते है। घोड़ों के वर्ण का निश्चय करना बहुत कठिन है। देश विदेश सभी स्थानो मे इनके अनेक भेद हैं। जिन्हे यहाँ उल्लेख करना विशेष उचित नही समझने के कारण मुख्य-मुख्य वर्ण का परिचय दे दिया है।

अर्ताव अथवा भौरियाँ

घोड़ों के अंग २ में भौरियों का होना निश्चय है। इनका फल भी शुभ और अशुभ अंगों में होने पर शुभ और अशुभ ही होता है। इन भौरियों के लगभग १२ स्थान प्रधान माने गये है। जैसे—ललाट, मस्तक, ग्रीवा, हृदय, पाद, मणि वंध, नाभी, स्कंध, कंठ, मुख, कुक्षि और तीनों छिद्र। रोमों के गोले घुमाव को ही भौरियां होना निश्चय किया जाता है। जिस घोड़ा के नासिका के अग्र भाग मे एक, ललाट के अग्रभाग में एक, कनपटी में एक और मस्तक में एक भौंरी हो उसे उत्तम समझना चाहिये। हृदय, कंठ, कटि, नाभि, और कुक्षि भग में भौरियों का होना मध्यम माना जाता है। ललाट में दो और तीसरा समुद्र में हो वह सब से उत्तम तथा दीर्घ आयु वाला होता है। जिसके ललाट में एक के बाद एक और तीन लगातार भौरियां पाई जॉय उसे निश्रेय कहते हैं। वह घोड़ा बलपुष्टि करने वाला होता है।

शुभ-लक्षण

जिनके कंठ में उत्तरोत्तर तीन भौरियॉ हों वह अत्युत्तम समझा जाता है। जिसके ललाट मे चन्द्र और सूर्य्य नामक दो भौरियां हो वह राज वृद्धि करने वाला होता है। दक्षिण कपोल मे जिसे भौंरी हो वह मालिक को शुभ अर्थात् कल्याण करते हैं। उसे शिव के नाम से पुकारा जाता है।

कान के मध्य और मूल में जिसे भौंरी हो वह संग्राम में अवश्य विजयी होता है। उसे 'विजय' कहते हैं।

कमला कार भौरी स्कंध प्रदेश मे होने से कल्याण होता है। वह 'पद्म-संज्ञक' कहलाता है।

जिसकी नासिका के मध्य भाग मे एक या तीन भौरियाँ हो वह 'चक्रवर्ती' कहलाता है। वह घोड़ा राज्य-भोज्य भी कहलाता है।

अशुभ-लक्षण

काले रंग की जीभ वाले घोड़े को कृष्णजिह्वा कहते है। जिनके दांत छोटे-वड़े, ऊंचे नीचे होते है वे 'कराली'; जिसका सारा अंग एक रंग और एक पांव एक रंग का होता है वह 'मुशाली', जिसके दांत चार पांच वह 'हीन-दन्त' और जिसके सात आठ हो वह 'अधिक दन्त' के नाम से कहे जाते है। जिसके कान के पास भौरी हो उसे 'भृंगी' कहते है। इन घोड़ो से स्वामी का अनिष्ट होता है।

जिस घोड़े का एक अण्डकोष बढ़ गया हो वह 'एकाण्ठ' और जिसके दोनो वढ़ गये हो वह 'जात काण्ड' कहाता है। ऐसे घोड़े भी अशुभ ही समझे जाते है।

जिनका सारा शरीर एक रंग और सिर काला हो वह 'त्रीसरी' कहलाता है।

जिस घोड़े के अण्डकोष के निकट दो थन हो वह स्तनी अथवा 'स्थली' कहाता है।

जिसका एक पैर श्वेत और तीन पैर किसी दूसरे रंग के हो वह आर्जिता कहलाता है। इन प्रकार के घोड़ो से सदा दूर रहना चाहिये। ये सदा अशुभ ही समझे जाते है।

अश्व-शाला

आश्व-शाला का दूसरा नाम घोड़शाल है। घोड़शाल चौड़े स्थान पर बनवाना चाहिये। भूमि ऐसी होनी चाहिये जहां सील न हो। रेतीली और कंकरीली जमीन भी रहना ठीक नही है। जहाँ हवा और धूप आसानी से आ जा सके ऐसे स्थान मे घोड़शाल रखना चहिये। घोड़शाल के मकान मे लम्बी २ खिड़कियों का रहना बहुत जरूरी है। प्रत्येक घोड़ों के लिये लम्बे २ कमरे का होना ठीक है। लेकिन याद रहे कमरे फरक २ हो। दीवालें जहां तक हो सके ऊंची और खुली रखनी चाहिये।

घोड़शाल में एक २ टोकरी कोयला छप्पर से एक २ कमरे मे लटका देना चाहिये और फिर १५ दिन पर कोयले को बदल देना अति उत्तम है। घोड़शाल में एक ऐसी नाली होनी चाहिये जिससे घोड़े का पेशाब आसानी से निकल जाया करे। घोड़शाल में लीद न पड़ा रहना चाहिये। उसे लीद करते ही उठाकर फेंक देना चाहिये। प्रतिदिन घोड़शाल को पानी से साफ कर देने से उसमे गन्ध नही आती तब रोग की सम्भावना भी मिट जाती है। घोड़शाल साफ रखने से मच्छड़ मक्खियां भी घोड़े को तङ्ग नही किया करती। घोड़शाल की गच आगे की तरफ से ऊंचा और पीछे की तरफ से ढालुआ बनवाना ठीक होता है।

रात में घोड़ों के निकट कोमल घास रख देना चाहिये। उस पर घोड़े आराम भी कर लेते है। जिससे उन्हे सोने मे कष्ट अनुभव नही होता और सुख की नींद सो रहने के पश्चात् प्रसन्न दीख पड़ते है।

हाँ, ख्याल रहे कि घोड़ेशाल मे एक दिन की घास दूसरे दिन न रहने पावे। घोड़शाले के निकट कूड़ा-करकट नहीं रखना चाहिये। गर्मी और सर्दी से बचने का पूरा प्रबन्ध रखना चाहिए, कमरे के खिड़कियो और घोड़े के शरीर ढकने के लिये पर्दे और कम्बल का रखना ठीक होता है। उससे ठण्ढ का असर नहीं होता।

घोड़ो के खान-पान पर अगर विशेष ध्यान न दिया जाय तो बड़ी हानि होती है। समय पर खाना देना, और किस प्रकार का खाद्य-पदार्थ देना चाहिये इस पर भी ध्यान रखना ठीक है।

सूखी दूब घोड़ो के खाने के लिये प्रधान वस्तु है। उसे घोड़े बड़ी प्रसन्नता के साथ खाते है। दूब को लाकर पहले धो देना चाहिये और तब उसे सुखा कर खाने को देने से घोड़े खूब चाव के साथ खाते है। थोड़ा २ घास खाने को देना चाहिये, इससे विशेष नुकसान नही होता और थोड़ा २ देने से घोड़े खूब खा लेते है।

ज्यादाः घास खाने को देने से घोड़ो को अजीर्ण रोग हो जाता है। गाजर घोड़े के लिये बलदायक पदार्थ है लेकिन इसे अधिक तर न देना चाहिये क्योकि इससे पेट फूल जाता है जिससे हानि होती है।

चने तथा चने की दाल फुलाकर तोब में देना चाहिये। उसे घोड़े के मुंह मे बांध देने से वे आसानी से खा लेते हैं। २४ घन्टो मे दो बार इसे खिलाने से अति लाभ पहुँचता है। यदि दाने मे नमक मिलाकर दिया जाय तो अधिक लाभ होता है।

जई इत्यादि भी दाने में दी जाती है। लेकिन सब दानों मे चना ही विशेष लाभ दायक होता है।

पीने का पानी निर्मल तथा ठण्डा होना चाहिये, ऐसे तालाव अथवा पोखरे का पानी नही देना चाहिये जहां धोवी कपड़ा धोता हो, जिस पानी में गांव की गन्दी चीजे आती हों। बरसात में नदी का पानी घोड़े को न देना चाहिये। कुंए का पानी दिन मे २,३ बार थोड़ा २ पिला कर घोड़े को टहला देने से किसी किस्म की वीमारी की सम्भावना नहीं रहती एवं घोड़े निरोग ओर तन्दुरुस्त रहा करते है।

रोग लक्षण तथा चिकित्सा

घोड़े को अनेक रोग होते पाये जाते हैं। कितने ऐसे रोग जिनकी पहचान होनी वड़ी कठिन जान पड़ती है। ऐसे रोग भी कितने हैं जो गुप्त रीति से पैदा होकर प्राण-संहराक वन वैठते है। कितने अनेक रोग हैं जिसे घोड़े के पालक अपनी आखों देखते २ चिकित्सा न कर सकने पर उन्हे मौत के मुंह में चले जाने देते हैं।

इसी समस्या को हल करने के लिए कुछ एसे रोगों का वर्णन, लक्षण तथा उनकी चिकित्सा के सम्बन्ध मे उल्लेख कर देना उचित होगा कि जिससे घोड़े के पालक को सहायता मिलने मे कष्ट न हो और जिससे घोड़े चिकित्सा हीन न रह अपना जीवन बचा सकें। वे यों हैं—

मोतड़ा—यह रोग पांव का रोग है। जब घोड़े के दनों

घुटने ऊंचा-चौड़ा फूला हुआ नजर आवे तो समझना चाहिए कि मोतड़ा रोग है।

हड्डा—इस रोग मे घुटना मुड़ने के स्थान मे एक कड़ी चिपटी तथा नुकीली हड्डी निकल आती है जिससे पांव के हड्डियां प्रायः नष्ट हो जाती है। ऐसे रोग का हड्डा कहते हैं।

वीर हड्डी—पैर की एड़ी से एक मोटी हड्डी कभी २ निकल आती है वह वीर हड्डी कहलाता है।

पुश्त—यह रोग सुम के ऊपर जहां वाल होता है हुआ करता है। जय जामची के ऊपर का गोश्त फूल जाय तो समझना चाहिये कि पुश्त रोग धर दवाया है।

वैजा—इस रोग से पांव के पुट्ठे की मांस आगे पीछे और ऊपर नीचे अन्डे के समान फूल उठता है जिसे वैजा कहते है।

फील पाइ—हाथी के पांव के समान घोड़े का पांव फूल जाने पर फील पाइ रोग समझना चाहिये।

गज चर्म—घोड़े का 'चर्म हाथी के चर्म के समान सख्त और खुरदरी हो जाता है। यही गजचर्म का लक्षण है।

शिकाफ—सुम की जगह जगह कट जाना शिकाफ का लक्षण है।

क—लक्षण

वादी, वलगमी और सफरावी इन तीन प्रकृतियो के घोड़े होते है। जिस प्रकार मनुष्य को कफ, पित्त और बात इन दोषो

के बिगड़ने से रोगों की उत्पत्ति होती है वैसे ही घोड़े के रोगों का भी कारण होता है।

बादी—जिस घोड़े को वादी का प्रकोप हो जाता है उसे खुश्की जान पड़ती है। चारे खाने में मन मलिन किये रहते हैं। कड़वी वस्तु खाने की इच्छा प्रबल होती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि उसके शरीर पर रगें साफ २ दिखाई पड़ने लगती है वे उछलते कूदते देख पड़ते है।

बलगमी (कफप्रकृति)—इस प्रकृति के घोड़े का रोम नरम, चिकने और मुलायम होते हैं। चलने मे फुर्ती और चालाकी दिखाते हैं परन्तु चारादाना कम खाते है।

सफराबी—(पित्तप्रकृति) इस प्रकृति में चञ्चलता खूब होती है। चलने फिरने मे रोक टोक नही करते। चारादाना खाने में प्रसन्नता दिखाते है। शरीर में तरी खूब रहती है।

ख—नाड़ी परीक्षा

नीचे के जबड़े की दो हड्डी जो नीचे से ऊपर आकर एक कोण सा बनाती है वहाँ एक मोटी बत्ती के समान नाड़ी दिखाई देती है। घोड़े की नाड़ी प्रायः इसी स्थान से देखी जाती है। यह स्वस्थ्य अवस्था में ४० बार प्रति मिनट चला करती है। इससे न्यूनाधिक होने पर इसके स्वास्थ्य में अन्तर समझना चाहिये।

ग—मूत्र परीक्षा

मूत्र का रंग सफेद से सर्दी, पीला-गाढ़ा से वात-कफ की

अधिकता और लाल रंग होने से गर्मी का प्रकोप माना जाता है।

घ—नेत्र परीक्षा

आँख के रंग मे भी भिन्नता होने से रोग की परीक्षा की जाती है। स्वस्थ्य घोड़े की पुतली का रंग गुलाबी होता है। सफेद कफ, पीला बादी तथा ललाई से गर्मी की अधिकता समझना चाहिये।

यदि ललाई मे कालापन आ जाय तो घोड़े का जीवन असंभव समझना चाहिये।

ङ—मल परीक्षा

दुर्गन्ध युक्त दस्त होने से अजीर्ण रोग समझना चाहिये। यदि दस्त बन्द न हो तो दस्तों की बीमारी समझनी चाहिये।

आंख रोग तथा चिकित्सा

(१) अगर घोड़े की आंख मे झटका लग जाय, आंख से पानी गिरने लगे तथा रंग नारंगी के रंग के समान हो जाय तो त्रिफला (अंवरा, हर्र, बहेरा) को कूट कर पानी मे भिगो देवे। दूसरे दिन प्रातःकाल उसे छान कर फिटकिरी मिला घोड़े की आंख मे छींटा देते रहने से रोग नीरोग होता है।

(२) चोट ल .ने से लाली आ गई हो तो नमक और फिटकिरी के पानी से आंख धोवे।

(३) समुद्र फेन, पके हुए चावलों का मांड़ और शहद इन तीनो को एक में मिला अञ्जन करे।

क—आंख की फूली

(१) साठी के चावल को आक के दूध में भिगो कर छाया में सुखा ले। फिर मिट्टी के पात्र में भर कर आग पर जलावे। जब राख हो जाय तो सिरस के बीज २ तोला, हरे कांच की चूड़ी १० माशा, लाहोरी नमक २ तोला सब को पीस कर राख के साथ मिला फूली पर लगावे तो फूली अवश्य आराम होती है।

(२) फूली हुई फिटकिरी तथा सेंदुर बराबर भाग ले खूब महीन पीस ले। इनमें से प्रतिदिन दो बार ६ रत्ती की मात्रा मे लगाने से उपकार होता है।

(३) मनुष्य के मूत्र से छींटा देने से फूली रोग आराम होता है।

(४) सांभर नमक और बँगला पान पीस कर पानी में घोल ले और मुंह में भर कर घोड़े की आंख में प्रतिदिन दो बार कुल्ला देने से अति लाभ होता है।

(५) सेंदुर और चीनी एक में पीस कर फूली पर लगाने से रोग आराम होता है।

(६) पत्थर का नमक शहद मे मिलाकर अंजन करने से आराम होता है।

(७) पुरानी ईंट को सुरमे के समान पीस कर पानी मे घोल छींटे देने से फूली का नाश होता है।

(८) रीठे को पत्थर पर घिस कर आंख मे लगाना भी उपकारी होता है।

(९) घोघा का चूना, पीली फिटकिरी और कांच की चूड़ी इन तीनो को सम भाग ले महीन बुकनी बनाले और एक नली मे भर आंख मे फूंके तो फूली नष्ट होती है।

(१०) मुर्गी तथा कबूतर की ताजी बीट आंखों मे अंजने से भी अति लाभ होता है।

नाखूना तथा जाला

नाखूना आंख का रोग है। यह आंख के कोने मे तीन फांक पतला नोकदार होता है। इसका मांस बहुत सख्त होता है।

चिकित्सा (१)—मुर्गी के अण्डे के छिलके की राख व गन्धक और नीला थोथा इन सब को पीस कर मनुष्य के मूत्र मे गोली बनावे और सुखा कर रख दे। जब दवा करना हो तो मनुष्य के ही मूत्र में घिस कर अंजन करे।

(२) काली मिर्च, बीजबन्द, भांग, सुहागा सेंधा नमक, फिटकिरी फूली हुई और गूगुल इनको बराबर ले कड़ुवे तेल मे मिला कर अंजने से रोग अवश्य आराम होता है।

मूजा और लकलक

इस रोग की प्रधान पहिचान यह है कि यह आंख, अंडकोष कोष्ट मे हुआ करता है जो सूत का सा पतला होता है। इस

रोग से आंख का बचना महान कठिन है। इस रोग को होते ही काट देने से उपकार की आशा होती है।

चिकित्सा—मेढक को कुल्हड़ में बन्द कर तेज आग से जलावे। जब मेढक जल कर राख हो जाय तो उसमें तेल मिला कर दोनों समय लगावे। अवश्य उपकार होगा।

नाक से खून आना

अति परिश्रम तथा चोट आ जाने से घोड़ों की नाक से प्रायः खून गिरने लगता है जिससे वे सुस्त अथवा बलहीन हो जाते हैं।

चिकित्सा—(१) मनुष्य का मूत्र छः ड्राम और तिल का तेल छः ड्राम ले एक नली में भर नाक मे फूंकने से खून बन्द होता है।

(२) हिरन तथा भैस की सींग की राख नाक में देने से आराम होता है।

(३) गाय का घी शिर पर मले।

नाक में कीड़े का पड़ जाना

कभी २ तो घोड़े की नाक में कीड़े पड़ जाते हैं तथा दुर्गन्धमय खून निकलने लगता है। यह भी एक भयानक रोग है।

चिकित्सा—(१) बच, त्रिकुटा और त्रिफला इनको कूट छान कर उतने ही भाग गुड़ ले घी मे मिला घोड़ों को देना चाहिये।

(२) फिनायल को पानी मे मिला पिचकारी द्वारा नाक के अन्दर धोते रहना चाहिये। बहुत गुण दिखाता है।

रुधिर वमन

कभी २ घोड़े के मुंह से खून गिरने लगता है। यह रोग भी अति परिश्रम तथा खराई करने से होता है।

चिकित्सा—(१) जामुन की छाल छाया मे सुखा कर तीन अंडे की सफेदी के साथ मिला घोड़े को सात दिन तक देने से रोग जाता रहता है।

(३) शौतरी, हर्र और आँवला इन तीनो को एक साथ मिला एक एक पाव दाना देने के एक घंटे पूर्व घोड़े को दे देना चाहिये। पानी ठीक समय पर पिलाना चाहिये॥

नोटः—इस रोग को सर संबूल भी कहते है।

दांत का कोठ होना तथा जीभ का सूखापन

जब घोड़े का दांत कोठ हो जाता है अथवा खटाई वैठ जाती है और जीभ मे सूखापन हो जाता है तो घोड़े खाने की इच्छा रहते हुए भी नही खा सकते। इस दशा मे कनेर की छाल पीस कर शहद मे मिला कर नीबू के बराबर गोली बनावे और उसे घोड़े को चार दिन तक खिलावे।

सिर रोग Head disease

वात, पित्त और कफ की अधिकता से घोड़े के सिर मे दर्द

पैदा होता है। सिर रोग से घोड़े सुस्त देख पड़ते लगते हैं। इस रोग के प्रकोप से घोड़े चारा दाना त्याग देते हैं।तथा उनके आंख, नाक और मुंह से पानी गिरने लगता है।

चिकित्सा—(१) संतरा, सोंठ, काली मिर्च और पीपल इन सब को सम भाग ले शराब में मिला दोनों वक्त देवे। दर्द अवश्य दूर होगा।

(२) नौसादर १ भाग और केशर चार भाग खिलाने से परम उपकार होता है।

मुख रोग Mouth disease

जब घोड़े के मुख मे दाने दाने से निकल पड़ें। जिससे लगाम लेने में कष्ट हो तो सोंठ और पीपल को कूट कर चार सेर पानी मे औटे। जब आध सेर पानी रह जाय तब पिलावे।

जब कांटे ऊपर नीचे पड़ जाँय :—कलमी सोरा, सेंधा नमक, समुद्र फेन और रसौत इन चारों को सम भाग ले धाय के फूल के रस में मिला कर घोड़े के मुख में तीन दिन तक मले तो रोग आराम होता है।

घोड़े के मुख के कांटे को चमार से कटा देवे और फिर हल्दी, काला जीरा और काली मिर्च सबको मिला कर मुख में मले। अवश्य लाभ होगा।

लव काम

(१) यह रोग दांत की जड़ से होठों तक होते पाया जाता है। इसमे सूजन होता है।

चिकित्सा—नस्तर द्वारा इसमे से मवाद निकलवा देना चाहिये। फिर हल्दी, नमक पीस कर उसमे भर देना चाहिये।

(२) अदरक, पान, काली मिर्च, इनको सम भाग ले चारा दाना देने के पूर्व ही तीन दिन तक देते रहना चाहिये।

नोट :—यदि तालू तक यह रोग फैला हो तो चिकित्सा नम्बर एक का ही प्रयोग लाभदायक होगा।

खाँसी Bronchitis

खांसी रोग कैसा भयानक होता है सभी को मालूम है। इसकी प्रबलता होने से मृत्यु के बाद ही यह साथ छोड़ता है।

प्रायः यह रोग परिश्रम के बाद तुरन्त पानी पिलाने अथवा सर्दी लग जाने से आक्रमण कर बैठता है। खांसी के साथ २ नाक से पानी गिरने लगता है। छीक भी कभी कभी आया करती है। जब यह रोग बिगड़ जाता है तो अनेक उपद्रव के साथ रोगी को धर दबाता है और बल पौरुष सभी काफूर हो जाते है।

चिकित्सा—(१) प्याज आध सेर, घृत पाव भर, एक साथ मिला घोड़े को खिलाते रहना उपकारी होता है।

(१) घोड़े को पानी पिलाने के पहले एक पियाज खिला देना चाहिए फिर बांस की पत्तियां खाने को देना चाहिये।

(३) भटकटैया (भट कुआ) के जड़, फल फूल और पत्ते सब को आग मे जलावे। फिर महीन पीस कर एक मे मिलावे और इसमे से दो छटांक प्रतिदिन जौ के आटे मे मिलाकर ४, ५ दिन तक घोड़े को खिलाने से खांसी रोग आराम होता है।

(४) अदरक के एक टुकड़े में हींग दे आग में पका जौ के आटे की गोली बना धर दे और घोड़े को दाना खाने के बाद खिलादे।

जुकाम

जुकाम में घोड़े के नाक और आंख से गाढ़ा या पतला पानी निकला करता है। श्वांस में अधिकता देख पड़ती है। सर्दी याने जुकाम भी एक अजीब रोग है। इसके द्वारा अनेक रोग की वृद्धि हो जाने की सम्भावना रहती है।

चिकित्सा—(१) पाव भर मेथी और पैसे भर काली मिर्च एक साथ घोड़े को खिलाने से जुकाम का नाश होता है।

(२) हींग ६ रत्ती, सोंठ ४ माशे, इन दोनों को पीसकर जौ के आटे के साथ खिलाने से रोग आराम होता है।

खुजली Itch

खुजली संक्रामक रोग है। एक को होने से निकट के रहने वाले सभी घोड़ों को यह रोग हो सकता है। घोड़े के शरीर पर घाव सा जान पड़ता है। यह रोग अति कष्ट देता है।

चिकित्सा—(१) खट्टा दही ४ सेर, नीम की पत्ती आध सेर, काला जीरा पाव भर, लहसन पाव भर, और काली मिर्च आध पाव। इन में से दही को छोड़ कर सबको एक साथ पीस दही में घोल कर, रोगी घोड़े का शरीर साबुन से साफ कर इस दवा को लगावे और धूप मे घोड़े को रख छोड़े इस प्रकार ४, ५ दिन दवा लगाने मे खुजली अवश्य दूर होगी।

(२) पाव भर कड़वे तेल में पैसाभर तील मिला कर घोड़े के शरीर पर मले । ३ घण्टा पीछे चिकनी मिट्टी लगाकर गर्मी मे ठंडे पानी से और जाड़े मे गर्म पानी से धोवे तो आराम होता है।

नोट—हुक्के के पानी से दिन मे ४, ५ वार खाज को धोवे ।

अग्निवाद

इस रोग का प्रधान लक्षण यह कि रोग होते ही शरीर से रोम और चमड़ा जगह २ से गल २ कर अलग हो जाता है। ठीक आग से जलने-किसी-पशु के शरीर की हालत होती है। इस मे दाह, खाज और रूखापन पाया जाता है। इसे संक्रामक रोग भी कह सकते है।

चिकित्सा—सरसों का तेल एक सेर, गौ का घी एक सेर और चर्बी एक सेर। इन तीनो को अग्नि पर चढ़ा दे और फिर एक सेर साबुन को धीरे २ चमचे से मिला दे। जब सब एक मे मिल जाय और जल कर राख हो जाय तो जौ की चूनी मे प्रति दिन एक पाव घोड़े को दे तो रोग आराम होता है।

(२) धान का भात, नीम के पत्ते और दही तीनों आध २ सेर लेकर २० दिन तक रोगी को खिलावे तो अति लाभ होता है।

(३) पारा, पपरिया कत्था, और कपूर इन को पैसे भर लेकर आध सेर घी मे मिला देवे और तीन दिन तक घाव पर लेप करे। तीसरे दिन पीली मिट्टी से घाव को हल्के हाथो से धोवे तो रोग अवश्य आराम होगा।

झुकनवाद

यह बहुत कष्टदायक रोग है। इससे घोड़े चल फिर नहीं सकते। इसका प्रधान लक्षण पैर को उठा २ कर चलना, पैर-पटकना और पैर घसीट २ कर चलना है।

चिकित्सा—(१) यदि झुकनवाद में घाव नज़र आवे तो नीम का तैल और फिनायल एक में मिला घाव पर धरते रहना चाहिये।

(२) हींग को २१ दिन तक घोड़े को देना हितकर होता है।

(३) सुबह हल्दी, पाटा और पीपल सत्तू में मिला घोड़े को खिलाने से रोग का नाश होता है।

(४) लहसुन का खिलाना भी इस रोग के लिये रामबाण है। लहसुन पारा के साथ दिया जाय तो अति उत्तम।

खुचक

इस बीमारी में हलक के जोड़े में एक छाला सा होता पाया जाता है। कोई २ इसे जहरवाद भी कहा करते है। इसका इलाज गल-सूरा के इलाज के समान है। जब रोगी मुख न खोल सके तो गौ का गोवर, सांभर नमक मनुष्य के मूत्र में पीसकर दोनों वक्त लगाकर कपड़े से बांध देने से घाव फट जाता है। फिर नीम के पत्ते को औट कर गरमा गरम पानी से बार बार घाव को धोवे और फिर तिल का तैल डेढ़ पाव, भिलावा छटांक भर तैल में जलाकर लगावै। जब घाव की ऊंचाई जाती रहे तो काली मिर्च, नीला थोथा, और साबुन इनको तैल मे पका मलहम बना घाव पर लगाना चाहिये। बहुत उपकार करता है।

वाद-जीरा

यह रोग वादी के कारण होता है। जब इसकी प्रबलता होती है तो घोड़े के कमर मे दर्द हो उठता है जिससे घोड़े अपना कमर लटकाये रहते है और पीठ को झुका देते है। प्रायः इस रोग से घोड़े की पीठ और पेट सूखने लगते है और उठने बैठने मे लाचारी देख पड़ने लगती है। वे सदा सुस्त तथा मन मलिन किये रहते है।

चिकित्सा—(१) दूध और नमक एक मे मिला कमर पर मलना चाहिये।

(२) सरेस पानी मे पकाकर दर्द स्थान पर लगाना चाहिये।

(३) कुटकी आधा पाव, सोठ आधा पाव, कबीला आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव, गूगुल डेढ़ तोला इनको पानी मे पीसकर गरम कर लो और गरम गरम दवा को दर्द पर लेप करने से रोग आराम अवश्य होता है।

(४) तिल का तैल और जवाखार दोनो को पानी मे औट कर रोगी को पिलाने से रोग जाता रहता है।

नोट—इस रोग मे तिल के तैल से सेक करने से अति लाभ पहुँचता है। नीबू को गरम कर सेक करने से भी अति गुण दिखाता है।

कभी २ चोट तथा लचका खा जाने से भी घोड़े के कमर मे दर्द पैदा हो जाता है। इस हालत मे भी वाद जीरा के लक्षण देख पड़ते है। इस हालत मे निम्नलिखित चिकित्सा करने से घोड़े चंगे हो जाते है:—

चिकित्सा—(१) यदि घोड़े के कमर में सूजन हो और फटा देख पड़े तो सदाव की पत्ती, तिल का तैल और पानी एक एक सेर ले खूब औंटे, जब पत्ती और पानी जल जाय केवल तैल रह जाय तो उसे उतार कर रोगी के कमर में मालिश करने से अति उपकार होता है।

(२) अण्डी का गुदा दही में पीस कर तीन दिन तक कमर पर लगावे और चौथे दिन गरम पानी से धो दे। अगर सूजन हो तो गेहूँ का मैदा, हल्दी, और सज्जी, सब को पीसकर कमर पर लेप करै। अवश्य रोग आराम होता है।

(३) चोट सज्जी, कड़वा तैल, अफीम, खाने की सुर्ती, नमक और मिर्च एक मे मिला गरम कर दर्द पर मालिश करै तो रोग जाता रहेगा।

पीठ पर घाव

चारजामा को ढीला कसने से रगड़ खाकर अथवा दूसरे प्रकार से छिल कर घाव हो जाया करता है। इस हालत में घोड़े पर सवारी भूल कर भी नहीं करना चाहिये जब तक कि घाव पूर्ण रूप से अच्छा न हो जाय।

चिकित्सा—पुराने जूते को आग में जला कर राख करलो और उसी राख को कपड़छान कर घाव मे भर दो, घाव अच्छा हो जायगा। अथवा इसी राख को कड़ुवे तैल में घाव पर लेप कर देना चाहिये।

यदि तङ्ग के नीचे घाव हो जाय तो फिटकिरी, भूना सुहागा,

कालीमिर्च और हल्दी इन सब को सम भाग ले कूट छान कर मट्ठे के साथ घोड़े को दोनों वक्त देने से रोग दूर होता है।

मलहम—(१) सरसो का तैल आध सेर, लहसुन आध पाव, सुरती १ छटाॅक, लालमिर्च एक छटांक, नीम की पत्ती आध पाव, मुर्दासंख एक तोला, सेंदुर दो तोला, संगजराहत दो तोला, इन सब को तेल मे पकावे। जब ठण्डा हो जाय तो घाव पर लगावे तो घाव अवश्य अच्छा होगा।

(२) मुर्दासंख ३ माशे, मुसव्वर तीन माशे, मोम तीन माशे, तिल का तैल पाव भर और १ पत्ता पान इन सबको पीस कर तेल मे पकावे और घाव को नीम की पत्ती औट कर उसी पानी से फिटकिरी चूक कर मिलावे और इसी से घाव धो मलहम लगावे तो घाव जल्द आराम हो।

सूजन

शरीर के किसी अङ्ग मे सूजन हो तो बकायन, नीम और सॅभालू के पत्ते गरम कर सूजन पर रख पट्टी बाॅध दे, सूजन जाती रहेगी।

तङ्ग के नीचे रोटी की टिकिया के समान एक सूजन अकसर ही उठ जाया करती है। इसका इलाज तुरन्त न करने से हानि की सम्भावना रहती है। इस हालत मे उपरोक्त दवा का बफारा तीन दिन तक देने से आराम होता है।

सज्जीखार, सरसो, लोठाखार, सेंधानमक, पीपल, हल्दी इन को पानी मे पीस कर लेप करने से हर प्रकार की सूजन आराम होता है।

गल-सूरा

इस रोग में भी सूजन होती है जो कान की जड़ से हलक तक होती है। यह पुराने ईंट को गरम कर सेंक करने से आराम होता है।

अदरक पाव भर, काली मिर्च आध सेर, पान सौ पत्ती और कालेसर पाव भर। इन सब को कूट छान कर रोगी घोड़े को प्रति-दिन सात दिन तक शाम को खिलाने से रोग नाश होता है।

अकवन, धतूरा और रेंडी के पत्ते को गरम कर सूज स्थान पर पट्टी बांध कर पत्तल को गरम कर सेंक करने से सूजन जाती रहती है।

खुश्कें

यह रोग गले के दोनो ओर एक गोले के समान देख पड़ता है। जब यह रोग पैदा होने लगता है उस समय विशेष कर जाड़े के दिनों मे घोड़े का मूत्र बन्द हो जाता है। इस रोग के आक्रमण से घोड़े गर्म से व्याकुल हो खाना पीना त्याग देते है।

चिकित्सा—(१) बिनौले की पोटली बनाकर गरम-गरम सेंके और थोड़े से बिनौले मनुष्य के मूत्र में पीसकर फूले हुए स्थान पर बाँध दे। ऐसा ३ दिन तक करते रहने से सूजन जाती रहती है।

(२) पान, पीपल, अदरक, काली मिर्च और सेंधा नमक

इन सब को बराबर लेकर चूना मे मिला सात दिन तक रोगी को खिलाने से रोग आराम अवश्य होता है।

वीर-हड्डी

यह हाथ की कलाई का रोग है। इस रोग के होने पर घोड़े को चलने मे अति कष्ट जान पड़ता है।

चिकित्सा:—(१) बकरी का गुर्दा आग मे गुन गुनाकर थोड़ा नमक मिला वीर-हड्डी पर बाँध देने से दर्द आराम होता है।

(२) मिश्रा एक तोला ले कूटकर रोग पर बाँधने से आराम होता है।

बाम्हनी कोलास

दुम या चोटी मे यह रोग होता है। रुधिर जब खराब हो जाता है तो बाल जड़ से गिर जाते है। जहां से बाल गिर जाता है वहां दबाने से दर्द होता है। यही बाम्हनी कोलास का प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा—आक के पके हुए पीले पत्ते २०, हरताल और संखिया दोनो सम भाग लेकर पानी मे घोटे और फिर आक के पत्ते पर लपेट ले फिर एक सेर तिल के तैल में उन पत्तों को डाल कर अग्नि पर चढ़ावे जब पत्ते जल जांय तो उतार ले। तब नीला थोथा, आमा हल्दी, और आश खार तीनो सम भाग लेकर एक साथ नीम के लकड़ी से खूब एक बर्त्तन मे रख घोंटे। फिर रोग

के स्थान को किसी चीज़ से ऐसा खुजलावे कि खून निकल पड़े तब आक के पत्ते पर दवा लपेट कर उस स्थान पर बांध दे। इस प्रकार तीन दिन तक बाँध रखने के बाद पट्टी खोलकर गरम पानी से धो दवा लगा दे। यह बहुत परीक्षित दवा है। इससे अवश्य रोग का नाश होता है।

किनार-रोग

बात और कफ की अधिकता से यह किनार रोग उत्पन्न होता है। घोड़े को एक स्थान में बाँध रखने, हाजमा बिगड़ जाने से, जुकाम होने से,और विशेष ठण्डी हवा लग जाने से भी यह रोग होते पाया जाता है।

जब यह रोग धर दबाता है तो रोगी छींकने लगता है; नाक से पानी गिरने लगता है। चारा दाना से अनिच्छा हो जाती है।

चिकित्सा—(१) बारूद दो पैसे भर, सेंधा नोन पैसे भर, और ईसर अधेला भर। इन सबको दूध मे पीस कर घोड़े को नास देने से जुकाम का नाश होता है।

(२) चार तोला कड़ुवा तैल आग पर गरम कर उसमें चार तोले शहद, चार माशा पीसा हुआ कायफल मिलाकर नाक मे डालने से रोग निश्चय आराम होता है।

(३) शहद आध सेर, बकरी का दूध आध सेर, और सोंठ एक छटांक इन तीनों को एक में मिलाकर, घोड़े को पिला देना चाहिये।

(४) ढाई पत्ता आक का जो पका हो घोड़े को खिलाने से रोग आराम होता है।

नोट—सुर्का की बीमारी का कारण जुकाम ही है। किनार रोग के समान ही यह रोग होता है। चिकित्सा भी एक ही करनी चाहिये।

जीकुलनफ़शका

पित्त के विकार से यह रोग उत्पन्न होता है। शरीर का गरम हो जाना, आंख मे लाली, स्वांस मे कठिनाई, पसीने का बार २ आना तथा नसो का शरीर के ऊपर उभड़े हुए दिखाई देना जी-कुलनफशका का प्रधान लच्तझ है।

चिकित्सा—(१) त्रिफला (प्रत्येक आठ आठ तोला) २४ तोले, शक्कर पाव भर और चावल पाव भर इन सबो को पीस कर हलुआ बना रोगी घोड़े को देने से फायदा होता है।

(२) इन्द्रायन, छोटी लायची, काली मिर्च, लाल मिर्च, अज-वाइन, सेधा नमक, नीला थोथा, बकाल अजमो-ा, दारु हल्दी, कुलञ्जन, कुचिला, लौग तथा रेड़ की जड़ का छाल आध आध पाव, ५ सेर थूहर के दूध मे घोट कर गोयठे की आग पर जलावे। ठण्डा होने पर पीस कर सब दवा एक जाति कर पैसे पैसे भर दवा को शराब मे घोल घोड़े को पिलावे तो रोग अवश्य दूर होगा।

चना तथा मोंठ का दाना और सूखी घास ही इस रोग के लिये पथ्य देना चाहिये।

शेरदुमी

शेरदुमी की सवारी करते समय घोड़ा हीसने लगता है और ज़ोरों में स्वांस खींचने लगता है। इसकी क्रिया बार बार होने से खूब आवाज बँध जाती है जिसे शेरदुमी कहते हैं।

चिकित्सा—प्याज दो सेर और कतीला आध सेर। इन दोनों को पीस कर बराबर आठ दिन तक देते रहने से फायदा होता है।

(२) काली मिर्च सात तोले, सौंफ दस तोले, आंवला छः तोले, कंजा छः तोले और मिश्री दस तोले। इन सबों को एक में मिला कूट पीस कर दोनों वक्त दस दिन तक देते रहते से रोगी आरोग्य होता है।

(३) काली मिर्च और सौंफ एक एक छटांक और सोंठ आधी छटांक इन सबो को सवा छटॉक मिश्री के साथ दस दिन तक देने से अति उपकार होता है।

सीना बन्द

अजीर्ण के कारण यह रोग पैदा होता है। घोड़े के कन्धे पर सूजन का होना इस रोग की प्रधान पहिचान है।

चिकित्सा—(१) आक की जड़ की छाल और गूगुल दो दो भर लेकर पाव भर गुड़ में मिला सीनेबन्द वाले घोड़े को देने से उपकार होता है।

(२) हींग, भिलावा, काली मिर्च, पीपल बड़ी, कूट, जीरा,

सोहागा, गूगुल और हल्दी इन सबो को कूट छान कर एक एक छटांक सात दिन तक रोगी को देवे तो रोग का नाश होता है।

नोट—सीनेबन्द वाले रोगी को ठण्डा पानी भूल कर भी नहीं देना चाहिये।

वजर हड्डी

जंघा और घुटने के गांठों मे यह रोग पाया जाता है। दर्द क होना ही इसकी पहिचान है। घोड़े को जब यह रोग धर दबात है तो वे सदा पैर उठाते रहते हैं। घुटने को मोड़ने तथा बटोरने क क्रिया करना ही रोग होने की सम्भावना समझनी चाहिये।

चिकित्सा—सज्जो, काली मिर्च, पीपल, सोंठ, हींग, कसीस साँभर नमक, कड़वी तुम्बी और सेंधा नमक सब को सम भा ले कूट छान कर आक के दूध मे सान आग पर गरम कर ए फिटकिरी के टुकड़े पर लगा गांठो पर बांधने से दर्द जात रहता है।

नोट—कच्चे बालू या पत्थर को गरम कर धीरे २ सेंक कर से अथवा जमीरी नीबू को दो फांक कर गरम कर सेंकने अति लाभ होगा।

जानुआ

कभी २ घुटने पर की हड्डी उभर कर ऊँची हो जाया करत है। इसका मुंह प्रायः बन्द रहा करता है। उस हड्डी का ना

सुम रोग

घोड़ो के लिये सुम की बीमारी बहुत बड़ी बीमारी समझनी चाहिये क्योंकि इन लोगो का सारा काम सुम पर ही निर्भर है।

कड़ी जगह पर दौड़ने से सुम (खुर) मे खून जम जाया करता है। जब खून जम जाता है तो उसमें एक प्रकार का दर्द होने लगता है जिससे घोड़े पांव उठाया करते हैं। दर्द मे प्रबलता होने से घोड़े कांप उठते है तथा चलने मे कष्ट होता है।

सुम रोग के अनेक भेद है जैसे—(क) रस-उतरना (ख) सुम का फट जाना (ग) सुम का घिस जाना इत्यादि।

क—रस उतरना

प्रायः घोड़े का पैर फूल जाया करता है और पैर से एक श्राव जारी हो जाता है जिसे रस उतरना कहते है। यह पैर के ऊपर से और खुर की पुतली से घाव होते नज़र आता है। यह रोग साधारण रोग नही होता है। इससे घोड़े बिलकुल बेकार हो जाते है।

नीम के गरम पानी से दोनों वक्त सुम को धोना चाहिये। सड़ी हुई पुतली को काट कर फेंक देना ठीक होता है। कटे हुये स्थान पर नीचे लिखे मलहम को लगाने से अति उपकार होता है।

मलहम—तूतिया पैसा भर, कपूर अधेला भर, मोम और चर्बी दोनों को सम भाग ले दोनो दवाओं को रेंडी के तेल के साथ मिला घाव पर लगावे।

चिकित्सा—(१) तारपीन का तेल पाव भर, गन्धक चूर्ण डेढ़ पाव, शोरा आध पाव, शहद आध पाव, थोड़े से सत्तू के साथ एक एक छटांक की गोली बनाकर दोनों वक्त रोगी को खिलावे।

(२) सुम में घी मल कर लीद का लेप कर कपड़े से बांध देना चाहिये और फिर सेंकते रहने से सुम का दर्द नाश होता है।

ख—सुमकी फटनी

पत्थर और बालू पर चलने से ही खुर फट जाया करता है। खुर फटने पर नीचे लिखा मलहम लगाने से अति उपकार होता है।

चिकित्सा—मोम आध पाव, धूप एक छटांक, तारपीन का तैल डेढ़ पैसा भर। इन सब को एक में मिलाकर सुम में भर देना चाहिये। फिर, तीसी का तैल दो भाग, और पत्थर के कोयले का तैल एक भाग मिलाकर सुम पर बराबर रखते रहना चाहिये।

ग—सुमका घिस जाना

घोड़े के नाल गिर जाने पर घोड़ेवाले ध्यान नहीं देते और घोड़े को काम मे लगाये रहते हैं जिससे सुम घिस जाया करता है। इससे घोड़े लंगड़े हो जाते हैं तथा काम करने में कायर बन बैठते हैं।

जब घोड़े की नाल गिर जाय तो भूलकर भी थान से न खोलना चाहिये। अगर किसी कारण से दर्द हो और घोड़े चलने फिरने से हिचके तो निम्नलिखित मलहम लगाना उपकारक होगा।

मलहम—चर्बी दो सेर, मोम आध पाव और पत्थर के कोयले का तैल पाव भर। इन तीनो चीजो को धीमी २ आग पर पिघला मलहम वनाले। अगर घाव मे भरना हो तो थोड़ा-सा पीच मिलाकर लगाने से अति लाभ होता है।

ज्वर Fever

जब शरीर गरम हो जाय और सुस्ती मालूम हो, खाना-पीना त्याग दे और मूत्र का रंग बदल जाय तो समझना चाहिये कि ज्वर पकड़ रखा है।

इन ज्वरो के अनेक भेद है। जिनमें से कुछ आवश्यक ज्वरों का उल्लेख निदान के साथ किया जाता है।

सन्निपातक ज्वर

यह रोग घोड़े को अकस्मात धर दबाता है। सब ज्वरों मे यह घातक ज्वर है। रोग होते ही अगर चिकित्सा न की जाय तो घोड़े तुरन्त मृत्यु के गाल मे प्रवेश कर जाते है।

लक्षण—नाड़ी की गति तेज और नाक मे सुर्खी दिखलाई पड़ने लगती है। सामने का पैर तन जाता है, स्वास का वेग बढ जाता है और सारा शरीर गरम हो उठना है।

चिकित्सा—(१) सुरमा धेला भर और डिजिटेलिस, शोरा और काला नमक पैसे २ भर। इन सब को शहद में मिला १ गोली बना आठ २ घण्टे पर एक २ गोली देने से रोग अच्छा होता है।

(२) शोरा दो पैसा भर, टार्य टैमेटिक धेला भर, इन दोनों को मैदा और शोरा में मिला कर गोली बनावे और दिन में दो बार देवे। रोग अवश्य आराम होता है।

(३) ❋ कार्बनेक आव एमोनिया डेढ़ ड्राम, अफीम एक ड्राम तथा सौंफ आधी औंस इन सब को शीरा मे गोली बना दिन में दो बार देना चाहिये, अति लाभ होता है।

ख—कफज ज्वर

कफज ज्वर का प्रकोप होते ही घोढ़े का सर्वांग गरम होकर मुंह से कफ निकलने लगता है और शरीर मे कम्पन पैदा हो जाती है।

चिकित्सा—(१) जंगली प्याज छदाम भर, सिंघाड़ा पैसा भर और अफीम छदाम भर। सब को एक रस कर गोली बनाले और रात में घोड़े को एक एक गोली जब तक कम्पन छुट न जाय देते रहने से रोग का नाश होता है।

❋ बीमारी बढ़ जाने और फेफड़े मे खराबी आने पर यह दवा देनी चाहिये।

ज्वर होने पर रोगी का पेट जुलाब द्वारा साफ कर दवा देना उचित होगा।

(२) गन्धक दो पैसा भर, हींग आधी छटांक, मुलहटी का चूर्ण आधी छटांक और तारपीन का तेल आधी छटांक। इन सब को एक मे मिला ४ बराबर गोलियां बनाले। प्रति दिन एक गोली रोगी को देने से चार दिन मे रोग आराम होता है।

ख—कमला ज्वर

इस रोग मे घोड़े का मूत्र पीला और गाढ़ा हो जाता है। नेत्र भी पीले रंग के समान नजर आने लगते है। दाना खाने में अरुचि पैदा हो जाती है और दस्त साफ नहीं होता। कभी कभी तो एक दम दस्त वन्द हो जाता है और घोड़े छटपटाने लगते है।

चिकित्सा—(१) सुरमा दोकरा भर, मुसब्बर धेला भर और कैलोम्यल एक ड्राम सब को शीरा मे मिला एक गोली बनाले। ४-५ घण्टे पर एक गोली जब तक दस्त न हो देते रहने से लाभ होता है।

आँव और दस्त

आँव और दस्त का होना भी घोड़ो के लिये एक भयानक रोग माना जाता है। जिस घोड़े को आँव या दस्त कोई धर लेता है उसे कमजोरी पकड़ लेती है जिससे घोड़े सदा असमर्थ देख पडने लगते हैं तथा निकम्मे बन जाते है।

चिकित्सा—(१) आँव अथवा खून मिला हुआ दस्त होने से मेहदी की पत्ती आधी छटांक, वेल गीरी सूखी एक छटाँक,

कतीरा आधी छटांक, सफेद जीरा आधी छटांक इनको कूट छान कर दोनों वक्त आधा २ देने से रोग जाता रहता है।

(२) अफीम दोकरा भर, छुही मिट्टी का चूर्ण आधी छटांक, बबूल का गोंद आधी छटांक और पोदीने की पत्ती आधी छटांक। इन सबको एक में मिला दिन में एक या दो बार देना लाभ पहुँचाता है।

अतिसार

जिस घोड़े का पेट चलता हो उसे भाँग की लुटकी देना गुण पहुँचाता है।

जुलाब

साल में एक बार घोड़े को जुलाब अवश्य दे देनी चाहिये। क्योंकि पेट साफ करा देने पर कोई बीमारी होने की सम्भावना नहीं रहती।

जब घोड़े को जुलाब देना हो तो एक दिन पहले घोड़े का दाना रोक कर 'चोकर' को पानी मे सान कर खिला देना चाहिये। दूसरे दिन भी कुछ न देकर संध्याकाल में भी चोकर ही देना चाहिये। फिर तीसरे दिन घोड़े को थोड़ा २ दाना और ताजी घास देना लाभकारी होता है। बाद तीन दिन तक घोड़े से किसी किस्म का परिश्रम नहीं कराना चाहिये।

चिकित्सा—(१) काला नमक एक पाव, सनाय की पत्ती

आधा पाव और सोंठ का चूर्ण आधी छटांक। इन सब को मांड़ के साथ खिलाना चाहिये।

(२) मोसब्बर तीन तोले, सौंफ दो माशे, विलायती साबुन छः माशे, इन्हे गुलकन्द में गोली बना कर देनी चाहिये। पेशाब मे रुकावट हो तो कलमी शोरा और बबूल का गोद छः २ माशे मिला कर खिलाने से अति लाभ होगा।

(३) रेडी का तेल एक पाव और नमक एक पाव इनको आध सेर अलसी के मांड़ मे मिला कर देने से भी दस्त खूब होने लगता है।

यदि उपरोक्त जुलाब से दस्त बहुत होने लगे तो (१) सौंफ (२) सफेद जीरा और (३) काली मिर्च चार २ तोले कच्ची पक्की कर गोलियां बना थोड़ी २ देर मे २-३ गोलियों को खिलाने से दस्त बन्द हो जायगा। यदि इससे दस्त न बन्द होता जान पडे तो एक तोला भूनी हींग, चार तोला घी और आठ तोला साठी का चावल पीस कर गोली बना रोगी को देने से दस्त अवश्य बन्द होगा।

चन्द रोगों की साधारण चिकित्सा

हड्डा—नीला थोथा, उरद का चूर्ण, अंडी के बीजो की मींगी और सेंधा नमक सब को चार २ तोला ले कूट पीस कर उरद के आटे मे सान कर टिकिया बनावे। फिर उसी टिकियो को तवा पर सेक २ कर हड्डे पर रख गरमागरम बांध दे। ध्यान रहे कि तीन दिन तक पट्टी न खोलना चाहिये। चौथे दिन अगर पट्टी

खोलने पर सूजन रहे तो वैसा ही करना चाहिये। जब घाव फटने लगे तो घी को धोकर लेप कर देना चाहिये।

सेंक—कूट चार तोले, अफीम आठ तोले, इन दोनों को धतूर के अर्क मे मिला कर लेप करे और कण्डों से सेंके। ऐसा करने से २१ दिन के बाद हड्डो का मवाद सुम के रास्ते बाहर निकल जाता है और हड्डे में राहत होती है।

पुश्तक और चकावल—जहां पर यह रोग हो प्रथम वहां का बाल बिलकुल साफ कर देना चाहिये। सूजन के स्थान पर पुछवा कर खून बाहर निकलवा देना ही अच्छा होता है। जब खून बाहर निकल जाय तो आक की ताजी जड़ ले छील कर मनुष्य के मूत्र में पीस कर आग पर पकावे। जब पक जाय तो लेप कर पट्टी बांधने से रोग का नाश अवश्य होता है।

यदि सूजन में न्यूनता न हो तो भुनी हुई फिटकिरी और मक्खन दोनों को एक मे मिलाकर लेप करने से सूजन अवश्य जाती रहती है।

पुस्तक और चकावल वाले रोगी को एक शीशे का वजनदार कड़ा पैर में डाल देना चाहिये।

बैजा और काना—इस रोग मे चूना को मक्खन के साथ मिलाकर मालिश करे और कण्डे की आग से सेंके। रोग आरोग्य होता है। अरण्ड की पत्ती की बांधना भी अति लाभ पहुँचाता है।

गिल्टी, गांठ और बतौरी—(१) नौसादर पैसा भर, निउराईटिक एसिड दो ड्राम और जल पाव भर मिलाकर लगावै।

(२) नौसादर आधी छटांक, सिरका आध पाव और स्पिरिट कपूर आधो छटांक मिलाकर कपड़े मे तरकर बांधने से रोग अवश्य आराम होता है।

फीलपाव—इसमे पांव हाथी के पांव की तरह फूल जाता है और चकत्तियां बांध जगह २ घाव हो जाते है। पीले रंग के पानी के सदृश्य स्राव होता है "इस रोग मे दाग देना अति लाभ पहुँचता है।"

खुर्दगाह—यह एँड़ी के निकट की बीमारी है। इसमे सूजन तथा दर्द होते पाया जाता है।

एँड़ी पर तैल लगाकर सेंकै और अरण्ड के पत्ते गरम कर पट्टी बांधने से आराम होता है।

चोट—पीच दो सेर, तारपीन का तैल तीन छटांक और तीसी का तेल आध पाव। इन तीनो को आग पर पिघला कर लेप करने से चोट जाता रहता है।

'सेक करना तथा गरम पानी से बार बार धोने से चोट का दर्द जाता रहता है।'

जहरबाद—मिर्च, कसौदी, अदरक और पान सम भाग लेकर एक मे मिला दिन मे दो बार रोगी को देवे तो रोग का नाश अवश्य होगा।

मोच—कभी २ मोच आने से घोड़े का पांव फूल जाया करता है। नौसादर आधी छटांक और शोरा एक छटांक आध सेर पानी मे मिला कर एक कपड़ा तर करके मोच पर रख छोड़े। यदि मोच पर दर्द और सूजन अति हो तो जोंक लगा देना ठीक

काला जीरा तथा नीम के पत्ते का सेवन कराना अति लाभदायक होता है।

हिचकी—मोर पंखी की राख शहद के साथ हिचका वाले के लिए महा औषिध है। सेवन मात्र ही से हिचकी काफूर हो जाती है।

घोड़े का लंग खाना—मेख, कंकड़ और कांटा चुभ जाने से प्रायः घोड़े लंग खाने लगते हैं। ईंट के टूकड़े को अग्नि मे खूब लाल कर गरम करे और ऊपर से कपड़े की एक मोटी गद्दी बना रख दे। जिस पैर से घोड़े लग खाते हो उस पैर को उस गद्दी पर रख थोड़ा २ धीरे २ पानी देता रहे जिससे विशेष गरमी असर न कर सके।

इस प्रकार बफारा देने से लंग खाना छुट जाता है। इस बफारे को संगवाद भी कहते है।

पेशाब में गाढ़ापन—जब घोड़े का पेशाब गाढ़ा नजर आने लगे फौरन इलाज़ करना चाहिये नही तो विलम्ब होने से भयानक रूप पकड़ लेता है।

त्रिफला, सफेद जीरा, और कतीरा तीनो को सम भाग लेकर एक मे मिला आध २ पाव सुबह शाम घोड़े को दाना देने के पहले सुबह मे और पीछे शाम को देने से रोग आरोग्य होता है। यदि पेशाब सुर्ख हो तो अदरक और काली मिर्च दाने के बाद अवश्य दे देना चाहिये।

ताव या गरम खा जाने पर—जब घोड़े ताव खा जाते हैं तो बदन गरम हो जाता है, रगे काँपने लगती है, रोएँ मलीन हो

कर उस पर तेल और सेंदुर जब तक घाव अच्छा न हो, लगावे।

(२) अगर घोड़ा आग या बारूद से जल जाय तो (१) जले हुये स्थान को प्याज के पानी से बार बार धोने से अच्छा होता है।

पत्थर का चूना आधी छटांक और पानी ढाई पाव इन दोनों को खूब मिला एक रस कर देवे फिर इसे स्थिर होने पर जब सारा चूना नीचे बैठ जाय और ऊपर निर्मल जल नजर आने लगे तो उस पानी को धीरे से निकाल एक बोतल में रख छोड़े (ध्यान रहे पानी बोतल में रखते समय चूना न मिले)। एक हिस्सा अलसी का तेल और तीन हिस्सा इसी चूने का पानी एक में ऐसा मिलावे जिससे खूब गाढ़ा हो जाय। इसे जले हुये स्थान पर लगाने से दर्द, जलन तथा घाव सभी आराम होते है। घाव सदा दवा से तर रखना चाहिये।

(३) घाव से रुधिर बहना बन्द करना हो तो मकड़े के जाले से घाव भर दे और सुहागे को महीन पीस कर छान ले। इसी चूर्ण को घाव पर छिड़कने से घाव जल्द आराम होता है।

(४) घाव मे कीड़े पड़ जॉय तो कुटकी पीस कर भरने से कीड़े नष्ट हो जाते है।

(५) घाव पर बाल न जमे तो साबुन और नील एक मे मिला लेप करे।

(६) चोटी और दुम के बाल अगर न बढ़ते हों तो आंवला का फल और मेथी इन दोनो को कूट कर कपड़छान करले और

थोड़े पानी में खूब औटकर उसी औटे हुए पानी से दोनों वक्त उस स्थान को धोवे। बाल अवश्य बढ़ेगा।

अख्ता करने की विधि

घोड़े को ऐसे स्थान में पटक कर अख्ता करना चाहिये जिस स्थान में कंकर, पत्थर इत्यादि शरीर में चुभनेवाला पदार्थ न हो। जहाँ की मिट्टी मुलायम तथा समतल हो, ऐसे स्थान में घोड़े को पटक, चारों पांव खूब बाँध देना चाहिये। ५, ६ आदमी खूब मजबूती के साथ घोड़े को दबा रक्खे जिससे घोड़े ज़रा भी हिल डुल न सकें। फिर अख्ता करनेवाला अपने हाथ में एक तेज चाकू ले बायें हाथ से अण्डकोष ऐसा पकड़े कि चमड़े को चीर अण्डकोष को निकाल ले। हाँ, अण्डकोष निकालते समय यह पूर्ण ध्यान रहे कि अण्डकोष के साथ साथ नसें भी निकल जांय। यह क्रिया धीरे धीरे करनी चाहिये। इन नसों को जिस लोहे से दागना हो उसे पहिले ही से गरम कर तैयार कर लेना चाहिये फिर नस को निकालते ही उस गरमागरम लोहे से नस को दाग देना चाहिये। ध्यान रहे खून न बहे। इसके बाद चमड़े को सिला एक कपड़े को पानी में भिगो पट्टी बाँध देनी चाहिये। और पट्टी बँध जाने पर घोड़े को इधर उधर टहलवा दे। ४, ५ दिन तक इस पट्टी को पानी से तर रखना ठीक है। जिस दिन घोड़े को अख्ता किया जाय उस दिन पानी पीने के लिये न देना चाहिये। फिर थोड़ा २ पानी प्रति दिन देने से गुणकारी होता है।

कभी कभी कार्बोलिक तेल और मलहम देता रहे जिससे घाव सूख जाय। ४, ५ महीने तक घोड़े को परिश्रम से वंचित रखना चाहिये। अगर घाव मे दर्द या सूजन हो तो तेल की मालिश से उपकार होता है।

शराब को थोड़ा दे देने से नशा पाकर घोड़े ठीक रहते है और कष्ट अनुभव नहीं करते।

गज-चिकित्सा

१—जाति

गज या हाथी की अनेक जातियाँ हैं। जिनमें अठारह ही प्रधान मानी गयी हैं।

प्रकृति—जल मे विहार करना, कीचड़ में लोटना, धूल को शरीर पर छिड़कना तथा धूल मे लोट पोट करना, वृक्षों की डालियो को तोड़ना, छाले, जड़ और पत्तियो को खाना, पर्वतों तथा बनों में विचरण इत्यादि हाथियों के प्रधान स्वभाव होते है।

२—गजशाला

बहुत रमणीक स्थान में नगर के बाहर गजशाला बनवाना चाहिये। ऊंची दिवाल से गजशाला घेर देना ठीक होता है। नीचे की ज़मीन ऐसी होनी चाहिये जिसमे मल-मूत्र न ठहर सके, और न गन्दगी ही फैल सके। हाथी को सदा धूप, गर्मी, सर्दी तथा वर्षा से बचने का पूरा प्रबन्ध गजशाला में करना अति ही आवश्यक है। गजशाला के मकान मे लम्बी २ खिड़कियाँ लगा देनी चाहिये जिससे हवा और धूप आसानी से अन्दर प्रवेश कर सके तथा दरवाजे को बन्द और खोलने की सुगम सुविधा रखनी चाहिये।

३—भोजन

खीर में शक्कर मिलाकर हाथी को देने से बल बढ़ता है। यो तो घी का लड्डू, पूआ, पूरी और मांस की वरी इत्यादि बल बढ़ाने के लिये दिया जाता है। परन्तु समय पर तथा ऋतुओं के अनुकूल खाद्य पदार्थ देने से ही बल वृद्धि का उपकार हो सकता है। भोजन और विहार का प्रबन्ध ऋतुओ के अनुकूल होने से किसी प्रकार की हानि की आशा नही की जा सकती।

४—ऋतुओं के अनुकूल आहार और विहार

बसन्त ऋतु—इस ऋतु मे गजशाला के आस-पास ऐसे फूलो के पौदे लगाना चाहिए जिससे वहाँ स्वच्छ सुगन्धित हवा का सञ्चार होता रहे। जल स्वच्छ और ताज़ा सदा देना चाहिये। गन्ना का रस पिलाने के लिए यह ऋतु ठीक होता है। दारू मण्ड और मधु देना बहुत उपकार करता है। इस ऋतु मे कफ का प्रकोप अति अधिक होता है इसलिये कफ शान्ति के निमित्त तीक्ष्ण और कटु औषधियो का प्रयोग श्रेयष्कर होता है।

ग्रीष्म ऋतु—गर्मी मे गजशाला ऐसे स्थान मे होना चाहिये जहाँ गर्मी कुछ भी मालूम न हो। गर्म हवा हाथी को लगने से अनेक हानियाँ पैदा हो जाती है। ठण्डा पानी सदा देना चाहिये। हरे पत्ते तथा कोमल घास देना ही हितकर होता है। यह ऋतु पित्त प्रकृति का अधिकारी है इस लिये ठण्डी वस्तुओं को ही खाने को देना चाहिये। घी की मालिश तथा घी का पिलाना इस ऋतु मे गुण दिखाता है।

वर्षा ऋतु—इस ऋतु में गजशाला में वर्षा का पानी न गिर सके ऐसा प्रबन्ध पहिले ही से कर देना चाहिये। हवा और पानी का प्रबन्ध ठीक से होना चाहिये जिससे स्वच्छ हवा और पानी मिला करे। कूप का पानी ही पिलाना अति लाभ पहुँचाता है। बात के प्रकोप के लिये यह ऋतु प्रधान है। मांस, लहसुन, नमक और हल्दी देने से बादी शान्ति, तथा स्थूलता और मद की वृद्धि होती है।

शरद ऋतु—झरना और तालाब के निकट गजशाला रखना अति गुण दिखाता है। बड़ इत्यादि की छाल और पात खाने को दे। घी की मालिश और घी का पिलाना इस ऋतु में भी गुण करता है। यह पित्त के प्रकोप को नाश करता है।

हेमन्त ऋतु—इस ऋतु मे नदी का पानी हाथी को देने से लाभ होता है। इस ऋतु मे तेल की मालिश करना और तेल पिलाना चाहिये। गेहूँ की चूनी घी में मिला कर इस ऋतु में अवश्य देनी चाहिये। मछली और बन जीवों के मांस का पिंड खिलाने से हाथी का बल प्रबल होता है।

शिशिर ऋतु—पाला और सर्दी से हाथी को खूब बचाना चाहिये। गजशाला मे आग का प्रबन्ध अवश्य रखना चाहिये जिससे गजशाला सदा गर्म बना रहे। बासी पानी हाथी को भूल कर भी न देना चाहिये। सदा गरम वस्तु को खिलाने से अति उपकार होता है। घी, तेल, लहसुन, शराब, पियाज और हल्दी आदि का ही सेवन कराना चाहिये। झूल से हाथी को ढके रखना चाहिये जिससे सर्दी असर न करे। जब धूप निकल आये तो

हाथी को हाथीसार से निकाल टहला देना चाहिये जिससे धूप की गर्मी शरीर मे पूर्णतः लग जाय। सूर्यास्त के प्रथम ही गजशाला मे हाथी को बॉध देना चाहिये।

५—रोग वर्णन

रोग होने का कारण—जल-वायु, आहार-विहार तथा निवास स्थान की प्रतिकूलता से ही रोग का कारण समझना चाहिये। एवं स्वतन्त्रता पूर्वक वनो मे विचरण छुट जाने से खेदित होना, आहार-विहार मे व्यतिक्रमण का होना, नूतन वन्धन पड़ने के कारण वन के भोगों का छुट जाना, मार्ग चलने मे परिश्रम, मृतिका भक्षण तथा ताड़ना इत्यादि कारणों से ही रोग उत्पन्न हो जाया करते है।

रोग परीक्षा—मल, मूत्र, कंठ, जिह्वा, मुख और तालू द्वारा ही रोगी के रोग की परीक्षा की जाती है।

दवा की मात्रा—मनुष्य के मात्रा का चौगुना हाथी के दवा की मात्रा होती है। यह मात्रा रोगी के वलावल तथा न्यूनाधिक से सम्वन्ध रखता है इसे पूर्णत. विचार कर मात्रा ठीक कर रोगी को देने से किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नही रहती।

पथ्यापथ्य—साठी का चावल और धान हाथी के लिये उत्तम पथ्य माना गया है। गेहूँ मध्यम पथ्य की श्रेणी मे है। शेष अन्न को कुपथ्य कहा गया है।

क—ज्वर

लक्षण—शरीर में कम्पन, चिंघाड़ मारना, सुस्त हो जाना, अंग का शिथिल पड़ जाना तथा मुख से लार टपकना हाथी को ज्वर ग्रस्त होने का प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा—तुलसी, देवदारु, मुलहठी, लहसन, सरसों, राई, वाय विडंग, भारंगी, मूली, पीपर, सोना पाढा, पीपरामूल, बेलगिरी, रानी कंजा, सहदेई, नागर मोथा, कूट, सोंठ और खम्भारी, इन सब औषधियों को सम भाग ले क्वाथ बना हाथी को पिलाने से बात, कफ आदि का ज्वर अवश्य नाश होता है।

(२) पाटल, कूट, अतीस, गिलोय, धनिया, परवल की जड़, पित्त पापड़ा, कुण्डी और धाय के फूल। इन सब को चूर्ण कर अथवा क्वाथ बना हाथी को देने से कफ पित्त आदि का ज्वर दूर होता है।

ख—कृमि

कारण—काली मिट्टी को खाने से तथा गन्दा पानी पीने से हाथी के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं। जिससे हाथी दुबले-पतले नजर आते हैं।

लक्षण—कृमि पड़ जाने से हाथी को चैन नहीं मिलता। निद्रा नही आती तथा वे भोजन को त्याग देते हैं। विशेष रूप से पानी का पीना और सदा चिंघाड़ मारना, ये प्रधान कृमि रोग के लक्षण हैं। शरीर का क्षीण होना, झिझकना इत्यादि से भी कृमि

रोग की पहिचान होती है। कभी २ तो पाखाने से कीड़े गिरते दीख पड़ने लगते हैं।

चिकित्सा—(१) सोंठ, वेलगिरी का गूदा, चमेली के पत्ते, पीपल, वायविडङ्ग, सहिजन और पांचो नमक सम भाग ले गोली बना हाथी को खिला देने से पेट के कीड़े मर जाते है।

(२) गाय के मूत्र मे मद्य मिलाकर नित्यप्रति हाथी को पिलावे।

(३) गाय के मूत्र के साथ वायविडङ्ग मिलाकर पिलाने से कीड़े झड़ जाते हैं।

(४) लहसुन, बच, चीता और सात कौड़ियो की राख एक मे मिला कर खिलाने से रोग नष्ट होता है।

(४) राई, नमक और गुड़ पाव २ भर लेकर सुबह हाथी को दे और गरम पानी पिला थोड़ी दूर घुमाने से ४,५ दिन मे कृमि रोग का अन्त हो जाता है।

ग—उदर रोग

पेट में दर्द—जब हाथी के पेटमे दर्द उत्पन्न होता है तो वह बराबर उठने बैठने और लेटने की क्रिया करने लगता है। जिधर दर्द मालूम पड़ता है उधर करवट ले सोता है। पैर पसारना और बटोरना भी रोग होने की पहिचान है।

चिकित्सा—(१) सोंठ, मिर्च और पीपल इनको बराबर ले खूब बारीक पीस छान कर हाथी के नेत्रो मे अंजन करे।

(२) सोंचल नमक, हींग और सोंठ इन तीनों को गुड़ के साथ रोगी को देने से उपकार होता है।

(३) गधा का लीद आध सेर, जंगली हर्रे आध पाव, राई आध पाव, मुसब्बर एक छटांक तथा खारी नमक एक सेर, इन सबको कूट कर गोली बनावे। प्रति दिन प्रातःकाल एक गोली खिला ६ मील हाथी को ले जावे और खूब पानी पिला तेजी के साथ लौट आवे। इस प्रकार ३,४ दिन प्रति दिन करने से सर्व प्रकार के उदर रोग का नाश होता है तथा दर्द जाता रहता है।

(४) हल्दी, दारु हल्दी, इन्द्र जौ, बायबिडङ्ग और हींग इनकी गोली बना खिलाने से हर प्रकार का शूल अथवा दद का नाश होता है।

पेचिश—पेट के दर्द के जितने लक्षण है सभी पेंचिश रोग मे भी पाये जाते हैं। परन्तु विशेष लक्षण यह है। पेचिश वाले रोगी अपने सूंड़ से कोख को दबाता रहता है तथा मैला-गन्दा मल निकलने लगता है।

चिकित्सा—(१) गुड़, सोचर नमक और साबून तीनो को सम भाग ले दोनो समय देना चाहिये।

(२) सौंफ, सोंठ और हरड़ इन सबको एक २ पाव ले कूट छान कर सिरका मे मिला कर रोगी को दो दो तोला देवे। ३,३ घंटे पर दवा दे। गरम पानी पिलाना चाहिये। उपकार होता है।

(३) सीपी को जला राख बना ले, जवाखार, सुहागा भूना, मुसब्बर, बच, गूगुल और हींग पैसा २ भर लेकर रोगी हाथी को खिलाने से आम विकार का नाश अवश्य होता है।

गुल्म—पेट का फूलना, पेट मे वायुगोला का होना, वायु का सञ्चार होना, खाने मे अरुचि, मल साफ नहीं त्याग करना, पेशाव मे मैलापन तथा पेशाव थोड़ा २ कर आना गुल्म की पहिचान है।

चिकित्सा—(१) पीपल, सोठ, निसोथ, काली मिर्च, ववूल और अकवन की छाल, गज पीपल तथा काली गाय का दूध, घी अथवा तेल मे पका कर पिलाने से गुल्म या वायुगोला दोनो का नाश होता है।

(२) त्रिफला, पांचों नोन, मिर्च, अदरक, जवाइन, सोंठ, जौगी इन सव को सम भाग ले शराव मे पिलाने से रोगी आरोग्य होता है।

नोट—ध्यान रहे कि इस रोग वाले हाथी को सर्व प्रथम दस्त अवश्य करा लेना चाहिये। फिर दवा देने से शीघ्र गुण होता है।

कब्ज़ियत—ववूल, सेधा नमक, नीम के पत्ते, कञ्जा, पीपल, गज पीपल, त्रिफला, परवल की जड़, अदरक, अकउड़, सेहुड़ का दूध, पांचो नमक, जीरा, जमाल गोटा, व्राह्मी और। निसोथ। इन सव का चूर्ण वना कर गरम पानी के साथ हाथी को पिलावे। इस दवा के प्रयोग से दस्त उतर जाता है। यह पेट का विकार साफ कर कब्जियत को धर दवाता है।

अफरा—यह रोग उस हालत मे पहिचाना जा सकता है जव कि पेट फूल जाय और मल मूत्र त्यागने का कष्ट अनुभव हो तथा मल-मूत्र रुक जाय जिससे रोगी को चैन न मिले। गुल्म रोग के

समान ही यह रोग समझना चाहिये। परन्तु इस रोग में वायु-गोला नहीं होता, इस रोग को भी एक भयानक रोग समझना चाहिये। पेट साफ कर लेना अफरा रोग में भी अति गुण दिखाता है।

चिकित्सा—रोगी से खूब परिश्रम कराना चाहिये, इधर उधर दौड़ाना, बगल से लेटा कर पेट पर कड़ुआ तेल की मालिश करना, वार २ करवट बदल बदल कर मालिश करते रहना बहुत गुण दिखाता है। इस प्रकार क्रिया करने से दूषित वायु निकल जाती है और धीरे २ अफरा रोग जाता रहता है।

(१) अमलताश का गूदा, सेहुड़ का पत्ता और जड़, नीम का पत्ता, बड़ी हरड़, कंजा, अदरक, बनकटा और पांचो नमक इन्हें कूट कर गोबर मे सान कर हाथी को खिलाने से कोष्टगत वायु शान्ति होती है।

(२) गोखरू, मुलीम और सुहागा प्रत्येक एक-एक पाव, नौसादर आध पाव, गुड़ एक सेर। सब को पीस कर गुड़ मे गोली बना रात्रि मे हाथी को खिलाने से पेट का फूलना दूर होता है। दवा की मात्रा दो तोला से अधिक नहीं होना चाहिये।

मरोड़ या ऐंठन—यह रोग दो प्रकार से होता है एक आँव के पड़ने से तथा दूसरे वायु की गांठ से। जब हाथी वार २ भूमि पर गिरे तो समझना चाहिये कि पेट मे मरोड़ अवश्य है।

चिकित्सा—(१) तेलिया सुहागा और नई सनाय की पत्ती दोनो तीन २ पैसा भर, सौंफ आध सेर, सोंठ आध सेर, गाय का घी ६ पैसा भर, घी को अग्नि पर चढ़ा कर सब औष-

को भून ले। फिर हाथी को प्रति दिन खिलावे तो आंव बाहर निकल जायगा और रोग आराम होगा।

(२) अजमोदा, सोंठ और राई आध सेर, कचिया नमक २ पैसा भर, सेंधा नमक २ पैसा भर, खुरासानी अजमोदा, निसोथ और तेलिया सुहागा तीन २ पैसा भर। सब को कूट छान कर सिरका मे मिला एक पाव प्रति दिन हाथी को खिलाने से बायु का मरोड़ जाता रहेगा।

उदर रोगों के कुछ आजमूदे नुस्खे।

(१) असगन्ध, पीपल, हल्दी, वायबिडङ्ग, प्रत्येक आठ २ पल और पाँचो नोन आठ पल। इन सबको कूट छान कर दस दस पल हाथी को देने से पेट की कब्जियत, शूल और मूत्र-कृच्छ का नाश होता है।

(२) त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च और पीपल) बच, सहजना, कूढ़ा, बायबिडङ्ग, पांचो नमक, अतीस, भिलाय, हल्दी, सेहुँड़, हींग, जीरा, काला जीरा, अजवाइन, लहसुन, कुटकी, पीपल अजमोदा, जटामासी, अकउड़ और गोबर इन सबको कूट छान कर हाथी को खिलाने से आमातिसार, बात गुल्म, कफशूल और मन्दाग्नि दूर होती है।

३—कोंच, गुर्च, वन उर्दी, वन मूंग, गगन धूरि, काकोली, सेमर, नीम, कंजा, जैती, बिलाई कन्द और असगन्ध। इनको समान भाग ले चूर्ण बना हाथी को देवे। इससे अग्नि की वृद्धि और सर्व धातु क्षीणता आदि रोग दूर होते है।

(४) सज्जी, गिलोय, लटजीरा, कंजा, चिरायता, जैती और रूसा। इनका समान भाग ले महीन बुकनी बना हाथी को देवे तो बल बढ़ता है, मन्दाग्नि का नाश होता है तथा वायु विकार दूर होता है।

(५) सेंहुड़ की जड़, सहिजन की जड़, अदरक और सोरा, इन सब को कूट गोबर मे सान कर हाथी को खिलावे तो कृमि का नाश होता है और कोष्ठ शुद्ध हो जाता है।

घ—नेत्र संबन्धी रोग तथा चिकित्सा

मांड़ा अथवा मांड़ी—यह रोग मकड़ी के जाले के समान पुतली पर छाप लेता है। यह सफेद तथा पतला होता है जिसे मॉड़ी कहते हैं।

चिकित्सा—तिल के तेल मे नौसादर घिस कर हाथी के ऑख में ऑजन करने से मॉड़ी रोग का नाश होता है।

फूली अथवा ठेंठर—यह नेत्र से अलग सफेद और मोटी होकर लटकती हुई जान पड़ती है।

चिकित्सा—सफेद चिरमिटी, सिरस के बीज की मींगी, माजू फल, निर्मली, रत्नज्योति, लावा, फिटकिरी, छोटी और बड़ी हर, ऑबा हल्दी, गूगुल, जायफल, अफीम और हाथी का नख। इन सबको सम भाग ले खूब बारीक कपड़छान कर शहद के साथ हाथी के ऑख में ऑजन करने से फूली नष्ट हो जाती है। मॉड़ा मे भी प्रयोग करने से अति लाभ पहुँचता है।

नाखूना—ऑख की पुतली के चारों ओर लाली सी छा

जाती है। उसके किनारे मोटा और डोरा सा जो वस्तु उभरा हुआ मालूम पड़ता है उसे नाखूना कहते है।

चिकित्सा—लोहा चूर्ण, माजूफल, छोटी हर्र और नीला थोथा। सबको सम भाग ले महीन पीस कर अंजन करने से रोग दूर होता है तथा नेत्र रोग रहित हो जाता है।

जाला—जो सफेद २ और पतली २ झाड़ी के समान सारे आँखों मे छा जाती है, उसी का नाम जाला है।

चिकित्सा—सेधा नोन, लावा, फिटकिरी, चूल्हे की लाल मिट्टी, ववूल की पत्ती, सीरस की पत्ती, नीम की छाल और अजवाइन। इन सबको पानी मे पीस नेत्र में लगाने से रोग आरोग्य होता है।

ढलका—हाथी के आँखो से पानी विशेष रूप से गिरने लगता है उसे ढलका कहते है।

चिकित्सा—रसौत, लौंग, फिटकिरी, लावा और अफीम। इन सबको सम भाग ले, इमली के पानी मे भिगो दे। जब खूब भिग जाय तो सब औषधियो को चिकने पत्थर पर रगड़ कर नेत्रो मे आंजे। इस दवा के अंजने से पानी का गिरना बन्द हो जाता है तथा रोग आरोग्य होता है।

पुतली—पुतली पर पानी सा जमा हुआ मालूम होता है जिसके कारण हाथी देख नही सकता।

चिकित्सा—सीरस के बीज ३ पैसा भर खूब महीन पीस कर एक कांसा के बर्तन मे तीन पाव आक के दूध मे सीरस के

ही लकड़ी से दो दिन तक खूब घोटे। इस प्रकार घोटने से वह कजली बन जायगा। वही कजली हाथी के आंख मे लगावे और ऊपर से पानी का छींटा देवे तथा घी भी मले तो पुतली नामक रोग का नाश अवश्य होगा।

नोट—कबूतर की बीट को शराब मे पीस कर हाथी के आंखो में लगाने से ज्योति बढ़ती है। यह दवा प्रत्येक नेत्र रोग के पश्चात् अवश्य लगानी चाहिये।

ङ—दाँत रोग

हाथी के दांत काटते समय असावधानी करने से कल्ला जो दांत के अन्दर होता है कट जाया करता है। जिससे प्रायः हाथी अन्धे हो जाया करते है। जब दांत कटाना हो तो प्रथम उस कल्ले को ऊपर चढ़ा देना चाहिये जिसमे दाँत काटते समय कल्ला मे किसी किस्म का चोट न पहुँचे।

कल्ला चढ़ाने का उपाय—सोंचल नमक, बबूलकी छाल, मिस्सी चार चार छटाॅक। इन सबको कूट पीस कर नकछिकनी, सीपी और सोंठ दो दो छटाॅक ले चूर्ण बना एक मे मिला गंधा-पिरोजा के साथ गाय के घी मे लेप बनावे और उसी लेप को हाथी के दांत में लेप कर ऊपर से गरम भात दे पट्टी बाँध दे। इसी प्रकार ४,५ दिन तक करने से कल्ला चढ़ जाता है।

कील कट जाने से खून का गिरना—यदि दाॅत काटते समय कील कट जाय और खून गिरने लगे तो खैर, मस्तगी, मिस्सी, सुर्मा और बबूल की छाल, इन सबको सम भाग ले

महीन पीस कर खून निकलने के स्थान पर बुरके अथवा छिरके तो खून अवश्य बन्द होगा।

दाँतों का फट जाना—बहुत से हाथियो का दांत फट जाया करता है। इससे हाथी का दाम कम लगता है तथा दांतो का मोल भी कम ही मिलता है।

चिकित्सा—(१) कांच, वंसलोचन और रूमी मस्तगी। इन तीनो को गूलर के दूध मे घोट कर दाँतों पर लगाने से फटे हुए दाँत अच्छे हो जाते है।

(२) चीनी के बर्तन का टुकड़ा और मुर्गी के अंडे की सफेदी एक मे घोट कर फटे हुये दाँत पर लगाते रहने से उत्तम फल दिखाता है।

(३) मनुष्य के सर के बाल के राख को तिल का तेल दाँतो पर चुपड़ कर छिड़कने से रोग जाता रहता है।

(४) पीली कौड़ी की राख, रूमी मस्तगी और सफेद खाँड़ सबको पीस कर दाँतो के फटे दराज मे भर देने से उत्तम फल होता है।

टूटे हुए दाँतों का इलाज—(१) एक लकड़ी मे कपड़ा बाँध कूंचे सा बना ले और घी खूब गरम कर उसी कूंचे से गरमा-गरम दाँत पर बार बार लगाने से रोग आरोग्य होता है।

(२) तेलिया मिट्टी, नीला थोथा, जमाल गोटा और संखिया प्रत्येक तीन तीन पैसा भर, सुहागा एक पैसा भर, नौसादर दो पैसा भर, सब को महीन पीस कर चूर्ण बनाले। दो पैसा भर

थूहर के दूध मे एक पैसा भर चूर्ण को मिला दांतों की सन्धि में कुछ दिन तक लगाते रहने से अति गुण होता है।

दांत में कीड़े—हाथी के दांत में प्रायः कीड़े पड़ जाते हैं। खराब खाद्य पदार्थ खाने से उसका कुछ अंश दांतों मे रह जाया करता है जिससे कीड़े की उत्पत्ति होती है।

बड़े दांतों के फट जाने पर मक्खी बैठ जाती है और उनके बीट करने के कारण कीड़े पैदा हो जाते है। यदि हाथी का स्वामी तथा फीलवान इस पर ध्यान न दे तो बड़ी हानि की सम्भावना रहती है। यदि दांतों मे कीड़े पड़ जांय तो निम्नलिखित औपधियों का प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

औषधि—(१) जवाखार, हरताल, संखिया, गन्धक, मैनसिल और आंवलासार गन्धक। इन सबको सम भाग ले भटकटाई के रस मे खले। इस खले हुए औषधि को कीड़ेवाले दांत मे लगाने से कीड़े नप्ट हो जाते है।

(२) सुअर की चर्बी का तेल कीड़े पड़नेवाले दांत मे लगाने से कीड़े गायब हो जाते हैं।

बिगड़ा दाँत—यदि हाथी का दांत बिगड़ गया हो और उसे गिरा देना आवश्यक जान पड़े तो सीप का चूर्ण और मुसव्बर दोनों को सम भाग ले आक के दूध मे मिला कर जिस दांत को गिरा देना हो उसके जड़ मे लगावे। कई बार लगाने से दांत अवश्य गिर पड़ता है।

दांतों को स्वच्छ और सुन्दर बनाने का सुगम उपाय—आक का दूध दांतो पर लगादे और जब खूब सूख जाय तो सेंदुर

को पानी मे पीसकर ऊपर से लेप कर दे। जब यह भी सूख जाय तो महीन स्वच्छ कपड़े से दांतों को मले। ३,४ घंटे इस क्रिया को करते रहने से दांतो की कांति बढ़ती है और दांत सुंदर स्वच्छ हो चमकने लगते है।

च—पांव रोग

पॉव रोगो मे रस रोग हाथी के लिये बड़ा भयानक होता है। रस रोग जब हाथी को धर दबाता है तो उसे निकम्मा बना डालता है। यदि रोग होते ही इलाज न किया जाय तो रस रोग का विष शरीर मे प्रवेश कर छाती तक बढ़ जाता है और कंठ मे फूट जाता है। जिससे हाथी खाने पीने से असमर्थ हो जाता है। ज्योंही हाथी हाथ पॉव धरती पर पटकने लगे उसी समय उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

रस रोग प्राय. चार प्रकार के होते हैं जैसे (१) स्वेद रस (२) धन रस (३) ज्वर रस और (४) विस्थि रस।

स्वेद रस—स्वेद रस होने पर हाथी की चाल थक जाती है। लङ्ग खाना, चलने फिरने मे असमर्थता तथा जमीन पर पैर नही रख सकना इसके प्रधान लक्षण है। यह साध्य रोग है।

चिकित्सा—कंजा की गुद्दी एक पाव, शिगरफ और गन्धक चार चार भर और गाय का घी दो भर। इन सब को एक मे मिला कर भून ले। पर ध्यान रहे धुऑ न लगने पावे।

प्रत्येक दिन सुबह एक २ भर रोगी को देते रहने से एक मास में रोग आराम होता है।

धन रस—यह रोग प्रायः स्वेद रस से मिलता जुलता है। इस रोग में छोटे हाथी की पेंडुरी सूख जाती है और वे सँभल २ कर डग धरा करते हैं। यह धन रस दो प्रकार का होता है, एक सर्द और दूसरा गरम। जबकि लावा के नीचे का चर्म सड़ जाय अथवा नरम हो जाय या सूखा जान पड़े, तो समझना चाहिये कि यह हाथी धन रस से ग्रस्त हो गया है।

चिकित्सा—गोखरू, रूमी मस्तगी, कंजा की गुदी, समुद्र फल, घोड़ बच, असगंध, खुरासानी हल्दी, कुटका, पीपलामूल प्रत्येक डेढ़ २ पल, अजमोदा, खखूदन, चींत के बीज, भिलावा, बाय बिडंग, कुचिला, चाकसू, एलुआ, इसबन्द, शिंगरफ, बन्दाल, आँवला, गन्धकसार, काली बिछुवा, सीपी का चूना और छिछिया प्रत्येक डेढ़ २ पैसा भर। शिंगरफ के सिवाय सबको पीस कर रख छोड़े। फिर शिगरफ को ३ पैसा भर गाय के घी मे भून कर सब में मिला दे। इस चूर्ण मे से १॥ पैसा भर निकाल गुड़ मे गोली बना ९ बजे दिन में खिलावे तथा ४ बजे प्रातःकाल हाथी को खूब मलमल कर स्नान करावे और धोवाया करे तो निश्चय धन रस का नाश होता है।

नोट—ध्यान रहे हाथी मिट्टी न खाने पावे।

ज्वर रस—यह रोग कष्ट साध्य होता है। इस रोग मे रुधिर और पानी हाथी के पाँव से बहने लगता है। रुधिर और पानी का श्राव होते ही औषधि का प्रयोग तुरन्त करना चाहिये

अन्यथा फल बुरा हो जाता है और यहाँ तक कि हाथी से हाथ धोना पड़ता है।

चिकित्सा—इन्द्रायण का फल और जड़, थूहर, लहसुन छिछिया, सहिजन की जड़, भिलावां, गोखरू, गूमा, कटेरी, काला छिछिया और आक का पत्ता प्रत्येक आध २ सेर, और तेलिया मिट्टी चार भर। इन सब औषधियो को बराबर खारी नमक ले कूट छान कर शराब मे मिला एक मिट्टी के बर्तन मे रख छोड़े। एक मास तक रोगी को दो दो पैसा भर दवा देते रहने से रोग अवश्य दूर होता है।

विस्ति रस—इस रोग मे प्रधानतः हाथी के पॉव और नसें फूल जाती है। यह साध्य रोग अवश्य है परन्तु बहुत कष्टदायक होता है। इस रोग से ग्रस्त हाथी को कभी भी चैन नही मिलता।

चिकित्सा—समुद्र फेन ३२ भर, हल्दी १६ पल, बारूद आठ पैसा भर, कुचला ३ पल, शत कंजा का गूदा तीन पल, सीपी का चून पैसा भर और थोड़ी कंजा की गूदी। सबको कूट और कपड़छान कर डेढ़ २ पैसा भर की गोली बना, दोनो वक्त रोगी को देने से विस्ति रस दूर होता है।

नोट—प्रत्येक रस रोग मे मिट्टी खाने से बचाना चाहिये।

सब रस रोगों की एक दवा

समुद्र फल आध सेर, बारूद पाव भर, कंजा की गूदी आध सेर, गोखरू आध सेर, कुचला तीन पल, हल्दी १६ पल, चूना

सीपी ६ पैसा भर, करहुआ तीन पल और भाड़ की मिट्टी तीन पल।

विधि—पहिले कुचला को अधकुट करले फिर सब औषधियो को कूट छान कर चौंसठ पल गुड़ मिलावे। तीन २ माशे की गोली बना प्रति दिन दोनों समय एक एक गोली हाथी को खिलाने से सब प्रकार के रस रोग आराम होते है।

चन्द पांव रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा

पाद खंज—(१) हाथी के पॉव की गाँठ में सूजन तथा कुड़ियों का निकल आना ही इस रोग का प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा—चार छटांक रूसा की पत्तियों को कूट कर सवा सेर सज्जी मिलाकर हाथी के मूत्र में पकावे और पांव मे बफारा देवे। दिन में ५,६ बार बफारा देने और आक के पत्ते पर दवा लेप कर गांठ पर पट्टी बांधने से रोग का नाश होता है।

कांडी रोग—(२) पांव के तलुओं मे यह रोग हुआ करता है। पीब और पानी का श्राव ही इसकी प्रधान पहिचान है।

चिकित्सा—(१) साबुन, हल्दी और अफीम इन तीनों को सम भाग ले मट्ठा में पकावे। इस दवा को घाव पर लगाने से आराम होता है।

(२) खैर और चूना तीन तीन टका भर और नीला थोथा पैसा भर, आक की छाल आध सेर, इन सब को कूट पीस कर घाव मे भर दे और पट्टी बांधे। ऐसा करने से घाव आराम होता है।

(३) सेंधा नमक को पीस कर तिल के तेल मे मिला ले फिर घाव पर लगावे और आग से सेंके तो रोग आराम होता है।

घुन्नस—(३) कुचला सवा पाव और भिलावां सवा पाव, इन दोनो को अलग २ घी मे भूने। जब कोयला हो जाय निकाल ले। आमा हल्दी एक छटाँक, जली हुई सीप एक छटाँक और बारूद पाव भर। इन सब को कूट छान कर पानी के साथ गोली बनाले और दोनो समय एक एक गोली रोगी को खिलाकर टहलावे तो घुन्नस रोग दूर होता है।

मलहम

क—सीपी की राख और रेवत चीनी दोनो को बराबर लेकर पीसे और फिर काले तिल के तेल मे ४,५ घंटे घोटे। इस मलहम को घाव पर लगाने से रोग आराम होता है।

ख—इमली की छाल की राख, पीपल की छाल की राख और काली सीप की राख। इन तीनो को सम भाग लेकर पीस एक मे मिला दे। इसको घाव मे भर पुराने टाट से बाँध दे। फिर रोग काफूर हो जायगा।

नख सम्बन्धी रोग

नख का फटना—नीला थोथा पैसा भर, काम सेंदुर तीन रत्ती और गुड़ धेला भर। इन तीनो को एक रस कर फटे

हुए नख पर लगावे और सेंहुड़ की लकड़ी से गरम कर सेंके तो नख का फटना बन्द होता है।

नख का गिरना—इसे पापर भाव भी कहते हैं। एक मुर्गी का नर बच्चा पानी मे साफ कर पकावे। जब इसका मांस गल जाय तो इसका हाड़ निकाल कर लौंग और अकरकढ़ा एक छटांक पीसकर मिलावे। इस मांस को नित्य थोड़ा २ खिलाने से एक मास मे हाथी के नख जम जाते है और गिरना बन्द हो जाता है।

नसकार—नीला थोथा एक छटांक, और बारूद पांच छटांक लेकर पीसे और मदिरा मे मिला दोनो वक्त प्रयोग कराने से यह रोग आराम होता है।

(५) **तरवाँसे**—इस रोग में हाथी के पांव से खून बहता है। यह एक भयानक रोग है।

चिकित्सा—खैर, राल, बच, लकड़ी का मैदा, जंगी हरड़, लोहा, सिघानी, एलुआ, सेमर की छाल और कतीरा प्रत्येक एक एक सेर, माजूफल आध सेर, और मिस्सी छ पैसा भर। इन सब को पीस बकरा के खून मे मिला तलुए में लेप करे और कण्डे की आग से सेके।

(६) **बड़ाऊ**—पांव के नीचे, तलुआ कट जाने से पीव निकले और जहां तहां गठ्ठा पड़ जाय उसे बड़ाऊ रोग कहते हैं।

चिकित्सा—रूमी मस्तगी, माजूफल, हरड़, नीला थोथा, हीरा कसीस, सब डेढ़ २ पल ले थूहर के दूध में घोटकर बड़ाऊ रोग पर लगाने से रोग का नाश होता है।

(७) छोपक—इस रोग मे हाथी के पांव वहुत मुलायम हो जाते है जिससे हाथी चल फिर नही सकते तथा उन्हे अति कष्ट उत्पन्न होता है।

चिकित्सा—लोह चूर्ण, नीला थोथा, गोद, कफरा, तेदूफल, नागौरी बच, एलुआ, ढाक, हरड़, नासपाल, हरताल, चिकनी सुपारी, शिगरफ सिन्दूर, वड़ी हरड़ का कोइला, मैनशिल, मुर्दा-शंख, गन्धा विरोजा, और संग जराहत प्रत्येक एक २ सेर, वहेडा का बोकला, खैर, राल, माजूफल, रूमी मस्तगी, जंगी हरड़ और लकड़ी का मैदा प्रत्येक दो दो भर, बबूल की छाल २५ सेर, इन सब को पीस कर एक कड़ाही मे वकरा की चर्बी, तिल का तैल, गाय का घी और गुड़ आध २ सेर देकर पीसी हुई दवा मिलाकर पकावे। इस दवा का लेप अगर एक मास तक किया जाय तो छोपक का नाश अवश्य समझना चाहिये।

(८) छाजन—यह दो प्रकार का होता है एक गीला और दूसरा सूखा। इस रोग मे हाथी के पांव मे घाव हो जाता है। इस घाव के होने से हाथी के पांव मे पीड़ा होती है।

(१) गीली छाजन—सज्जी पाव भर, साबुन पाव भर, चूना २ भर, कत्था २ भर, सेन्धा नमक तीन पाव, राल ४ पैसा भर, नीम के पत्ते आध सेर, कच्ची लाख तीन पाव, अफीम २ माशा, नीला थोथा पैसा भर, और तिल तैल आध सेर। सब को कूट कर एक रस बनाले फिर एक घड़ा हाथी के मूत्र मे इस दवा को पकावे और पकने पर हाथी के पांव मे लेप करै।

(५) सूखी छाजन—गन्धा विरोजा, सिन्दूर, और मुर्दा

संख हर एक पाव २ भर. राल, खैर पाव भर। नीम की पत्ती और नीला थोथा दो २ भर। कारा गरी सफेद छः पैसा भर। घोड़ा के चारों सुम और तिल तैल ढाई सेर।

विधि—कराही मे तैल डाल कर नीम की पत्तियों की टिकिया बना डाल दे और आग पर धीमी आंच से पकावे जब जल जाय तो घोड़े के सुम को उसी तैल मे डाल कर जलावे जब यह भी जल जाय तो सिन्दूर तैल जलावे। बाद उसी तैल में सब औषधियो को पीसकर घोटे और तब दोनों समय हाथी के पांव में लगावे तो रोग आरोग्य होता है।

छ—सूजन और घाव

हाथी के किसी अंग मे सूजन हो और वह रोगों की श्रेणी मे गिनी जाय तथा उस सूजन से हाथी को कष्ट अनुभव हो तो उसका इलाज शीघ्र करना चाहिये। इन सूजनों के कई भेद तथा नाम भी है जिनका उल्लेख तथा चिकित्सा यों हैं।

(१) **जहरबाद**—यह रोग शरीर के किसी स्थान पर हो जाया करता है। प्रथम सूज कर नरम हो जाता है। फिर लाल देख पड़ने लगता है तथा स्पर्श से गरम जान पड़ता है।

चिकित्सा—(१) बारूद और सेन्धा नमक दोनों सम भाग लेकर सूजन पर लेप करै और फिटकिरी गर्म कर सेंके तो जहर-बाद दूर होता है।

(२) सोंठ, अदरक, काली मिर्च, अकरकरहा, पीपरामूल और

पीपर सब को पांच २ तोले लेकर कूट छानकर जंगी वैर के बराबर गोली बना प्रतिदिन रोगी को खिलाने से रोगी आरोग्य होता है।

(३) मनुष्य की पुरानी हड्डी, बारूद और लाल मिर्चा तीनो को पानी मे पीस गरम कर लेप करने से जहरबाद जाता रहता है।

(२) **बातज**—हाथी के गांठ मे बात व्याधि होने से इस रोग की उत्पत्ति होती है। यह रोग शीतकालीन रोग है। गाठो मे सूजन तथा हाथी के घूमने फिरने एवं उठने बैटने मे असमर्थता ज्ञात होना इसके प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा—(१) काले तिल, नीम का पत्ता और हल्दी तीनो को पीस कर शहद मे मिला लेप करने से आराम होता है।

(२) गोभी के पत्ते, नीम के पत्ते, शहद और सेधा नोन इन सब को कूट छान कर घाव पर लगाने से घाव अच्छा होता है।

(३) सेधा नमक, सरसो, सोठ, कूट, बच, सहजना के बीज, जवाखार, हल्दी और दारुहल्दी इन सब को पीसकर दही मे मिला कर गरम करै। इस दवा के गरमा गरम घाव पर लेप करने से सब प्रकार का सूजन आराम होता है।

पिआज, सेधा नोन, रेड़ी की गूदी और अट्टा इनको एक साथ ले खूब एक रस कर गरम कर घाव पर लगाने से घाव पक कर फूट जाता है। यदि न फूटे तो चीर देना अति लाभ

पहुँचाता है। फूट जाने तथा चीरे जाने के बाद दवा लगाना गुणकारी होता है।

(३) सुखी बमनी—इस रोग में पूँछ के सब बाल गिर जाते हैं और चमड़ा बिलकुल चिकना हो जाता है।

चिकित्सा—(१) गाय के घी पूंछ पर मलने से बाल जम जाते हैं।

(२) लहसन को बाल गिरने वाले स्थान पर मल कड़ुवा तेल मालिश करना चाहिये।

४—पाखलिया—यह रोग अण्डकोप तथा कलेजा का रोग है। अण्डकोष और कलेजे मे सूजन होनो ही इस रोग का प्रधान लक्षण है। यह रोग भी जहरबाद के सदृश्य ही दुखदाई होता है।

चिकित्सा—भारङ्गी, कुटकी, तज, पीपल, हल्दी, चिरायता, काली मिर्च प्रत्येक सवा सेर तथा इन्द्रायण, कुचला, इन्द्रजौ और जायफल प्रत्येक छः छः पैसा भर और एलुआ पाव भर। सब को कूट पीस कर एक मे मिला एक एक पाव दोनों वक्त देने से रोग आरोग्य होता है।

५—अग्निवात—हाथी के शरीर पर फफोला पड़ जाय और शरीर अग्नि समान जले तो उसे अग्निवात रोग कहते है।

चिकित्सा—(१) वकेना की जड़ की छाल और तवाखीर दोनो एक एक पाव और कैथे की पत्ती ढाई सेर। सबको पानी मे पीस बकरी के खून में मिला फफोले पर लेप करने से उपकार होता है।

(२) कवाव चीनी, धनिया, सौफ और कासनी। सबको एक एक छटाँक ले पीस गोली बना कर प्रति दिन अग्निवाद वाले रोगी को देने से अति लाभ पहुँचता है।

६—**बमनी फूलनी**—जब हाथी की पूंछ सूख जाय और कभी कभी गुमड़ी पड़ कर पीव बहने लगे तो समझना चाहिये कि बमनी फूलनी रोग है।

चिकित्सा—जोंक सात, छिपकिली सात, गिरगिट दो, बैल की चर्बी तीन टका भर, कबीला, हल्दी, काशगिरी सफेदा, नीला थोथा, मुर्दा शंख और खैर छ. छः पैसा भर।

विधि—तिल के तेल दो सेर लेकर नीम की पत्ती की टिकिया बना कड़ाही मे डाल धीमी २ आंच दे फिर उसी कड़ाही मे उपरोक्त कीटो की चर्बी निकाल छोड़ दे। जब चर्बी जल जाय तो शेष दवाइयो की बुकनी तेल मे डाल नीम के डण्डे से खूब सबको घोटे। फिर एक चिकने बर्तन मे उस घोटे हुए औपधि को रख ले। इसी दवा को प्रति दिन हाथी के पूँछ मे मालिश करे तो रोग का नाश होता है।

७—**बमनी पीठ**—हौदा की रगड़ अथवा बोझ से हाथी की पीठ पक जाया करती है और उसमे पीब पड़ जाती है जिसे हाथी झोकदार बन बैठता है।

चिकित्सा—आध पाव गाय के घी मे एक पैसा भर मोम मिला कर अग्नि पर चढ़ा दे। सफेद राल, नीला थोथा, मुर्दाशंख और आँवला सार गन्धक। सब पैसा २ भर खरल कर मिलावे।

फिर अग्नि से उतार कर पैसा भर पारा मिला दे, इस मलहम से पीठ का घाव आराम होता है।

८—मृग—यह भी पीठ का ही रोग है। हौदा और चारे के ढोने से हाथी के पीठ का रुधिर जम जाता है, फिर वही रुधिर जब सड़ जाता है तो पीठ पर गाँठ पड़ जाया करता है। धीरे २ इसी गाँठ का मांस और चमड़ा सूखने लगता है। जब पूर्णतः सूख जाता है तो वहाँ दर्द पैदा हो जाता है और हाथी टेढ़ा हो चलने लगता है। यही मृग रोग का लक्षण है।

चिकित्सा—रसौत और नौसादर छः पैसा भर, बारूद पैसा भर, सब को मिला कर पीस ले और एक पाव ऊंट के मूत्र में पकावे। इस दवा को आक के पत्ते पर लेप कर गांठ पर रखे। ऐसा करने से गांठ फूल जाती है। फिर चूनां और आक की छाल का चूर्ण छः पैसा भर और नमक एक पैसा भर, सबको पीस कर मनुष्य के मूत्र में सान कर गरम करले। इस गरमागरम लेप से फूला हुआ माँस गिर कर साफ घाव हो जाता है। जब घाव हो जाय तो संगजराहत, खैर, मुर्दाशंख, राल और मोम, सब दो पैसा भर, गन्धा पिरोजा दो पैसा भर और गाय का घी एक सेर। घी को कड़ाही मे छोड़ दे और पिरोजा उसमे मिला मन्द २ आंच से पकावे। फिर पकने पर सब दवाइयो को पीस कर उसमें मिला दे। हाँ, दवा को नीम के लकड़ी से ४,५ घण्टे तक घोटते रहना चाहिये। इस मलहम को घाव पर लगाने से जल्द आराम होता है।

९—फूल कुहा—जब हाथी बहुत परिश्रम कर आता है तो

उसके पीठ से तुरन्त गद्दा उठा लेने से हवा लग जाती है और यह रोग धर दबाता है।

चिकित्सा—आध सेर गाय के घी में पाव भर सेंदुर मिला कर लेप करने से फूल कुहा का नाश होता है।

ज—कुछ आवश्यक रोग तथा चिकित्सा

नासूर—तेल को कड़ाही मे चढ़ा कर कुटकी डाल कर भूने। जब भुन जाय तो पत्थर पर पीस कर मलहम सा बना नासूर पर लगावे तो रोग आरोग्य होता है।

पांडु—इस रोग मे दोनो हल्दी गाय के घी मे देने से और गौ मूत्र पिलाने से अति लाभ पहुँचता है।

शरीर में कम्प—तीतर, मोर और बटेर के मांस का शोरुआ पीपल और काली मिर्च मिला कर देने से कम्पन दूर होता है।

मूत्र बन्द—हाथी जब गरमा जाता है तो प्रायः मूत्र बन्द हो जाया करता है। सोंठ पाव भर, हल्दी पाव भर और गेहूँ का चून आध सेर एक सेर पानी मे मिलावे। फिर मुताबिक घी डाल कर हलुआ बनावे। इसी हलुए से गुदा और लिंग के बीच गरमागरम सेके। ४, ५ बार सेक करने से मूत्र उतर जाता है।

अजीर्ण—सीपी का चूना और बारूद छटांक २ भर ले एक जाति कर गुड़ मे दो २ तोले की गोलियां बना प्रति दिन एक २ गोली रोगी को देवे तो अजीर्ण का नाश होता है।

हाजमा—जब हाथी को बदहज़मी जान पड़े, पेट में वायु का संचार हो, पेट फूल जाया करे तो खुंभी फूल, समुद्र फल, सुहागा और हींग इन सबको सम भाग ले खूब महीन पीसे और सबको घी में अलग २ भूने, तब एक रस बना अधेला २ भर हाथी के खाने और दाने के बाद देने से रोग आरोग्य होता है।

५—कुत्ता

१—ज्वर—शरीर गर्म तथा आंखें लाल हो जाती है, स्फूर्ति नही रहती, सर्वदा सोते रहना, प्यार करने से मौन धारण करना तथा पूंछ न हिलाना, भोजन मे अरुचि तथा प्यास का ज्यादा रहना ज्वर का प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा—(१) अजवाइन आध छटांक, कपूर पाव तोला, मेथी आध छटांक, काला जीरा एक तोला इन चारो चीजो को अध कुचल कर काढ़ा बनावे। इसी काढ़े को एक २ छटांक सुबह शाम देने से उपकार होता है।

(२) काली मिर्च, सफेद जीरा, हल्दी, सेन्धा नोन कौलो दुबी प्रत्येक आध २ तोला लेकर काढ़े बना ले। २ तोला खोराक मे सुबह साम काढ़ा पिलाने से रोग का नाश होता है।

२—पेचिश—पेचिश होने पर कुत्ते एक जगह नहीं रहते, तड़पते फिरते है। शरीर पर हाथ नही रखने देते। पुट्ठे पर हाथ रखने से शान्त रहता है और कभी दस्त का भी प्रकोप हो उठता है। कुत्तो के लिये यह एक कठिन रोग है। इस रोग से बहुत कम कुत्ते अच्छे होते है।

चिकित्सा—अरंडी तैल, धतूरे का रस, अजवाइन का अर्क, बांस के पत्ते को उबाल कर उसका पानी, पीपल का उबाला पानी, हस्तमुड़ी इन सब को एक मे मिला कुत्ते के नाभी के पास धीरे २ मालिश करे। ४-५ बार प्रतिदिन मालिश ३-४ दिन तक करने से रोग आरोग्य होता है।

(२) शहद एक छटांक, तेजपात का चूर्ण आध छटांक, गूगुल आधा तोला और पीपल आधा तोला। इन सब को चूर्ण बना एक में मिला कुत्ते को चटाते रहना चाहिये।

३—गर्मी—उपदंश

इस रोग में कुत्तों की जनेन्द्री मोटी हो जाती है तथा झूलने लगती हैं। उससे पीब और रक्त बहने लगता है। यदि जल्द इलाज न की जाय तो वह सड़ जाती है और कुत्ते की अवस्था शोचनीय हो जाती है।

चिकित्सा— मेथी ८ तोला, सोहागा की लाई ४ तोला, गाय का घी आवश्यकतानुसार। इनका मलहम बना कर घाव पर लगाने से बीमारी जाती रहती है। नीम के पानी से घाव को धोना चाहिये।

पथ्य—भात, दूध रोटी। मांस इत्यादि न देना चाहिये।

४– खांसी

खांसी होने पर कुत्ते बराबर खक-खक किया करते हैं। मुंह और नाक से पानी गिरने लगता है। पसली में दर्द पैदा हो जाता है। स्थिरता जाती रहती है। वमन और अरुचि भी प्रायः हो जाया करती है।

चिकित्सा—(१) गन्ना का गुड़ छः तोला, काला नमक दस तोला, गन्धक-चूर्ण ५ तोला सोठ-चूर्ण २ तोला। इन सबको गरम जल मे धोकर सुखा ले। फिर शहद मे चटनी बनाकर खिलाने से खांसी अच्छी हो जाती है।

—जीभ में जख्म

कुत्ते की जीभ मे प्रायः जख्म होते पाया जाता है, जिससे कुत्ते प्राण तक खो बैठते है।

चिकित्सा—समुद्र-फेन १ तोला, नीम के पत्त पांच तोला और मोम पांच तोला। इन सब को एक जाति बना कर गरम पानी मे डाल जीभ धोते रहने से जीभ का घाव अच्छा होता है।

६—खाज अथवा खौरा

कार्वोलिक साबुन अथवा नीम के साबुन से कुत्ते को बराबर स्नान करा देना चाहिये।

कार्वोलिक तेल खाज के स्थान पर लगाने से खाज के कीड़े मर जाते है।

मुर्दा संख, कपूर और गन्धक-चूर्ण खूब महीन पीस कर कपड़छान करले फिर गरी के तेल या वेसलिन मे मिला कर मलहम बना ले और घाव पर दिन भर मे दो या तीन वार लगावे। नीम के पानी से धोते रहना भी गुणकारी होता है।

७—कुत्ते मोटे-ताजे कैसे रह सकते हैं?

(१) साफ सुथरा रखना तथा साबुन से स्नान कराना (२) गन्दे और खराब सड़े पदार्थ खाने को न देना (३) पेट भर खाना देना (४) सदा बांध कर रखना और सुबह शाम टहलाना। निम्नलिखित औषधियों का सेवन कराना चाहिये।

चिकित्सा—काला नमक तीन छटांक, पुराना गुड़ छः तोला, सोंठ का चूर्ण १ तोला, गन्धक चूर्ण तीन तोला, पपड़िया कत्था आधा तोला। इनको एक जाति बना कर कुत्ते को खिलाने से बहुत गुण होता है।

परिशिष्ट

क—सुख भामी—(कांटा, खार या मुँहाल) यह बीमारी पशुओं के कल्ला तथा जीभ मे हुआ करती है। इस रोग की तकलीफ से रोगी चारा-दाना त्याग कर निर्बल बन जाता है।

जब यह रोग हो जाय तो पशु की जीभ पर नमक मलना चाहिये। चमार या नालबन्दों से रापी द्वारा कांटा कटवा देने से उपकार होता है। काँटा अथवा सुखभामी कट जाने पर नमक और हल्दी मिला कर कटे हुये स्थान पर मल देने से शीघ्र आराम हो जाता है। पशु को ३,४ दिन गीला खाना नहीं देना चाहिए। सूखे खिलाने तथा खाने के बाद पानी पिला देना ठीक होता है।

अजवाइन, नमक, गन्धक और गोलमिर्च दो-दो तोला एक में पीस कर रोगी को खिलाने से रोग अवश्य आराम होता है।

ख—पशु को भूख का न लगना—जठराग्नि मन्द पड़ जाने से यह रोग होता है। काला नमक, काली मिर्च, कुटकी तथा राई को दो-दो तोला लेकर डेढ़ छटॉक सिरका के साथ खिलाने से मन्दाग्नि का नाश होता है तथा पशु खाने लगते हैं। आदी, प्याज, हींग, अजवाइन और काली मिर्च बराबर लेकर पशु को देने से विशेष लाभ होता है।

ग—लाल पेशाब—अजीर्णता से यह बीमारी होती है। भूख न लगना तथा जुगाली न करना इस रोग का चिन्ह है।

अलसी आध पाव एक सेर पानी मे पका कर तीन तोला

नमक के साथ रोगी को खिलाने से रोग का नाश अवश्य होता है।

एक छटाँक गेहूँ का मैदा और एक छटांक खांड़ पानी में मिला कर पिलाने से उपकार होता है। शीशम के ताजे पत्ते खिलाना आवश्यक है।

घ—मूत्र रोग तथा मूत्र का कम होना—जीरा सफेद तथा काहू तीन-तीन तोला और बबूल की कोपल आध पाव, अढ़ाई सेर पानी मे मिला कर पिलाने से बहुत लाभ होते पाया गया है।

च—खुर में कीड़े—खुरपका की बीमारी मे बहुत से पशुओं के खुर मे कीड़े पड़ जाते है। तारपीन का तेल खुर मे लगाने से कीड़े मर जाते है। हरताल का चूर्ण नीम के तेल मे मिलाकर खुर मे लगाने से कीड़े का नाश होता है। फिनाइल भी लगाने से लाभ होता है।

छ—आग से जल जाना—भैंस के दूध का मक्खन या दूध के साथ तीसी पीस कर लेप करने से जलन दूर होती है। केले की जड़ कुचल कर उसका पानी निकाल कर जले हुए स्थान पर लगाने से अथवा प्याज का रस लगाने से शान्ति मिलती है।

ज—दांतों और मसूढ़ों का फूलना—इस रोग मे पशुओं के दांतों के ऊपर का मसूढ़ा फूल जाता है, जिससे पशु खाना बन्द कर देते है।

चिरचिरी की जड़ जला कर, फूले हुए स्थान पर, पीस कर लगाने से तथा नमक और तेल मिला कर सूजे हुए स्थान पर मलने से सूजन अच्छी होती है।

झ—नाभि-मूल का रोग—यह रोग बछड़ों को होता है। नाभि काटने में लापरवाही होने के कारण यह रोग पैदा होता है। यह अति कष्टदायक होता है।

हरी दूब का रस, अम्बष्ठी लता का रस या गेंदे के पत्तों का रस पीड़ित स्थान पर लगाने से खून का बहना बन्द होता है।

यदि घाव हो जाय तो घाव की दवा करनी चाहिये।

ट—सरदी तथा जुकाम—इस रोग में आँख और नाक से पानी गिरने लगता है। पशु बार-बार ढांसता है।

पीपल, सोंठ, राई, अजवाइन और कुटकी दो-दो तोला लेकर चूर्ण बना ले और गर्म पानी के साथ सेवन कराने से लाभ होता है अथवा गुड़ के साथ देने से भी उपकार होता है।

ठ—चोट और मोच—खारा नमक को बारीक पीस कर कड़ुए तेल के साथ गर्म कर मलना चाहिये। फेन्सा की छाल खूब बारीक पीस कर गर्म कर मोच पर छापने से मोच अच्छा होता है। चन्सुर के बीज को पानी में पीस कर गर्म कर लगाने से रोग जाता रहता है। जिस पशु को मोच हो उसको पानी में तैराना चाहिये।

ड—पेट की मरोड़ तथा पेचिश—शराब आध पाव, नौसादर नौ माशा, कपूर ८ माशा और धतूर का बीज ४॥ माशा, एक सेर मांड़ के साथ देते रहने से लाभ होता है।

ढ—विष का प्रवेश—पेट तथा सारे शरीर में वेदना होती है। पशु प्यास से व्याकुल हो छटपटा उठते हैं। मल बार-बार त्याग करने लगते हैं। कभी २ खून भी निकल आता है। अगर विष

प्रवेश करते ही इधर ध्यान नहीं दिया जाय तो पशु ३, ४ घंटे के अन्दर ही मृत्यु-मुख मे जा पड़ते है।

चिकित्सा—(१) दस्त तथा कै करा कर विष को बाहर निकाल देना आवश्यक है। इससे रोगी को किसी प्रकार की क्षति नही पहुँचती।

(२) एक सेर अलसी का तेल घंटे-घंटे मे पशुके कण्ठ मे नली द्वारा डाल कर पिलाने से उपकार होता है।

(३) गंधक-चूर्ण पाव छटांक, अलसी का तेल आध छटांक, भात का मांड़ आध सेर, सबको खूब मिलाकर पिलाना चाहिए।

(४) सोंठ का चूर्ण एक तोला, गन्धक-चूर्ण आध पाव, अलसी का तेल एक पाव, आध सेर मांड़ मे सेवन कराना चाहिये।

(५) सोंठ का चूर्ण एक तोला, गन्धक चूर्ण १॥ तोला, गुड़ डेढ़ तोला, इन सबको २ सेर पानी मे गर्म कर गर्मागर्म पशु को पिलाना चाहिये।

सावधानी—जब तक पशु का दस्त होना बन्द न हो और शरीर या पेट मे तकलीफ रहे पानी पिलाना ठीक नही है। यदि विशेष प्यास हो तो उड़द पका कर भूसी के माँड़ के साथ देना चाहिये। तीन दिन बाद कच्ची कोमल घास खिलानी चाहिये।

त—अफरा रोग—इस रोग को प्रायः सभी पहचान लेते है। यह अजीर्ण तथा बादी से उत्पन्न होता है। इसमे पशु का उदर फूल जाता है। जुगाली अथवा पागुर नही करते। सदा उदास हो, कभी उठने कभी बैठने की क्रिया करते है।

चिकित्सा—(१) नौसादर एक या दो तोला लेकर ठण्ढे पानी मे घोल कर पिलाना उचित है।

(२) दो तोला काला नमक, दो तोला काली मिर्च, ६ माशा हींग और मदार के (अकवन) तीन चार पत्ते को एक में मिला कर पशु को खिलाने से रोग का नाश होता है।

४—बधिया करना—बधिया इस समय दो प्रकार से किया जाता है (१) अंग्रेजी तरीके (२) देशी तरीके से। अंगरेजी तरीके की अपेक्षा देशी तरीके से बधिया करना ठीक नहीं है। इसलिये पशु को अस्पताल मे ले जाकर बधिया कराना ही उपयोगी है।

बधिया हो जाने पर तीन दिन तक बच्चे को पूर्णतः घी पिलाना चाहिये।

तीसी-तेल को गरम कर कारबोलिक एसिड तथा नीम के पत्ते का रस एक में मिलाकर घाव पर लगाना चाहिये। घाव पर मक्खी का बैठना बहुत हानिकारक होता है।